मनुष्य पदे स चमार होता है न कि जन्म स। यह कहकर भिक्खु आगे बढ़ चला।

यदि तुम मुझे पकड़ लिया तो तेरी जान ले लूंगा। —सजनू ने चिल्लाकर कहा। इतनी ही देर में लामडा का गांव वाला दयाराम ग्वाला महन्त और भगो और कब रामनिवास भी अपनी जगह से नीचे कूदकर भिक्खु के रास्ते में आ खड़े हुए। महन्त उन लोगों के निश्चय की दृढ़ता को जानता था। उसे यह भी पता था कि अगर वह आगे बढ़ गया तो उनमें लड़ने की हिम्मत न होगी पर देखना क्या है कि उसकी माँ जिसके लिए उसने यह सब करने का साहस किया था पहले ही पीछे मुड़ चुकी थी और उसे पुकार रही थी— बेटा भिक्खु—बेटा लौट आ।

पर भिक्खु यह सोचने लगा कि आज तक तो उसने यह अपमान सहा नहीं तो आज ही क्या सहे ? उन्होंने उस गाँव की मिट्टी पर चलने से मना नहीं किया चाहे वह मन्दिर में कभी नहीं जा सका और उसकी माँ क्या दुःख उठाए ? क्या इसलिए कि उसने लड़के के लिए पत्थर माने हैं ? अब उसने निश्चय कर लिया कि मंडप बनाएगा चाहे दूसरे उसकी सहायता करें या न करें। उसकी प्रकृति में हठ था जो तत्त्व था और जो उसमें स्वाभिमान जीवन के तुल्य ही था उसने उसके हाथ-पांव को एक अजीब मुस्तैदी से भर दिया। वह अपने घर में अपने आपको आगे धकेलता रहा और वे सब बातें हाथों में उसे पीछे धकेल रहे थे।

मेरे बेटे ! —रम्मा चीख पड़ी जब ही उसने देखा कि भिक्खु ने उनको छुआ और वे सब उसे धकेल रहे हैं।

भूपसिंह सावरदार का लड़का जिसने रम्मा को पास अपने आँगन में आने की बात की थी—लौटकर बाहर आ गया। डाँटकर बोला— 'तू काहे को रो रही है ?—मुझे क्या पता था जाएगा कि क्या हो रहा है। हम मन्दिर में नहीं जाने देंगे और भिक्खु पीछे लौटेगा

नहीं। —लक्ष्मण यह कहकर अपने पिता को बुलाने चला गया। जब तक पकौड़ा जैसी नाक वाला लक्ष्मणसिंह घटनास्थल पर पहुँचा भिक्खु सजातीय हिन्दुओं को ऊँचे पत्थर की चौकी तक खदेड़ चुका था और यह सब उनके घूँसे और तमाचों के आक्रमण के होते हुए भी हुआ। लंबरदार धूलीसिंह लक्ष्मी के पास खड़ा हुआ इस सब संघर्ष को मंत्र मुग्ध सा देखने लगा। भिक्खु की माँ ने उससे आर्त्त स्वर में कहा— इन्हें अलग कर दो वरना ये उसे मार डालेंगे। उसे क्षमा कर दो क्योंकि वह मेरे ही कारण लड़ रहा है।

पकौड़ी नाक वाले ने कहा— कराहना बन्द कर और वह मंदिर के पत्थर की ओर चिल्लाता हुआ आगे बढ़ा।

आ गया खसूलाला। सजनू ने चीखकर उत्तर दिया। अपने संरक्षित को वापिस बुला ले—इस गौ भक्षक चमार को। सड़क पर पत्थर कूटने के लिए भेज दे इसको।

घूलीसिंह ने कड़ककर कहा— अरे दुष्टो! और उसकी कड़क से उन सब के चेहरों का रंग बदल गया। धूलीसिंह ने कहा— भिक्खु नौकर आ—इनकी जान मत ले ये सब कायर हैं। चार चार अकेले का मुकाबला करते हैं—और फिर मार खाते हैं। आ जा हम कैसे भी हो सड़क जरूर बनाएँगे।

लक्ष्मी बोली— भिक्खु बेटा—यदि तू इन्हें प्रेम करे तो ये भी स्वीकार करेंगे कि इन लोगों ने कितना अनुचित व्यवहार किया है। यह सुनकर जब ही भिक्खु पीपल के पेड़ से वापिस लौटने लगा लाल टमाटर जैसे मुँह वाले जमींदार ठाकुरसिंह की तीखी और साफ आवाज सुनाई दी—

'ठहर जाओ दोनों—दिन-दहाड़े के चोरो। यह गाँव धरोहर थी जो मेरे कुटुम्ब को देवताओं से मिली थी और तुमने इस स्थान से पत्थर चुराकर दूषित कर दिया।

'यह भिक्खु अपनी माँ के साथ मन्दिर को अपवित्र करने वाला

था। मदन ने सूचित किया।

[illegible] दुलारिन ने जो [illegible] में [illegible] पर ने जा [illegible] था [illegible] किया— मैं [illegible] से बात करना चाहता [illegible] तुम भी [illegible] तुम [illegible] हो [illegible] बातचीत क्या होगा? [illegible]।"

निर्मल के मन ने [illegible] का [illegible] के प्रति [illegible] सौन्दर्य [illegible] चल दिया।

नहीं। —लक्ष्मण यह कहकर अपने पिता को बुलाने चला गया। तब तक पकौड़ी जमा नाक वाला लक्ष्मणसिंह घटनास्थल पर पहुँचा भिक्खु सजातीय हिंदुओं को ऊँचे पत्थर की चौकी तक खदेड़ चुका था और यह सब उनके घूसे और तमाचों के आक्रमण के होते हुए भी हुआ। लंबरदार धूलीसिंह लक्ष्मी के पास खड़ा हुआ इस सब संघर्ष को मंत्र-मुग्ध सा देखने लगा। भिक्खु की माँ ने उससे आर्त स्वर में कहा— इन्हें अलग कर दो वरना ये उसे मार डालेंगे। उसे क्षमा कर दो क्योंकि वह मेरे ही कारण लड़ रहा है।

पकौड़ी नाक वाले ने कहा— कराहना बंद कर और वह मंदिर के पत्थर की ओर चिल्लाता हुआ आगे बढ़ा।

ओ मूर्ख लोगो। सजनू ने चीखकर उत्तर दिया। अपने सुरक्षित को वापिस बुला लो—इस गौ भक्षक चमार को। सड़क पर पत्थर कूटने के लिए भेज दें इसको।

धूलीसिंह ने कड़ककर कहा— अरे दुष्टो! और उसकी कड़क से उन सब के चेहरों का रंग बदल गया। धूलीसिंह ने कहा— भिक्खु जीत आ—इनकी जान मत ले ये सब कायर हैं। चार चार अकेले का मुकाबला करते हैं—और फिर मार खाते हैं। आ जा हम इस भी हो सड़क जरूर बनाएँगे।

लक्ष्मी बोली— भिक्खु बेटा—यदि तू इन्हें क्षमा कर तो ये भी स्वीकार करेंगे कि इन लोगों ने कितना अनुचित व्यवहार किया है। यह सुनकर ज्यों ही भिक्खु पीपल के पेड़ से वापिस लौटने लगा लाल टमाटर जैसे मुँह वाले जमींदार ठाकुरसिंह की तीखी और साफ आवाज सुनाई दी—

'ठहर जाओ दोनों—दिन-दहाड़े के चोरो। यह गाँव धरोहर थी जो मेरे कुल के देवताओं से मिली थी और तुमने इसे स्थान से पत्थर चुराकर दूषित कर दिया।

'यह भिक्खु अपनी माँ के साथ मन्दिर को अपवित्र करने चला

था। सजनू न सूचित किया।

लम्बरदार धूलीसिंह ने जो अपने सरक्षण म उसे परे ले जा रहा था उत्तर दिया— मैं इस मन के बारे म तुमस बात करना चाहता हूँ—अगर तुम भी चाहो तो—पर अगर तुम चिल्लात ही रहोगे ता बातचीत क्या होगी? सडक तो क्स भी हो जरूर बनेगा।

भिक्खु क मन म धूलीसिंह की पकौडी सरीखी नाक क प्रति जा सौंदय-सबधी अरुचि थी उसका दबाकर वह उसके आगे-आगे चल दिया।

दो

कहत कबीर सुनो भई साधो

भिक्खु मन-ही मन म बडावडाया—जस हा वह गाँव स चुपक स निकलकर उन पत्थरो क ढर की ओर चला जा वह और उसके अछूत भाई खान से लाए थे। जुलाहे और सत कवि कबीर को गावधन क अछूत पूजते थे। उसके दोहे भिक्खु को सवेरे उठते ही स्वाभाविक रूप से याद हो आते थे क्योकि धध जो मेतो का ढक लती थी मनुष्य को प्राथना करने पर बाध्य करती थी और फिर भिक्खु क दिल म टमाटर जसे मुह वाल ठाकुरसिंह से सभावित मुकावल क भय स कुछ उत्तजना भी थी। दीवान रूप कृष्ण क भविष्य घातक विचार सजातीय हिंदू अछूतो द्वारा पत्थर उगान और तोडन क विरुद्ध क्वल इमलिए ही नही थ कि व अछूता द्वारा खादे हुए पत्थरा को छूना नहा चाहत थ बल्कि इसलिए भी कि व इस बात स भी रुष्ट थे कि अछूत लाग सरकारा ठेका पर काम कर क रुपया कमाए—जस बिजली के तारा क लिए खभे लगाने से। उच्च वग क लोग निम्न जाति वाला क साथ अपना श्रम नही जोडना चाहत थ। उन्होंने आज तक अछूता का खेता पर तो काम करने दिया पर अनाज क बदल म और भूमि उनको एक-दूसर स जोडती रहा पर यह एकता आज नष्ट हो गई क्योकि वतन धन क रूप मे बदल गया। अपनी सासा म बडबडाता हुआ चोरी स इधर उधर दखता हुआ और प्रात की भूमि की माठी-मीठी सुगध के प्रति सचेत भिक्खु अपन से पूछ रहा था आखिर कबीर अपन अनुयायियो

को क्या समझाना चाहता था ? और उस कवि के शिक्षात्मक शब्द उसके गीत में याद आ गए।

भक्तो ! साधो-साधो अध्यात्म यही है कि संसार में ईश्वर की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति को आश्चर्य से देखो और स्वस्थ रहो। इस पृथ्वी को देखो जिस पर ओस की बूँदें ऐसे चमकती हैं जैसे जवाहर। नील आकाश को देखो जिस पर सूरज उदय होता है और डूब जाता है और यह जो साकार प्रकाश है उसकी पूजा करो। भिक्खु के सुप्त कवि हृदय में इन विचारों से सम्मति थी पर अपनी तर्क-बुद्धि का विश्वास कर और ईश्वर के विचार मस्तिष्क से दूर कर उसने जुलाहे मल की एक और वाणी दोहराई। काम-ही-काम करना आओ भक्तो क्योंकि काम से सारे पाप धुल जाते हैं—मिट्टी और पसीने से।

इस प्रकार सोचते हुए वह तेजी से धर्मसिंह के खेत में पड़े पत्थरों के ढेर तक पहुँचने के लिए चल पड़ा जहाँ उसने अपने साथियों को मिलने के लिए कह दिया था। वह साहस का अभिनय तो कर रहा था पर उसे अपने एकाकीपन का भी आभास था—उस पृथ्वी पर ही जिसको वह प्यार करता था और जिसकी वह संतान था। क्योंकि वह जानता था कि पृथ्वी माता उसका पेट नहीं भर सकेगी यदि मजनू महन्त और रामनिवास मजदूरी के बारे में बदला लेने का प्रयत्न करने लगेंगे और कभी भी झाड़ियों में उस पर टूट पड़ेंगे। केवल उसका बाहुबल और उसके भाई ही उसको बचा सकते हैं। उसे इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि सजातीय सिंह उनको पत्थर तोड़ने का काम शुरू नहीं करने देंगे।

अपने अकेलेपन में उसकी आँखें चारों ओर घूम गईं और जब वह उसके बारे में अपनी कल्पना की यथार्थता की पुष्टि कर रहा था उसकी आँखें कुएँ पर खड़ी तीन स्त्रियों में जमादार ठाकुर सिंह की लड़की रुक्मणी को, जिसका रंग गेहूँ की तरह भूरा था, ताका करने लगीं और वहीं नजर पड़ते ही उसने उन्हें दूसरी तरफ कर लिया क्योंकि

उसे पता था कि यदि उसके प्रति उसका अवचेतन वाग्मय प्रेम कहीं उसकी आशा की धारा पर उबक पडा तो उसे टूटना भी भेलना होगा। वह ऐसा विचार मन में लाने का साहस ही कैसे कर सकता था ? पर उत्तेजना के उस चरम क्षण में उसने अपने मन से पूछ ही तो लिया—ऐसा क्या नहीं हो सकता ?—अवश्य हो सकता है।

फिर भिक्खु ने बुए के साथ पड़े खाद के ढेर के चारों तरफ चक्कर लगाकर लंबरदार धनीसिंह की जमीन पर उठी एक कांटेदार भाड़ी उठा ली। वह पकौड़ी जैसी नाक वाले धूलासिंह की जमीन पर पैर रखते हुए सुरक्षित अनुभव कर रहा था क्योंकि दोनों पहाड़ियों की खान से लाए हुए पत्थरों के ढेर लंबरदार धनीसिंह के खेत में ही पड़े थे। बस एक बार सारे अछूत किसी भी चाल से वहां पहुंच भर जाएं। सब-के-सब स्पृष्ठ बुन वाले हिंदुओं की हिंसा से बच जाएंगे। धनीसिंह ने सात हाथ चौड़ी जमीन सड़क बनाने के लिए अपनी जमीन में से दी थी इसलिए वे किसी भी आक्रमण के डर से सुरक्षित थे क्योंकि अपने संरक्षक के खेत में ही तो काम करेंगे। सारी अछूत बिरादरी यौवन की शक्ति और स्फूर्ति से उफन रही थी—इस आशा में कि सड़क पर काम करके वे अपने पतन की गहराई से उठकर जीवन के धरातल पर आ सकें—गांव की अछूत आबादी के नरक से ऊपर।

जब ही उसने धनीसिंह की जमीन पर पैर रखा और नज़र देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा, उसकी दृष्टि पंडित सूरजमनी की सफेद गन्दी पर पड़ी जो अपनी पीतल की गड़वी में पानी भर रहे थे और हरि ओम हरि ओम बड़बड़ा रहे थे। फिर दुर्भाग्य कि पुजारी जी ने उसे देख लिया क्योंकि वे उसे नाम लेकर पुकार रहे थे।

"आ भिक्खु—अरे आ भिक्खु।" और उसके सामने पड़े थे पत्थरों के ढेर—सून और वीरान। जिन साथियों ने उसके साथ पत्थर तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी उनमें से कोई भी अभी तक वहां नहीं पहुँचा था। उसकी मां ने हमेशा उसे बताया था कि सवेरे-सवेरे ब्राह्मण का मुंह

दसना बुरा शकुन होना है।

जसे-जसे वे कुए के पास आ रहे थे चमकारी छोटा गडवी पंडित सूरजमनी के हाथ में चमक रही थी। उन्होंने औरतों में कहा— राम राम—जे राम जी की बनी मुझे थोड़ा पानी तो दे। जमीदार ठाकुर सिंह की लडकी रुक्मणी जैसे ही वह अपने पातल के घडा को अपने सिर पर रखने वाली थी एक क्षण रुकी। उसने ब्राह्मण के कुए के पास आने की प्रतीक्षा की।

पण्डित सूरजमनी ने निष्ठा से जनेऊ को कमर से निकाला और कंधे से ले जाकर बाये कान पर ठोककर के रख लिया जहा वह पहले से ही शौच के लिए लपटा हुआ था। इतने समय में उनको इतना अवसर मिल गया जितना कि रुक्मणी के शरीर की बनावट को परखने के लिए आवश्यक था। जैसे ही उसने कुए की एक ओर से अपने घडे का पण्डित जी के पातल के बर्तन में पानी डालने के लिए उठा लिया पण्डित जी आखो में हल्की बनावटी मुस्कराहट लिए उसे देखते रहे। रुक्मणी झेंप-सी गई।

अपने पिता को कह देना कि भिक्खु धूलीसिंह के खेत को गया है। उन्होंने कहा। ये चमार लडके शरारत पर तुले हैं।

रुक्मणी ने अपने घूघट से अपना आधा का लज्जा से ढक लिया और अपने घडा की ओर मुड गई। पण्डित सूरजमनी की आखों ने युवती के शरीर की रेखाओं को बड़ावस्था की एकाग्र कामुकता से बड़े प्यार से स्पर्श किया और फिर सुनाते हुए मुह में बडबडाने लगे— राम! राम!

'जे राम जी की!' दो बूढी औरतों ने जो वहाँ पर थी पण्डितजी को वहाँ से चलता करने के लिए तपाक से कहा क्योंकि उनकी औरतों को पीछे से कनखियों से ताकने की आदत तो गाव के सब लोगों के बीच में ऐसे प्रसिद्ध थी जैसे कोई पौराणिक कथा। पण्डित जी पर उनके विदा करने के सहज का कोई प्रभाव न पडा पर उन्हें निर्धारित रीति पर चलने की चिंता थी—इसलिए धोती के सिरे को पकड सिर

को ढक वे चल दिए क्योंकि जगल पानी को जाने हुए शरीर के इस आदरणीय भाग को प्राकृतिक तत्वों के सम्मुख खुला कैसे छोड सकते थे ?

सहज बुद्धि से उन्होंने कुए के किनारे से अपने आप को बचाया। छोटे जोहड से भी जहाँ जानवर पानी पीते थे जिससे कि उसकी छाया पवित्र पृथ्वी पर न पडे जो कि हरे रग की तो न होगी पर पेडो से परे और जगली झाडियो के बीच म के रग की जरूर होगी। उनकी चाल की गति से उनकी काय की शीघ्रता पता चलती थी और वे अपने पुर्तेनि नगे पावो से जल्दी-जल्दी चल रहे थ—अपने परो के तलो म छोटा-छोटा घास पर पडी ओस की बूदो का अच्छा अच्छा स्पश अनुभव करते हुए। शायद उनकी आखो की दृष्टि कुछ तीव्र हो जाय यदि केवल व एक-दो मात्र नगी घास पर चल सकते क्योंकि उन्होंने सुना था कि बुझती आख ओस के स्पश और सूय की प्रथम किरणो से शक्ति प्राप्त करती हैं। सूय की पहली किरणो की उपादेयता का विचार आते ही उन्होंने मुह सूय की ओर उठाया जो कि पूव के छोर से उदय हो रहा था पर अचानक उनको ध्यान आया कि शौच जाते हुए सूय या चन्द्रमा को देखना एक धम भ्रष्ट काय है। उनको यह विश्वास हो चला कि उनकी बहुत सी मुसीबतें अपना कमकाण्ड छोडने के कारण हैं। वे पुरोहित थे उनको तो दूसरों के समक्ष एक उदाहरण बनना चाहिए था। वे धार्मिक पद्धति की भूल कैसे सकते थे ? फिर उन्हें याद आया कि पिछले कुछ दिनों से उन्होंने विचार पवित्र रखने की कोई चिंता नही की—जैसे उन्हें भिक्खु का नाम लेकर नही पुकारना चाहिए था अथवा कुए पर स्त्रियो से नहीं बोलना था—क्योंकि खेतो में प्रात गमन के समय तो पूर्ण शांति होनी चाहिए। कलियुग के समय म जब धम नियम खण्डित किए जा रहे हैं विशेषतया नीची जाति के लोगो द्वारा कोई व्यक्ति भी हर समय इस धम खण्डन से नहीं बच सकता। दुर्भाग्य से कमकाण्ड की अवहेलना बिना दण्ड के तो की ही नही जा सकती—और अछूत तो अभिशप्त होंगे ही। दुजन भिक्खु और उसका बबर भाई उनकी धम के प्रति

अत्यत सावधान पूण आस्था को जानत थे और इसके पहले कि वे उनके पूवजा को देवताओ क कोप का भय दिखाए व उन पर पत्थर फेंक दते। पण्डित जी मे शारीरिक बल इतना न था कि उन धूर्तों स लड सकें पर देवताओ के डर से वह अपनी शरारत रोक देते थे। पण्डित जी ने चारों तरफ देखा कि कही उनमें स तो कोई वहाँ नहीं है। कोई नही था मदान साफ था बस एक ऊट काँटोंदार झाडी को दातों से कुतर रहा था—सत के बाँई तरफ जहाँ सडक बनाने के लिए मिट्टी जमाकर के रखी गई थी।

पण्डित जी को उस सडक क लिए जमा की हुई मिट्टी मे एक लाभ दिखाई दिया। वे चीटियो के घोसल की नमक की और चहे के बिला की मिट्टी के प्रयोग म बच सकते थे—और इस प्रयोग के कारण अप वित्रता से। पर उन्ह यह भी पता था कि यह मिट्टी अछूता द्वारा इकट्ठी की गई है और उनक स्पश से अपवित्र हो चुकी है। अपने काम से उठकर उन्ह कोई अच्छी मिट्टी ही ढूढ़नी चाहिए। वह अपने बायें हाथ म अभी कुछ अच्छी मिट्टी क्या न उठा ल चलें ? बस तब हो वह हाथ शौच काय के अन्य अगा क काम न आ सकगा क्योंकि उनका विश्वास था कि यदि बायाँ हाथ शरीर म मल साफ करने के काम म लिया गया तो उसको कोढ लग जाएगा। वे अच्छी मिट्टी अपने पास जमा कर रख लेंगे—अगर उन्ह वह मिल जाय। पर चारा तरफ रेत-ही रेत इतनी थी कि सही प्रकार की मिट्टी दूर तक नजर नही आती थी—बस सिवाय उस स्थान के जहाँ सडक बनने वाली थी।

पण्डित जी का दिल मिट्टी के ढेर म स अपने बायें हाथ की मुट्ठी भर लने को ललचाया। उस समय उन्ह कोई नहीं देख रहा था—पर व जसे ही उस पर झुक कि उन्होंने हाथ खीच लिया, क्योंकि उनका दिल तेजी स धडकने लगा, और अपने धडकते हुए दिल को लिए वे अधाधुध झाडियों की ओर भागे—उस धमभ्रष्ट काम से घबराते हुए जो अवश्यम्भावी था और छोटी-छोटी बातो से बचने के प्रति विस्मृत,

व खासी तेजी से दौड पड । उनको वह सब जल्दी ही करना चाहिए था जिसके लिए व वहाँ आए थे और कुएं पर जाना चाहिए था स्नान करने को—शरीर की बाधा मन मिटाने को। उनके बतन में इतना पानी था कि अपने पैरो पर विधिपूर्वक छींटे दे सकें। अरे दांतो में चबाने और उन्हें साफ करने के लिए वह दातून तो भूल ही गए। पर नही उनके पास इतना समय कहा था कि कीकर या नीम के पेड से एक टहनी तोड सकें। अचानक वे एक करकट की तरह जो अपनी ही छाया से डरता हो भाडियो के पीछे भाग पडे। उन भाडियो को जो उनकी सफेद दाढी और सिर को छिपा सकती थी।

तीन

रुक्मणा के चेहरे का भोलापन घबराहट के गर्म-गर्म लाल रंग में रंग गया था और इसी अवस्था में वह अपने घर की ओर चली जा रही थी। वह असमंजस में थी कि अपने पिता को एकदम वह सब कुछ जो पण्डित सूरजमनी ने उससे कहने के लिए कहा था कैसे बता सकेगी। उसके गाँव के नौजवानों का नाम जबान पर लाना ठीक न था और अछूत नौजवानों का तो किसी भी अवस्था में नहीं। फिर रुक्मणा की कल्पना ने उसको भिक्खु को देखा—उसको जिसने रुक्मणी को कभी नहीं चाहा। जिसका शरीर लचीला और जवान था और जिसका रंग पक्का और चेहरा ममतामय था। उसके होंठ काँपने लगे। उसके अन्दर मन में एक हल्की-सी व्याकुलता की प्रतिध्वनि उठी जैसे वह भिक्खु की उसके प्रति अवज्ञा के विचार से जग पड़ी हो। रुक्मणा को अपने चेहरे की वह छाया जो उसको पिता के छोटे दर्पण में दिखाई देती थी याद आई और वह अपने प्रति ही कोमल-सा अनुभव करने लगी। विशेषतया अपनी बड़ी-बड़ी आँखों के प्रति उसने सोचा—आज वह चूल्हे पर के तवे की कालिमा थोड़े तेल में मिलाकर अपनी पलकों में लगाएगी और उसने अपने शरीर को चंचल-चंचल एक ओर झुकाया जिससे उसमें एक नृत्य की सी लय-ताल आ जाय। इस क्षण उसे भान हुआ कि उसकी कमीज का पीला रंग फीका पड़ गया है और उसके नाल बाडर से मेल नहीं खाता और न ही नील से रंग के पल्लू से। इन टुकड़ों को रंगरेज के पास भेजना होगा पर यह सब तभी हो सकेगा जब

उसके पिता उसकी सगाई के बारे म सोचें । पर इन सब कपडो म इस समय सराहे जाने म कितना ग्रानद है जबकि वह सत्रह साल की है ! जवान है न कि तीस साल की बुढिया । अपने ससुर क घर फिर उसकी कल्पना क सामन किसी का जल्दी स घूमता चित्र आया जो रात के समय उससे जबरदस्ती कर रहा है—और मन-ही मन उसन निश्चय कर लिया कि वह कभी विवाह नहीं करेगी । पर फौरन उसे यह सोचना पडा कि वह तो एक बकरी है जिसके हलाल होन का दिन निश्चय ही एक आ जाएगा जसे दिन का सूय उदय हुआ है । आज तक उसका हाथ किसी के हाथ म बस इसलिए ही नहीं दिया गया कि उसके पिता के पास दहेज क लिए पर्याप्त धन न था । उसने अक्सर रात को अपने माता पिता को आपस म इस बारे म बातें करते सुना था जब वह बरामदे की धुली रसोई म बतन साफ कर रही होती थी और उनको यह निश्चय था कि पहले उसस एक साल छोटे भाई की ही शादी होगी क्योकि उसकी बहू अपने साथ जो दहेज लाएगी वह ही रुक्मणी की डोली क साथ चला जाएगा । रुक्मणी के होठ अपने होने वाले पति क विरोध के विचारवश कस गए और फिर उसन अपनी गात ठहरी हुई दृष्टि क सामन भिक्षु की मर्ति साकार करने का प्रयत्न किया । सहज बुद्धि से उसन अपनी आख बन्द कर ली और उसे लगा जस कि एक रहस्यमय मुस्कराहट उसके होठो पर उतर आई हो । वह हल्की हल्की हो आई और मदहोशी की सी अवस्था म आगे बढ चली जस कोई मोरनी हो जिसका चेतना पक्षी से आकाश म धीरे धीरे उड रहा हो ! अचानक उसका दाया पर एक बडे पत्थर म जा टकराया । उसकी कमनीय चाल टूट गई पातन के घड सिर पर हिल उठे और थोडा पानी छलक गया । वह डर स पीली हो गई—उन गालियों का विचार आने ही जो उस पर पडनी यदि घडे वास्तव म गिर जाते और उनमे गढे पड जाते। और फिर उसम उस अद्भुत लडके के प्रति क्रोध उभर आया जिसने उसको तबाह ही कर दिया होता । उसकी मा के आन्दा

तब शब्द उसके कान में गरज उठे—'इन गंदे आदमियों की नजरों से बचो। मत भूलो कि तुम गोवर्धन गाँव के जमींदार की लड़की हो। हम अहीर क्षत्रीय जाति के हैं—राजपूत हैं—भगवान कृष्ण के वंशज और हमने कभी मुसलमान या फिरंगी के सामने सिर नहीं झुकाया। स्त्री के पास एक बहुमूल्य उपहार है और यह उस दिन के लिए बचा रखना होता है जो उसे धर्मानुसार पाएगा—शहर की औरतों के चरित्र की तरह नहीं जो बाजारों में बहने वाली वासना की नदी में कूड़े करकट की तरह फेंक दी जाती है।

पर उसने अपने मन से पूछा कि वह उसको कैसे दबाकर रखे जो कि दोपहरी के बाद की नींद में शरीर की गर्म अमस्तता में याद हो आता है और जो सवेरे जागने से पहले के सपनों में सताता है। जब ठंडी समीर शरीर से लिपटती है तो हाथ अपने आप ही तकिये को पकड़ने के लिए फैल जाते हैं और स्तनों के कांपते हुए मांस को दबाने के लिए उसे पलंग पर उल्टी अवस्था में लेटना पड़ता है। अब तक रुक्मणी अपने से बहुत जीत चुकी थी। उसने उठते हुए सूरज की किरणों को देखकर आंखें सिकोड़ीं, होठों को सिकोड़ा और निश्चय से कहा—वह एक हरिजन है। मैं तो उसकी कल्पना तक भी नहीं कर सकती। पर उसी क्षण उसका दिल डूब गया—इस निराश विचार से कि उसने किसी ऐसे पुरुष को अस्वीकार किया है जिसने कभी आँख उठाकर रुक्मणी और उसकी तरफ देखा तक नहीं। पर ये सब तो नीच हैं चमार हैं जो मुर्दा जानवरों की खालें साफ करते हैं और रस्सियां बनाते हैं। किन्तु दीन। ये तो भगी भी तो हैं। बस भजन भिक्षु हो तो अच्छा है जो गाता है और कवित्त रचता है।

एक बार फिर उसने उसके प्रति अपने विचार का विरोध किया और अपने निश्चय को और पक्का बनाने के निमित्त कहा—अपने मन में मैं पवित्र हूँ—जमींदार की लड़की जो हूँ। इस भिक्षु के चेहरे ने मुझे बहुत परेशान किया है। वह अक्सर सामने बगीचे में

खडा दिखाई दिया है अपनी बाँहें कसे गहरे भूरे रग के चेहरे पर चमक लिए और अपनी आखें भुकाए उस अफसर दीवान रूप कृष्ण क सामने जिसने पिछले साल से गाव म आना शुरू किया है। अपन घर का दहलीज पार कर उसने देखा कि पिता जी चारपाइ पर बठ हुक्का पी रहे हैं। उसे पता था कि पिताजी यह सब अपन पेट क भीतरी तत्वो को गतिशील करने क लिए ऐसा कर रहे हैं—क्योंकि व हुक्के के धरा तल से उठी गडगुडाहट के बिना कहा टस से मस होत हैं। पिता क हुक्का गुडगुडाने की आवाज ने रुक्मणी को कुछ शांति पहुँचाई पर उसने देखा कि व उसे कनखियो से देख रहे है—जसे-जसे वह आग बन रही है।

सजनू की मा—इस लडकी को अब कुए पर मत जाने देना। रुक्मणी के पिता ने उसकी मा से कहा— खुद जाओ या किसी और को ।

किसको भेजू ? —मा ने पूछा।

पर जमीदार ठाकुरसिंह के पास कोई उत्तर न था। व हुक्का गुड गुडाने लग।

हो सकता है कुए पर कुछ झगडा हो जाय अगर यह चमार लडके पत्थर तोडन पर अडे रहे।

रुक्मणी ने एक एक करके सारे घडे लकडी के स्टड पर बरामदे म रख दिए। फिर उसन अपन पल्लू से चेहरे का पसीना पोछा और बिल्कुल साफ आवाज मे कहा— पंडित सूरजमनी ने कहा है कि अपन पिता स कहना कि भिक्खु धूर्नासिंह के खेत पर गया है। उसे लगा जसे जितनी गुस्से की आग उसके शरीर म भिक्खु के विरुद्ध थी वह एक एक कण उसने उगल दी है। वह हाथ-परो को ढीला कर रसोई म अपनी माँ क पास सुविधा से बठ गई पर फौरन जसे ही वह बठी उसे अनुभव हुआ जसे उसका सिर मूर्छा म चक्कर रहा हो और उसका चेहरा तम तमा गया—एक अपराध की भावना से—उस व्यक्ति के विरुद्ध शिका

यत स जा निर्दोष था। और जब कि उसे यह तक मालूम न था कि सूरजमना क्या उसस ऐसी बात कहलाना चाहता था। उसकी आत्मा का हनन उसकी इच्छा क विरुद्ध हो गया क्योंकि भिक्खु तो सारे अछूता म सर्वोत्तम गिना जाता था—मौजी और सुचरित्र।

य सब दीन मनुष्य हैं और हमेशा अपनी नजर हमारे सामन झुकाए रखते हैं। —रुक्मणी ने कहा।

मैं भी आज तक इसी भ्रम म रहा हू।' ठाकुरसिंह न कहा। आज य हमारे मुह से रोटी छीन रहे हैं। धूलीसिंह की सहायता से पत्थर तोडकर ये लोग सरकार का खुश करने की आशा करते हैं और पर्याप्त धन कमाने की भी जिससे य श्रेष्ट जाति के स्तर को खरीद सकें। पहले ही इनक पास आवश्यकता से अधिक धन है—और हमारे पास धन कम होता जा रहा है।

—और जस इन श॰॰ से उसे स्वय ही प्रेरणा मिली हो वह हुक्का छोड घर से बाहर निकल गया।

तीन

पकौडी जसी नाक वाला लबरदार धूलीसिंह अपने खत के गाँव के कुए वाले सिरे पर खडा अपनी खिजाब लगी मूछो से खेल रहा था—कुछ घबराहट के कारण और कुछ अपने राजपूत पूर्वजो के साहस को बनाने के लिए और उस सघर्ष के लिए जो कुए पर शुरू होने वाला था। अब तक उसने केवल औरतो को आते जाते देखा था—सिवाय एक पण्डित सूरजमनी के जो खेत से कुए पर नहाने वापिस आ रहा था पर उसको—धूलीसिंह को—देखकर जिसने अपनी दिशा पलट दी थी और घर की ओर चल पडा था। धूलीसिंह को पता था कि यह धूर्त ब्राह्मण कुत्ता ही सारे झगडे की जड था। वह सोचने लगा यह बगुला भगत है जिसके हाथ में माला रहती है और जो गाव के किसी भी आदमी से दुगना खाता है। जो गाव वालो की मृत्यु की वर्षगाँठ पर—जो हर दिन किसी न किसी घर अवश्य ही होती है—दावतें उडाता है और दो अर्थों वाली बातें कहता है। यह मक्कार ब्राह्मण के रूप में लोमडी धूलीसिंह के आगे झुक चुका है पर दूसरी तरफ टमाटर से लाल लाल ठाकुरसिंह के साथ मिलकर षड्यत्र रचता है। काश ! कि गाव की औरतें इतनी आसानी से धोखे में न आती। वे तो उसके सत स्वभाव की शपथ खाती हैं। गाव के लडको ने एक बार उसको आडे हाथो लिया था। उन्होंने मरे हुए कव्वे की हड्डियां उसके चौके में डाल दी जब कि वह योगी की तरह समाधि लगाकर बैठा हुआ था। पर सुजातीय लडको ने भिखू और दूसरे अछूत लडको का नाम लगा दिया और सूरजमनी

ने उनका शिकायत पचायत से की। ये उच्चवर्गीय नौजवान कायर थे—स्वय सूरजमनी के लडके भी पत्थर तोडने और सडक बनाने में कोई कठिनाई न होती। वे अछूत लडकों के साथ बेशक खेलते थे—जब उनके घर के बडे न देख रहे हों पर जहाँ काम या परिश्रम का प्रश्न आया ये सब पवित्र हिंदू बन जाते थे। जब मैं एक पवित्र हिंदू न होऊँ। केवल सारे शारीरिक और नैतिक कायर जल्दी ही पिछड जाएँगे। केवल वे एक जो भिक्खु की तरह शरीर और मन से स्वस्थ हैं शेष रहेंगे और आग बढेंगे। और अब उसके सामने एक शून्य था। सूर्य ऊपर चढता आ रहा था। धूनीसिंह की इच्छा थी कि ठाकुरसिंह आए और एकदम लडकर खतम हो जाय या फिर वह सहायता करने का वचन दे।

उसने एक ऊँचे स्थान से पीछे देखा भिक्खु और दूसरे अछूत लडके काम पर जुटे हैं। उनके हथौडा की चोट की गूंज पास की छोटी पहाडियों से टकराकर लौट आती थी। वे सब एक महीने से कम समय में ही काम समाप्त कर देंगे और सडक को समतल करने वाला इन्जन आ जाएगा उनके सारे पत्थर तोडने से पहले-पहले ही और फिर पत्थर तोडने और इन्जन का काम साथ-साथ चल सकेगा। पर वे तो केवल सात प्राणी थे जब कि दीवान रूपचन्द और इन्जीनियर तुलसीराम का कहना था कि उन्हें तीस के लगभग काम करने वालों की आवश्यकता है—यदि वर्षा आरम्भ होने से पहले काम समाप्त करना है। उसकी आँखें आकाश की ओर उठ गईं और उसने वायु-मंडल की गर्म-गर्म हवा को साँस से अंदर खींचा जैसे यह जाँच रहा हो कि सूर्य में इतना ताप कैसे समा सकता है। उस गर्मी के तत्त्वों को परमेश्वर जो अम्बर में आकाश से नीचे गिर रही थी वह बना सकता था कि मानसून भी जल्दी ही आने वाली है। प्रात के सूर्य की सुगंध उसकी मोटी नाक के नथनों में भारी भारी धुएँ की कुंडली बनाकर चढ गई। गर्मी में कुछ विशेष चिनगारी दिखाई न दी। इससे तो मानसून जल्दी शुरू होने वाली मालूम होती थी। जून के अंत में या जुलाई के शुरू-शुरू में ही

भ्राएगी। सुना जाता है बड-बड भ्रणु बमा ने मौसमा का उलट-पुलट कर दिया है।

मुझे भ्रावाज दे देना—ग्रगर तुम्हें दो मजबूत बाहा का जरूरत हो। भिक्खु न पुकारकर कहा—जम हा हथौडा उठाते हुए उसकी बाँहो म शक्ति का प्रसार हुआ।

भ्रौर मुझे भी —बाबू चिल्लाया। बाबू वह जो शक्ति म भिक्खु से होड करता था—सुदर था। ठाडा स दुबला लगता हो यह बात दूसरी है।

यदि मक्खियाँ तुम्हें तग करेंगी जबरदार धूनीसिंह तो मैं बुहारी उठाउगा। दशरथ ने चिल्लाते हुए कहा जो भ्रौरो स ग्रधिक कोमल सुस्त भ्रौर चालाक था।

जबरदार धलीसिंह ने कहा— भ्रौर तुम क्या कहते हो ? पाण्डु धन वाले शिवराम बूढे बापू भ्रौर शराबी शकर—सब चुप हो ? भ्रौर धूनी सिंह न सोचा कि कुछ भ्रादमी तो केवल भ्रागे बढने को ससार म भ्राए हैं भ्रौर कुछ के भाग्य म पीछे रहना ही बदा है। भिक्खु के सिवा बाकी सब ग्रनपढ हैं भ्रौर पीछे रहेंगे। भिक्खु गा सकता है पढ सकता है बातचीत कर सकता है भ्रौर साथ-साथ काम भी। धूनीसिंह न मन-ही मन सोचा कि कही नाम क पड की शीतलता क नीचे य नाद की गोद म न लुढक पडें।

जबरदार जी तुम लोग हम चमारो का खत म काम देते भ्राए हो। बाबू ने गुस्ताखी से कहा। हम रूखी खाने के कुत्ते जो हैं।

दशरथ न कहा— क्या बहुमूल्य शब्द है!

जबरदार न सहमत होकर कहा— 'बाबू शब्दों के प्रयोग म काम करने म ग्रधिक दक्ष है। सुजनाए कुत्ते की बात पर तो यह ग्रनुचित समय पर भाव रहा है ? देखना है यह जमादार ठाकुरसिंह का स्वागत कम करता है।

भिक्खु बोला— निश्चय ही कहेगा— भ्रापका ही सेवक किसी भ्रौर

का दास नही !'

लबरदार ने टिप्पणी की— यह जानता है कि जो काम करता है वादशाह की नाइ खाता है और इसी म इसकी शक्ति है न कि इसके मन्तर हाथ-परो म ।

मदन कहा—"हा हाँ ।

'ये सारे-के-मारे काहिल ही बन रहते हैं—जब तक कि य तुम्हारे समक्ष न आए—तुम जो उनके मालिक हो । दशरथ बोला ।

इस बात को सुनकर बाबू उठ खडा हुआ और हथौड को हाथ म आक्रातात्मक ढग से उठाए दशरथ पर झपटा

ओह बदमाश अपनी सारी शेखी बदकर । पकौडी नाव वाले न चिल्लाकर कहा । उसे मत छेड दुष्ट । किसी ऐम को क्या नहा तलवारता जो तेरे बराबर हा ? ठाकुरसिंह का लडका तुझ कुश्ती मे पल भर म चित्त कर दे ।

बाबू अपने पत्थरो के ढेर को लौट पडा ऐसी मुद्रा म जसे वह उल्टा लौटने पर क्रोधित हो । उसकी समझ म न आता था कि वह औरो से इतना ऊँचा होने पर भी सबका घृणा-पात्र क्यो है ।

लबरदार धूनीसिंह ने बाबू के दिल म प्रसताप को पहचान लिया और उसे सात्वना देने का प्रयत्न किया दो प्रकार के इन्सान होते हैं । एक वे जो बहुत कम बोलते हैं—अपना काम करते हैं पर जिनके मन म गहराई है । दूसरे वे जो बहुत बोलते हैं और काम केवल इसलिए करते हैं कि उन्हें रुपये-पसे का हिसाब लगाना है । यह सडक एक नया काय है जो बिना ज्यादा वेतन के करना है—पर यह हम सब का इम्तिहान भी है ।

'पर और क्या लाभ है—यदि वेतन कम है ? बाबू ने साने के सहज म कहा ।

ओह गधे ! गाँव का दूध शहर म ले जाया जा सकेगा और गाँव वालो के पास अधिक धन आएगा । लबरदार ने कहा । 'मैं अपनी

उन यात्राओं के बा पर जो मैंने दीवान रुपकृष्ण की मजबूत जीप मोटर म देहरी तक की हैं कह सकता हू कि सडकें और अधिक सडकें और बिजली ही हैं जो खुशहाली लाएगी।

निश्चय ही। —भिक्खु ने कहा। तुम्हारी बुद्धि तो एक अपूर्व वस्तु है—अमृत का तरह—पर य सब लडके तो अपना बाहा म नक्श पर्चो स खरीदे तावीज़ पहनते हैं ! इन्हें चाहिए मोटी माटी मजदूरा—अब और ऐसा समय—न कि दूध पर आर्थिक लाभ जो गाँव म होगा।

बाबू बोला— अब हम मिट्टी म लोटन वाले खेत क मजदूर नहीं हैं।

लबरदार न कहा— तुम लोगों को हाथ म आई एक बकरी टर की भैंस की अपेक्षा अधिक प्रिय है। पर मैं नहीं चाहता कि तुम अधिक अधिक वतन का खोज म खेता से दूर चल जाओ।

इतने म ही ठाकुरसिंह की आवाज सुनाई दी— तुम कुछ समय क बाद हा इतने पोले जान जाओगे। तुम जिसे मक्खन समझ हो वह रेत निकलेगा।

ओ हो ! लबरदार न सोचकर कहा और वह टमाटरी रंग क ठाकुरसिंह का भाग्य क पार स सामना करने को मुडा।

ठाकुरसिंह ने ललकारकर कहा— अपने खेत स निकल आ और मुझे बता कि कहीं आग और रुई भी साथ-साथ रखे जा सकते हैं ?

लबरदार धूनीसिंह ने अपनी मूछों के एक सिरे को चबाते हुए—जस वह इट का जवाब पत्थर से देने मे जान-बूझकर थोडा सकोच कर रहा हो उत्तर दिया— *भैया ठाकुरसिंह यह काम तो करना ही होगा।* सडक बनगी—और य लडक हो य काम करेंगे। तुम तो जानते हो कि कोई भी ऊट पर बैठकर छोटे से दरवाजे म नहीं जा सकता।

अरे धूनी ऊट चलने का और मुर्गा खाने को—तुमने हम सबको धोखा दिया है। ठाकुरसिंह न कहा। अभी उस दिन तो तुम दीवान रुपकृष्ण की गाडी म आए थे—आये थे न ? और गाँव आने स पहले-पहल उससे उतर गए। हमारा गाँव स्वावलंबी था इसमे

पहले कि सरकार के अफसरों ने यहां दखलंदाजी शुरू की। पहले ये चमार हमारे लिए काम करते थे और अब ये मजदूरी कमाते हैं और हमारी सारी सुजातीय बिरादरी के कलेजे पर मूंग दलते हैं। क्या तुम्हें इतना ज्ञान है कि तुम्हें अपनी लड़की की शादी एक चमार से करनी पड़ेगी और लड़के की एक भंगन से ?—अगर तुम इसी रास्ते पर अटे रहे तो ।

मेरा बेटा तो तुम्हारी तरफ है। खबरदार धूलीसिंह ने उत्तर दिया। शायद उसे तो तुम अपनी बेटी दे ही दोगे। रही लड़की की बात सो वह गिरे हुओं से प्रेम क्या करने लगी ? और मैं तुम्हें यह समझाता हूं कि नई सरकार की तुम्हें इसलिए सहायता चाहिए कि बाजार में अनाज के दाम न गिरें। धनीसिंह मन में जानता था कि ठाकुरसिंह को उसने खरी खरी और सख्त बातें कही हैं पर उसे अपनी उस शक्ति का ज्ञान भी था जिसका स्रोत उसकी स्वाभाविक प्रत्यक्ष भावनाओं में था और जिसकी पवित्रता के बल पर वह संसार के सारे छल कपट का सामना कर सकता था। वह झगड़े को अच्छा समझता था—ठाकुरसिंह की तरह मन में बुरे विचारों को बसाकर अंदर अन्दर जलने की अपेक्षा।

जमींदार ठाकुरसिंह जिसका चेहरा चमक रहा था आगे बढ़ा। उसने कहा— तो तुम इन नीच लोगों की कद्र करते हो ?

भिक्खु अपना हथौड़ा छोड़कर भाड़ी तक आ गया। और अछूत भी पीछे पीछे आ गए।

सब के सब पीछे हट जाओ —धूलीसिंह चिल्लाया। कोई झगड़ा नहीं होगा। और यह कहकर ठाकुरसिंह की ओर मुड़ा और बोला— तुम्हें अपने बछड़े के दांत भी तो सुनहरी दिखाई देते हैं।

मुझे खेद है तुम दुष्ट पर और तेरे साथियों पर। ठाकुरसिंह ने कहा— तुम्हें देवताओं का शाप लगेगा—धर्म के खण्डनकर्ता और इस सुखी गांव में फूट के बीज बोने वाले ।'

'ठाकुरसिंह तुम चाहते हो कि जब मर्जी आए सोओ और जब जी

चाहे उठो। पनौडी नाक वाल धूलीसिंह ने कहा। श्रौर तुम्हे इस वात की स्वतत्रता हो ता समझते हो कि सारा गाँव सुखी है पर इन चमारा के सोचन का ढग दूसरा है क्योकि इनके पास कोई जमीन नही श्रौर साल म केवल चार महीने काम मिलता है। यह कहकर धूलीसिंह अपने खेत की श्रोर मुडा। जमान ताप स कराह रही थी। सूय की चकाचौंध रोशनी ने उसको अधा-सा कर दिया श्रौर उस लगा जस भनसान वाली गर्मी स उसके शरीर क राम रोम म मिर्चों की भनभना हट भर गइ हा।

अच्छा तो तूने एक बदजात श्रौरत की तरह अपनी डयोढी क पाछ शरण ल रखा है पर आखिर तो तुझे इसी गाँव म रहना है—जात बिरादरी के साथ। ठाकुरसिंह न कहा।

मुझे तो पचायत न पहल ही दोषी ठहरा दिया है। धनीसिंह न उत्तजित हाकर कहा—जसे कि वह ठाकुरसिंह के शब्दा के निणायक महत्त्व का जान गया हो। पर मैं यह जानता हू कि जब कि हमारा सजातीय बिरादरी थोडा बहुत खा लती है इन चमारा म स बहुत स एस है जा दा बार अचार स भा रोटी नही खा सकत।

तुम्हे इन गधा की अपना मतलब साधने के लिए जरूरत तो है। ठाकुरसिंह न चलते चलते चोट करते हुए कहा पर याद रखना गधे गधे ही होत हैं घाड नही। श्रौर वह कुए की तरफ धीरे धीरे चल दिया—जहाँ श्रौरतें यह सब देखकर पानी भरत भरत बीच म ही रुक गई थी श्रौर ठाकुरसिंह श्रौर धनीसिंह क बीच तकरार पर चितातमक ढँग स ठाडिया पर हाथ रखकर कानाफूसा कर रही थी। ठाकुरसिंह श्रौरतो की सहानुभूति स श्रौर भी व्याकुल हो उठा। उसकी आँखें क्रोध से लाली हो गइ श्रौर दाँत पीसता हुआ श्रौर अपनी मूछ के बाएँ सिरे पर हाथ फेरता हुआ ठाकुरसिंह—जिसका तरह-तरह क सदहो श्रौर चिन्ताने वाल विचारा न आ दबाचा था—गाव का चौडी गली म स्थित अपनी हवेली का आर चल दिया।

जमींदार ठाकुरसिंह का चेहरा पके हुए टमाटर की तरह चमकता था—तभी तो उसका नाम टमाटर से सबंधित कर लोगों ने रखा था। उसकी आँखें भुका भुका थी और चाल में अस्थिरता थी। उसे इसका पश्चात्ताप था कि वह लवरदार धूनीसिंह और अछूत लड़कों में बात करने गया ही क्या? वह सोचता था उन सबने उसको नीचा दिखाया। तकरार में उचित ही अनुचित-सा लगने लगा। या तो धूनीसिंह सरकार के बल पर ही ऐंठ रहा था। इस बात पर कि वह लवरदार था और दीवान रूपकृष्ण जो नया सामूहिक विकास-खंड अधिकारी था उसकी पीठ पर था। बल्कि पुलिस भी धूनीसिंह की रक्षा के लिए बुलाई जा सकती थी। धूनीसिंह का इन्हीं सबका भरोसा था।

और फिर सरकार ने गाँव का सहयोग लेने के लिए किया ही क्या है? अफसर आए अंग्रेजी जबान में बातचीत की—आपस में हा—जैसे सारे विचार उनके मस्तिष्क में हों हा। और पचायत से केवल सस्ते दाम पर मजदूरों की माग की और उन सब के लिए लवरदार सब कुछ था। लवरदार ने भी जरूर डाग मारकर कहा होगा कि सारा गाँव उसके पीछे है। वे धोखे में आ गए और रास्ते से भटक गए और जब अछूत लड़कों ने केवल नाम-मात्र के वेतन पर काम करने को मान लिया तो उन्हें विश्वास आ गया होगा कि उच्च जाति के श्रमिक भी आप-ही आप रास्ते पर आ जाएँगे।

काली माँ का अभिशाप उस मोटी नाक वाले पर पड़े। लामडी सरीखे मुँह वाले दयाराम ने कहा पर इस समय क्या झगड़ा है? यह मध्य श्रेणी का किसान जमींदार ठाकुरसिंह का एक तुच्छ चापलूस था इसलिए वह भी उसकी तरफ ज्यादा ध्यान न देता था।

मनुष्य को अपने देवताओं को नहीं भूलना चाहिए केवल इसलिए कि राजा उससे खुश है। ठाकुरसिंह ने संक्षिप्त रूप से कहा। गली में खड़ी औरतों ने अपने घूँघट काढ़ लिए और दुपट्टे के नीचे बड़बड़ाने लगीं।

वह—धूनीसिंह तो अफसरों के साथ उठता-बैठता है। जवाहर

चाहे उठो। पकौडी नाक वाले धूलीसिंह ने कहा। और तुम्हें इस बात की स्वतंत्रता हो तो समझते हो कि सारा गांव सुखी है पर इन चमारों के सोचने का ढंग दूसरा है क्योंकि इनके पास कोई जमीन नहीं और साल में केवल चार महीने काम मिलता है। यह कहकर धूलीसिंह अपने खेत की ओर मुडा। जमीन ताप से कराह रही थी। सूर्य की चकाचौंध रोशनी ने उसको अंधा-सा कर दिया और उसे लगा जैसे झुलसाने वाली गर्मी से उसके शरीर के रोम रोम में मिर्चों की भनभुना हट भर गई हो।

अच्छा तो तूने एक बदजात औरत की तरह अपना डयोढ़ी के पीछे शरण ले रखी है पर आखिर तो तुझे इसी गांव में रहना है—जात बिरादरी के साथ। ठाकुरसिंह ने कहा।

मुझे तो पंचायत ने पहले ही दोषी ठहरा दिया है। घमंडसिंह ने उत्तेजित होकर कहा—जैसे कि वह ठाकुरसिंह के शब्दों के निर्णायक महत्त्व को जान गया हो। पर मैं यह जानता हूं कि जब कि हमारी सजातीय बिरादरी थोड़ा बहुत खा लेती है इन चमारों में से बहुत से ऐसे हैं जो दो बार अचार से भी रोटी नहीं खा सकते।

तुम्हें इन गधों की अपना मतलब साधन के लिए जरूरत तो है। ठाकुरसिंह ने चलते चलते चोट करते हुए कहा पर याद रखना गधे गधे ही होते हैं घोड़े नहीं। और वह कुएं की तरफ धीरे धीरे चल दिया—जहां औरतें यह सब देखकर पानी भरते भरते बीच में ही रुक गई थीं और ठाकुरसिंह और धूलीसिंह के बीच तकरार पर चिंतातुर ढंग से ठोडियों पर हाथ रखकर कानाफूसी कर रही थीं। ठाकुरसिंह औरतों की सहानुभूति से और भी व्याकुल हो उठा। उसकी आंखें क्रोध से लाल हो गई और दांत पीसता हुआ और अपनी मूंछ के बाएं सिरे पर हाथ फेरता हुआ ठाकुरसिंह—जिसको तरह-तरह के संदेहों और चिन्ताजनक वाले विचारों ने आ दबोचा था—गांव की चौडी गली में स्थित अपनी हवेली की ओर चल दिया।

सिंह न कहा। उसके पास ढढ सी बीघा जमीन था और वह पाच आदमियो की सभा का सभासद था जिनका पच ठाकुरसिंह था।

ग्वाल मटैया ने टिप्पणी करत हुए कहा— आग स खल रहा है—आग स!

मुर्ग जसी आँख वाले रामनिवास ने जिसकी पचास बीघा जमीन थी और जो अपनी ऊपर उठी मूछो और सुधम स उसकी अच्छी रखवाली करता था—कहा वह नरक की ज्वाला म जलगा।

जमीदार ठाकुरसिंह न कहा पर इस समय तो उसन अपने गाँव क सारे दिलो म आग लगा रखी है। गोवधन तो सुनहली धूप म नहा रहा था और उसका जीवन शांति स चल रहा था कि वह अपनी गुमता दुनया और ज्ञान-ध्यान की बकवास ले आया और चमारा क दिमाग म रुपय का जहर भर दिया। और य अछूत और खेत म काम करने वाले मजदूर जिनके प्रति हम इतन उदार रहे है—अब किसी की नही सुनत। इन्होंने हमारा धम नष्ट कर दिया है।

वह इन अछूता को छूकर काली न हो जाय ता कहना। उसके लडके सजनू ने कहा। उसक चेहरे पर चेचक क निशान एसे चमक रह थे जस एक एक निशान गुस्स म भरा एक एक आँख हो।

मैं ता धम का आदर करता हूँ। जमीदार ने कहा। मुझ इसी म ईश्वर का वरदान मिलता है। बस उसका हुक्का-पानी बन्द करना है अब। और यह कहकर वह औरता क बीच म स चल दिया। उसक पाछ औरता न अपना हल्का-हल्का कानाफूसी की गालिया तक पहुँचा दिया और जमीदार ठाकुरसिंह अपना ही घृणा की आग क धुए म से जिसम गाव की गलिया की धूप भी मिल गई थी गुजरता हुआ मन्दिर की ओर जा रहा था।

गाँव क आवारा कुत्त छाटा-छाटा छलाँगें लगाते हुए और अपनी दुम हिलाते हुए उसक पीछ हा लिए पर जमीदार की मन स्थिति ऐसी कहाँ थी कि कुत्तों को प्रोत्साहन दता। उसने उन सबको जोर से 'हट'

चिल्लाकर तितर बितर कर दिया।

इस हिंसात्मक वातावरण ने ठाकुरसिंह के होश-हवास अस्त-व्यस्त कर दिए और उसकी कल्पना शक्ति को धुंधला दिया। उग्र व्याकुलता के धुएं से वह लगभग अंधा हो गया और अपने मकान वाली गली के किनारे बंधी बकरी की रस्सी से टकरा गया। उसकी पगड़ी अपने स्थान से हिल गई और उसने शीघ्रता से उसे ठीक किया। कहीं ऐसा न हो कि ऐसी सम्मानहीन अवस्था में कोई उसे देख ले। अपनी इज्जत को बचाए रखने के प्रयत्न में वह भूल गया कि वह कहीं जा रहा था और अपने घर के दरवाजे में ही घुस चला। ड्योढ़ी में पैर रखते ही उसे होश आया कि उसे तो मंदिर जाना है—यदि धूलीसिंह के विरुद्ध धर्मानुसार कार्यवाही करनी है। वह झटका-सा पीछे मुड़ा पर उसके लड़के सजनू ने उसे देख ही लिया।

बापू!—बेटे ने बाप को पुकारा—बाप जो गहरे संताप में था। लेकिन तब तक वह उस चौक की ओर मुड़ चुका था जो मंदिर के मार्ग की ओर था।

गुनी रसोई में से रुकमणी ने पूछा— बापू ये क्या? लस्सी तैयार है उनको ठण्डा करने को—बुला ले न उन्हें। गय्या को मक्खियों ने तंग कर दिया और उसने अपनी पूंछ फटकारा। देख कैसे लगी है मेरे आकर।

हमेशा बकरी की तरह मैं मैं करती रहती है। सजनू ने कहा बापू तो क्रोध की ज्वाला में झुलस रहे हैं और तुझे अपने चेहरे की पड़ी है। और वह अपने बूढ़े पिता के पीछे-पीछे गली में चल दिया।

विष्णु भगवान के मन्दिर के अंदर पवित्र आश्रय-स्थान में पण्डित सूरजमनी ने एक छोटा मोटा-सा धूप का कुण्ड जलाया ही था। उसका शरीर—केवल लंगोटी से ढका हुआ का अपराधी शरीर—पसीने में भीगा था।

मण्डप के उच्च स्थान पर शक्तिमान भगवान की रंगीन कपड़ों में सुसज्जित मूर्ति सुशोभित थी और वातावरण में धूप की सुगंध भरी थी।

जमीदार ठाकुरसिंह ने उस सुगन्ध और अपने विषादयुक्त मन स्थिति के वश होकर मूर्ति के आगे पूज्य भाव से हाथ जोड दिए और उस कडवे धुएं में एक श्वास भरा—इस आशा में कि शायद उसके मन में जो असतोष था वह कुछ शान्त हो जाय। दीर्घश्वास से उसको कुछ जो-सा मिचलाने लगा पर वह अपने थूक को निगल गया और आपत्ति को टाल-सा गया।

जमीदार ठाकुरसिंह को मन्दिर के अंधियारे वातावरण में शान्ति तो अवश्य मिलती थी पर विष्णु की मूर्ति उसमें कोई विश्वास या साहस की भावना उत्पन्न न कर सकती थी। महाराज कृष्ण जो सामने दीवार के चित्र में अपनी प्रेमिका राधा की बाँहों में बाँह डाले थे उसको अक्सर अपनी ओर खीचते थे और जब कभी वह मन्दिर में आता तो कृष्ण को ही विष्णु के अवतार के रूप में अपने मन में बसाकर लाता। अपनी युवावस्था में हर-हर महादेव की ध्वनि पर उसका मन बडा भक्ति भाव से भर जाता था—वह महादेव जो अँधियारे के देव शिव थे जब कि उसकी गृहणी काली-महाकाली विकराल शिव की अर्द्धांगिनी की पूजा करती रहती। पर पूर्वजों के धर्म के अनुसार तो विष्णु को ही सर्वोपरि देवता का स्थान था और इसी धर्म में वह पला। फिर पडित सूरजमनी भी वैष्णव भजन ही गाता था इसलिए विवश होकर उसे अपनी माँ के आदेश मानने पडे। सारे अवतार उस परम पिता परमेश्वर की अभिव्यक्ति हैं। हम तो उसी देवता की पूजा करनी चाहिए जो हमारे मन को भाता है—और आखिर तो अपने कर्म ही हैं जो कुछ भय रखते हैं न कि पुरोहित का पाठ।

पडित सूरजमनी ने अपनी पूजा आरभ की। मूर्ति के चरणों पर पुष्प चढाए और पीतल की थाली में रख तेल के दिए से मूर्ति के चारों ओर घण्टियाँ बजा-बजाकर आरती उतारी और मुह से आरती आरती शब्द उच्चारित किए। इस सब कार्यक्रम को देखकर मन्दिर के एकाकी भक्त ठाकुरसिंह को बडा उत्साह अनुभव होने लगा और

उक्ताहट भी कैसी ? निस्सीम ! क्योंकि वह जिस कार्य के लिए मंदिर में आया था उसे कैसे भूल सकता था ? मोटी नाक वाले धूलीसिंह को जाति से निकालने का निश्चय करना था पर फिर भी हर बीतने वाले क्षण के साथ क्रोध की लपटें उसके शरीर में पसीने की बूदों के रूप में परिवर्तित होकर चू रही थी। एक क्षण तो धूप की सुगंध और धुए से उसकी विचार शक्ति अस्त-व्यस्त हो गई और वह अपनी आत्मा के भीतर चिल्ला उठा—

'चाहे कुछ भी हो मुझे अपना उद्देश्य नहीं भूलना है। सूरजमनी ही क्या न सदा की तरह बुराई के साथ समझौता कराने का प्रयत्न करे मैं चल से न बढ़ूगा। उसने अपने आत्मबल को और ठोस बनाने के लिए अपना ध्यान देवता की मूर्ति पर केंद्रित करने का प्रयास किया पर विष्णु के चारों ओर तो सब कुछ बड़ा दयापूर्ण, सहनशील और दण्ड रहित था इसलिए उसका जी चाह रहा था कि वह हर हर देव महा देव का जयकार कर सके और उस ताडव देव शिव के नाम में जो उन्माद है अपने आप में भर सके।

पर अचानक उसके हृदय के अधकार में एक विचार का प्रकाश कौंध गया। उसने सोचा सारे जीवन भर तो उसने धर्म से संबंध जोड़ा नहीं और अब धूलीसिंह को नीचा दिखाने के लिए देवताओं की सहायता माँग रहा है। यद्यपि पुरोहित जो कि अपने जीवन निर्वाह के लिए उच्च जाति के कुटुबों पर निर्भर है उसकी ओर हो जाएगा और लखरदार को जाति से निकलवाने पर राजी हो जाएगा—देवता तो उसके साथ न होंगे ? यह सोचकर वह कुछ ढीला पड गया। सरकारी अफसर और देवता दोनों का आश्रय एक साथ छोड देने से वह अकेला रह जाएगा—इसलिए उसे सभवत धूलीसिंह से कुछ-न-कुछ समझौता कर लेना चाहिए। अब वह सूरजमनी से उसे बिरादरी से निकालने के लिए न कहेगा बल्कि कहेगा कि उसे समझाए कि लखरदार अपने जाति वालों के साथ रहे न कि अछूतों के साथ, और तब वह सरकार के

साथ भी बातचीत चला सकता है। पत्थर भी कुछ धार्मिक रीति से शुद्ध किए जा सकते हैं और दयाराम और रामनिवास अपने लड़का और दूसरे किसानों को उनको तोड़ने के लिए कह सकते है। वे सब वेतन कमा सकते हैं और अछूत खेतो म काम कर सकते हैं—अगर व चाह तो।

चरणामृत ल लो। पडित सूरजमनी ने अपने पाठ के बीच म ही कहा और वह अपने दाए हाथ म पीतल के चम्मच म पवित्र जल को लिए भुक गए। जमादार ठाकुरसिंह न अपने दोना हाथो की हथेलियाँ फलाइ और पुरोहित स चरणामृत लेकर पी लिया। ठाकुरसिंह न अवसर पाकर कहा— मैं धूनीसिंह के सबध म यहाँ आया था।

पण्डित सूरजमनी ने अपनी आखो को आधी मूद लिया और अपनी प्रार्थना के शब्दो का उच्चारण करन के साथ-साथ सिर को ऊपर-नीचे हिलान लगे। ठाकुरसिंह कुछ न समझ सका कि पुरोहित क्या अपना सिर हिला-डुला रहा है पर यह समझकर कि उसने अनुमति दे दी है कि वह अपने हृदय की बात कहे उसने कहना शुरू किया— जसे कि आप जानत हैं पडित जी

पण्डित जी ने अपना हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थी को शात होने के लिए आदेश किया और उन पीतल की थालियों की ओर इशारा किया जिन पर मछली कछुआ सूअर और नर क चित्र खुदे थे। पूजा करन वाला समझ गया कि य सब तो विष्णु क प्रतीक है और पूजा अभी चल रही है। इस समय म कोई भी बाधा उस धार्मिक कृत्य म कस हो सकती है? बचारे जमीदार ठाकुरसिंह का मन उस भारी वातावरण स जिसम पुरोहित का करार बडबडाहट और धूप की गन्ध और नभार दुगध भरा था घबरा उठा। वह इतना हारा मन्दिर स तेजी स बाहर निकल आया अहङ्कार मन म कामना हुआ— यह संसार तो प्रलय को प्राप्त हो जाय तो अच्छा। जिस तरह आजकल चल रहा है—अब तो कलियुग आ गया है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी अब अपने स्थान से गिर

चुके है।

उधर उसका पुत्र सजनू अपने मित्र लबरदार घूलीसिह के लडके लछमन से मिलने निकल गया। उसके हृदय मे अपनी चाल मे पूर्ण विश्वास से उत्पन्न हुई उग्रता थी। गोवधन गाँव के इन दो बडे खान दानो मे इस बारे मे कभी कोई बातचीत न हुई पर यह बात स्वयंसिद्ध मानी जाती थी कि दोनो खानदानो मे लडकियो का आदान प्रदान एक न एक दिन अवश्य होगा। दोनो लडके अपनी पारस्परिक मित्रता का लाभ उठा एक-दूसरे के घर चले जाते और अपनी होने वाली दुल्हनो की झलक पाने का प्रयत्न करते। लडकियाँ कई बार अनजाने ही सामने आ जाती। उनके शरीर मे कई बार लहरें होती जैसे कि वे जानती हों कि किस प्रकार के सबध-सूत्र मे उन्हे बधना है। दूसरी ओर इस योजना के प्रति थोडी असहमति भी थी क्योकि इस प्रकार का विनिमय हिंदुओ की अधिकाश जातियो मे लूट-खसोट की तरह ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। पर फिर भी लडके तो भावी सबध मे जुड गये और साथ ही होने वाले बहनोइयो की तरह भी। यहा तक कि उन्हे एक दूसरे को साला विशेषण के बुलाने मे आनन्द आने लगा। उनके माता पिता अवश्य यह चाहते थे कि इस आने वाले सस्कार को अधिक धुआ प्रदान न करें—पर वे सुनने किसकी थे? माता पिता को कुटुब की नौका के कमजोर पड जाने का ज्ञान भी न था जिसके मूल में लज्जा का कभी-कभी सिमटा जाना था। चीटियो या शहद की मक्खियो की तरह ये नौजवान अपने पिताओं को डक मारकर मौत की गोद मे सुला देने को उद्यत थे। सजनू ने देखा कि लछमन धूलीसिह के घर मे पशुओं के छोटे कोठे मे गडासा के लिए चारा काट रहा है।

"कहाँ से आ रहा है—और किधर चल दिया?" लछमण सिह ने कुल्हाडी को उपर उठाकर सजनू की ओर देखकर कहा।

सजनू ने उत्तर दिया—"अरे आदमी ही आदमी के पास आता है। पहाड मोहे ही पहाड तक चलकर जाता है।"

साथ भी बातचीत चला सकता है। पत्थर भी कुछ धार्मिक रीति से शुद्ध किए जा सकते हैं और दयाराम और रामनिवास अपने लड़कों और दूसरे किसानों को उनको तोड़ने के लिए कह सकते हैं। वे सब वतन कमा सकते हैं और अछूत खेतों में काम कर सकते हैं—अगर वे चाहें तो।

चरणामृत ले लो। पंडित सूरजमनी ने अपने पाठ के बीच में ही कहा और वह अपने दाएं हाथ में पीतल के चम्मच में पवित्र जल को लिए झुक गए। जमादार ठाकुरसिंह ने अपने दोनों हाथों की हथेलियां फैलाई और पुरोहित से चरणामृत लेकर पी लिया। ठाकुरसिंह ने अवसर पाकर कहा— मैं धूनीसिंह के संबंध में यहां आया था।

पंडित सूरजमनी ने अपनी आंखों को आधी मूंद लिया और अपनी प्रार्थना के शब्दों का उच्चारण करने के साथ-साथ सिर को ऊपर-नीचे हिलाने लगे। ठाकुरसिंह कुछ न समझ सका कि पुरोहित क्या अपना सिर हिला इंकार रहा है पर यह समझकर कि उसने अनुमति दे दी है कि वह अपने हृदय की बात कहे उसने कहना शुरू किया— जैसे कि आप जानते हैं पण्डित जी

पण्डित जी ने अपना हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थी को शांत होने के लिए आदेश किया और उन पीतल की थालियों की ओर इशारा किया जिन पर मछली कछुआ सूअर और शेर के चित्र खुदे थे। पूजा करने वाला समझ गया कि ये सब तो विष्णु के प्रतीक हैं और पूजा अभी चल रही है। ऐसे समय में कोई भी बाधा उस धार्मिक कृत्य में कम हो सकता है? अचानक जमादार ठाकुरसिंह का मन उस भारी वातावरण से जिसमें पुरोहित की कठोर बड़बड़ाहट और धूप की गाढ़ी और गंभीर दुर्गंध भरी थी घबरा उठा। वह तुरन्त हाकर मन्दिर से तेजी से बाहर निकल आया मन ही मन में कामना हुई— यह संसार तो प्रलय को प्राप्त हो जाय तो अच्छा। क्या कि यह आजकल चल रहा है—अब तो कलियुग आ गया है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी सब अपने स्थान से गिर

लक्ष्मण ने नई फुर्ती से कुल्हाडा चलाते हुए कहा— तेरी कमजोर आवाज से मुझे शक्ति मिलती है।

सजनू ने पीडा से विरोध करते हुए कहा— रोक दो इसे लाल।

लक्ष्मण ने कुल्हाडा गिराते हुए कहा— मनुष्य की सुन्दरता भीतर की होती है और पशु की बाहरी।

हा —सजनू ने कहा। पकौडी नाके वाला चला गया है और ।

और क्या ? लक्ष्मण ने शांत स्वभाव से कहा।

और वह भिक्खु का साथ ले गया है और लडका को भी— अपनी जमीन पर वे सब खान से लाए पत्थरों को तोड रहे है। वह हमारे धर्म का खंडन कर रहा है और तुम्हे नष्ट। अब मेरे पिता रुक्मणी का विवाह तुम्हारे साथ करने को कभी राजी न होंगे ।

अच्छा पर तू ऐसे अशुभ शब्द क्यों बोलता है ? लक्ष्मण ने बात काटकर कहा। मैं जाता हू और बापू को समझाता हू।

यह सब इसलिए कि इन चमारो को तो ईश्वर या मनुष्य का कोई भय है नही। मेरे बापू ने भी बडा प्रयत्न किया—तुम्हारे बापू को राह पर लाने का पर वह माटी नाके वाला तो अपनी बात पर अडा है और उन अछूतो को उत्तेजित कर रहा है।

बूढा तो पागल हो गया है।

आत्मा मे पाप का होना— भूसे मे अग्नि की तरह है —सजनू ने उपदेशात्मक सहज से कहा। तुम्हारे बाप को भिक्खु और अछूतो से सस्ती मजदूरी मिल जाती है और इस प्रकार वह सरकार को धोखा दे सकता है।

'नही वह इतना धूर्त नही जितना कि उदार और अच्छे हृदय का है। और फिर बापू इतना कमठ है कि उसे तो हर क्षण कुछ-न-कुछ करना ही है। वह तो सडक बनाकर ही रहेगा।

अपनी जाति और दूसरो का धर्म खोकर भी यदि उसने यही मार्ग अपनाया है तो वह माता को भी भिक्खु से क्यो न ब्याह दे ।

लक्ष्मन ने अपने मित्र को भयपूर्ण विस्मय से देखा। उसकी चुनौती में कोई दुराव न था और जो सत्य कहा गया वह उस अपमान में जो इस ताने में निहित था। अधिक गंभीर था कि सजनू अब उसकी बहन से विवाह की अभिलाषा न करता था। रुक्मणी तो उससे छिन हो जाएगी और अब वह ।

'क्या कुटुंब है तुम्हारा ? तुम स्वयं ही पण्डित सूरजमनी से घृणा करते रहे हो। तुमने अपनी माँ की खिल्ली उड़ाई जब वह प्रार्थना कर रही थी और अब तुम जाति बिरादरी के नाम पर आठ आठ आँसू बहा रहे हो।

मूर्ख भी बुद्धिमान समझा जा सकता है यदि वह न बोलता। —सरज् ने ताना कसा।

लक्ष्मण ने उत्तर दिया 'तब तो बुद्धिमान को वह काम पहले ही कर लेना चाहिए जो वह मूर्ख से बाद में करने के लिए कहता है।

'लेकिन यहाँ तो मूर्खों की फसल बिना सींचे फल रहा है—पकौड़ी नाक वाले की और तुम्हारी। सजनू ने घृणा से कहा।

लक्ष्मण जो कि अपने पिता के प्रति वफादारी और रुक्मणी का पाने की हल्की-सी आशा के बीच संघर्ष में फंसा था झल्ला उठा।

ओह ! चुप हो जा। अगर तूने मेरे खानदान को बुरा भला कहा तो मैं भी तुझे गाली दूंगा। यह मत समझ कि मैं अपने कठोर पिता को आसानी से ठीक कर सकता हूँ जब कि तू अपने पिता के सामने अपनी आवाज भी ऊंची नहीं कर सकता।'

पकौड़ी नाक वाला अपनी मति खो बैठा है।' सजनू ने कहा।

मैं जानता हूँ—यदि मेरा यह विचार है कि तू उसको अस्पृश्यता से धर्म की ओर ला सकता है। यह पक्की बात समझ कि हम उसे जाति से निकाल देंगे और फिर एक चीज रह जाती है—उसे छोड़कर अपनी

मा और माता के साथ हमारी तरफ चल आना। यह कहकर उसने लक्ष्मण को हाथ से ऊपर उठाने का प्रयत्न किया।

अपने मानसिक अंतद्वंद्व के वेग से भडके हुए लक्ष्मण ने तडककर कहा— मेरा बाह छोड दे।

तो जा तू भी अछूतों म मिल जा। सजनू ने कहा—उसका पीला चेहरा उस निराशा म चमक रहा था जो उसे लक्ष्मण से हमेशा के लिए विदा होने पर होती। उसने अपने शरीर से चलने को कहा।

अरे ठहर—जरा मैं माँ से तो बात कर लू। लक्ष्मण ने कहा।

सजनू चलते-चलते बोला मेरा जाना मरे आने से अच्छा है। तू अपना रास्ता चुन ले।'

अन्न की कोठरी के झिलमिलाते अधेरे मे से लक्ष्मण की उदास आँखें अपने मित्र को देखता रह गइ। उन आखो म कोई भाव न था—बस सूनी थी। दो बछड़े पास खडे अपनी जुगाली करते हुए अपने ही ढग से धीरे धीरे चारा चबाने की आवाज कर रहे थे और लक्ष्मण को देख रहे थे।

रुक्मणी के श्वास म जो भय की लहरें थी वह भवर-सा बनाकर अब उसके वक्ष म उतर गई थी। उसका दम घुटने लगा। वह उस भीतरी अनाज का कमरा से उठकर बाहर आ गई जहाँ वह अपने पिता के लिए लस्सी और माँ के लिए मक्खन बना रही थी। उसने अपनी झुकी पलको की रेखाओं के नीचे से बापू को बडी चिता म बाहर जाते देखा था और उसका अन्दाजा था कि वह—उसका बापू—उसके भाई व मित्र के पिता के बारे म चिंतित था—जिसका नाम वह अपनी जुबान पर न ला सकती थी क्योंकि उनके खानदान म ही तो उसकी सगाई लगभग हो चुकी थी। पर उसके निर्लेप चेहरे पर किसी ऐसे सत्य के ज्ञान का चिह्न न था जिसका सबध होने वाले मानवी कलह के बवडर से हो और जो उसके पिता के चेहरे पर पूरी तरह छाया था। रुक्मणी की ओर सबका

व्यवहार अच्छा था बस केवल उसकी माँ कभी कभी अपनी टो वेवे स्वतत्र मन की किसा अहचिकर बाह्य अभिव्यक्ति स स्प्ट होकर डाट देती— तेरे सिर स तेरा पल्ला हमेशा हटा ही रहता है और इन बेहूदा चमारो की ललचाई आँखें तुझे घूरती रहती हैं।

रुकमणी को पता था कि रात को देर तक उसके माता पिता उसी के भविष्य के बारे म ही बात करते रहते। पहले तो दहेज का प्रश्न था। महीनो तक वे यह निश्चय न कर सके कि रुकमणी का विवाह निकोहपुर के जमीदार क बेटे क साथ कसे करें क्योंकि लडके क मा बाप पाँच हजार रुपये मागते थ। फिर एक दिन अचानक सजनू ने लडकपन म अपने मित्र लछमन क नाम का प्रस्ताव रख दिया और दोनो घरानो को लडकियो का लेन-देन कुछ ऐसा शुभ काय लगा कि दोनो घरो म यह विचार जम-सा गया। पर अब दोनो कुटु बो म आपस क मतभेद का विचार उसके दिल म दराती सा काटता हुआ मालूम हुआ।

"अपने होश म आ जा रुकमणी। माँ न चिल्लाकर कहा। तू घर म एक टका बराबर तो है पर अपने पिता तथा भाई को कष्ट दे रही है। हम नही मालूम कि पिछले जन्म के कौन-स पाप आगे आ गए कि हम धूनीसिह के लडके को तेरे लिए लना पडा और उसकी लडकी को तेरे भाई क लिए। कितना पतन है हमारा! हमने कभी सरकार के सामने सिर नही झुकाया और अब इस धूलासिह स नीचा देखना पडा—वह धूनीसिह जो अछूत ही है।

रुकमणी न एक शब्द न कहा। वह बाहर की रसोई क बरामदे। मुकडी-सी बठी रही। माँ के ये वाक्य उसे अविश्वसनीय लगन थ। उसकी साँस रुक गई और उसे लगा जसे सारी सृष्टि एक तेजी म घूमने वाला चक्कर हो जिसके बीच म वह लटकी है। उसकी निर्निमेष जमी हुई दृष्टि के सामने दालान म रखी हुई चारपाइयाँ तरने लगी।

'आ किस्मत की मारी! अपने हाथ हिला। कुछ काम कर

पानक तो काट ल। —माँ न कहा।

फौरन हा रुक्मणी ने दराँतीनुमा चाकू को उठाया जा नकडी के पायन्ान पर नगा था और पालक का साग काटने नगी और जस वह एक मशीन की तरह चाकू के पने सिरे पर बार-बार हर पालक का लाती थी वन सोचता जा रही थी। उसे अपनी माँ समझ म न आती थी। कल तक ता घर म किमा क तरह का चिह्न न था। आपस म इधर उधर की बातचीत होती थी कमला की रुपय की। हमशा की तरह सजनू उनके साथ घर के पास स गुजरा था। उसन उह चोरी स देख ही लिया था। उनकी आँखा मे उसकी नजर टकरा गई थी पर अब उसकी माँ के शब्दा न उसक चेहरे पर ऐसा पर्दा डलवा दिया कि वह दालान की ओर देखन का भी साहस न कर सकता थी। सूय आकाश म ऊचा चढता जा रहा था और उसकी उष्णतापूण चकाचौंध से टकरा कर रुक्मणी की शून्य दृष्टि लौट आती थी।

चार

प्रार्थना की पहली घड़ी के बाद पंडित सूरजमनी को आभास हुआ कि आज उसे जमींदार ठाकुरसिंह जैसे महान व्यक्तित्व की अवहेलना करनी पड़ी जब कि वे मंदिर में आए थे इसलिए उसने अपनी मर्फ़ेदारी का उचित वमनपूर्ण अवस्था में किया और दायें हाथ में छड़ी और बायें में माला लेकर मंदिर से बाहर चल दिया।

सूर्य संसार पर अग्नि उगल रहा था—जैसे-जैसे वह समतल भूमि से उन पहाड़ियों की ओर गुस्से में लाल होकर जा रहा था जो पंजाब को राजस्थान से अलग करती हैं। पंडित सूरजमनी ने सूर्य को एक क्षण देखा फिर अपनी दृष्टि जल्दी से पृथ्वी की ओर लौटा ली और सूर्यदेव से दया की प्रार्थना की। लेकिन जैसे ही सूर्य की लपलपाती हुई गर्मी ने उसके चेहरे को झुलसाया उन्हें ज्ञान हो गया कि इस देवता के हृदय में दया न थी। इसका रोष तो सदा से अधिक था। इस देवता में मन की कड़वाहट तो इस पाप से भरे संसार को बस निगलना ही चाहती थी।

निश्चय ही पौराणिक पवित्र पुस्तकों में लिखा था कि कलियुग में सूर्य का ताप बहुत बढ़ जाएगा और संसार को जलाकर राख कर देगा क्योंकि सब पाप-कर्मों का फल तो मिलेगा ही। पंडितजी ने जो अफवाहें सूर्य की शक्ति के विस्फोटक और उसमें विपाक्त होने वाले समुद्र के पानी के बारे में सुनी थीं उनसे उनका विश्वास इस भविष्यवाणी में और जम गया और ऐसा क्यों न हो? लंबरदार धूलीसिंह और उसके

तलवाचट्टों द्वारा धम का खडन इस अधियारे युग क फलते पाप का एक चिह्न ही तो था। पुरोहित का चहरा ताप की चिगारिया से जल उठा और पाप में डूबे मानव क प्रति घृणा का भावना स उसकी भौंए तन गइ।

जमीदार ठाकुरसिंह और उसका लडका सजनू पीपल क पड के नीचे बठे थे—कुछ एस जस कि उन्ह कुछ पूव आत्मिक नान हो कि देवता उनकी हा ओर हा। व दवा कृपा क दूत पडित सूरजमना की वाट जोह रहे थ।

पडितजी --सजनू ने जोर से चिल्लाकर बात शुरू करनी चाही—पेड के नीच फडफडाती हुई चिडिया को पत्थर स मारकर भगात हुए।

सूरजमनी न अपना हाथ उठाने हुए लडक को गान करत हुए कहा वेटा और वह पीपल क नाचे पत्थर की चौकी पर बठ गए। मुझे सारा झगडा पता है। मैंने इसक बारे म थाडा सोचा भी है। अब तू जा लडके मुझ तेर पिता स बातें करना है।

लकिन ? सजनू न अपमानित-सा होकर विराध किया। वह खडा हो गया और आंधी म हिलते वान वक्ष की तरह कापने लगा। फिर यह कहता हुआ वहां स चला गया खुद ता तुम डूबोगे ही औरों को भी न डूबागे।

जमीदार ठाकुरसिंह ने अपने बेटे क उत्तजनात्मक व्यवहार को रोकने का प्रयत्न अपन दायें हाथ का घुमाकर किया और उसकी ओर से बात टालकर पुरोहित म बाला यह लडका ता हिनहिनाने वाला घोडा है—बदमिजाज। थोडी दर की चुप्पी क बाद फिर बोला पण्डितजी उस धूलीसिंह का हुक्का-पानी बन्द किया जा सकता है। जहां तक उन चमारा का सवध है व उन झोंपडिया म रहत हैं जो उस जमीन पर बना हैं जिस हमारे घर ने उन्हें इस गांव म दी है। उनसे वहां स निकल जान क लिए कहा जा सकता है। धूलीसिंह और सरकार उनक लिए गांव स वाहर घरा का प्रबध कर लें न ।

निश्चय ही यह लोग पापी हैं और उस सबके पात्र हैं जो आप कहते हैं। सूरजमनी ने कहा। पर य तो अपना कम हो कर रहे हैं। उसका फल चखेंगे। करने दो इन्ह जो चाहे—अपने सब तुम्हारे साथ हो—मूलासिंह और वह अफसर दीवान रूपकृष्ण।

जमींदार ठाकुरसिंहने उत्तर दिया। मूलीसिंह तो कभी हमारी तरफ न होगा। औरो को तो मैं समझा सकता हू पर वह तो अपने सरकारी ओहदे के गुमान म है—अपनी लवरदारी के। और भूल जाता है कि मैं पचायत का सरपच हू—जनता द्वारा चुना हुआ। दीवान रूप कृष्ण उसकी सहायता कर रहा है और उस बस का ठेका दिला रहा है जो गाँव और गुड़गावें के बीच चला करेगा। तभी तो वह सड़क को बनाना चाहता है।

यह ही क्यो उसका बेटा लछमन भी हमारा विरोधी है। सजनू ने अपन मित्र की मानसिक अनिश्चितता को नकारात्मक दृष्टिकोण का रग चढाकर प्रस्तुत किया।

तुम्हारा भोलापन ही तुम्हारे और उसके बीच म खाई बन रहा है बेटा। पुरोहित न मक्कारी से कहा। जा और उसके लड़के को यहा बुला ला।

जमींदार पण्डित सूरजमनी की बुद्धिमत्ता स बड़ा प्रभावित हुआ और अपने उठे हुए हाथ से इशाराकर सजनू को मूलीसिंह के घर जान को कहा।

पुरोहित और जमींदार ठाकुरसिंह फिर एक बार देर तक चुप बठे रहे, और इतने समय मे दोनो अपन मन म सोच रह थ कि कस मूली सिंह और लछमन को चकमा दिया जाय और साथ-साथ दीवान रूप कृष्ण स टक्कर भी न हो—जो सड़क बनवाने पर तुला था। कुछ देर बाद ठाकुरसिंह स यह शांति सहन न हुई। वह मूर्खतापूर्ण जल्दी म कह गया चाहे वसा उसका आशय न था—

हम बहुत कुछ कर सकते हैं—अगर चाहें तो। जिस भूमि पर

चमार रहत हैं वह मेरी है। थोडा सा भाग धूर्तसिंह का है पर जमा न्के कहन है कुछ तो करना ही है।

सरपच ठाकुरसिंह! पुरोहित ने खुशामदी लहज से कहा। पचायतका प्रधान होन क नाते तुम्हें बुद्धिमानी से काम लना होगा। य लोग ता अपन कर्मों स ही अपन अरिष्ट की ओर जा रहे हैं—अपनी भाप न्यिा की मक्खियाँ और धल म लथपथ। ्नकी फम वाली छता म निकलता हुआ धुआँ और दम घोटन वाली गर्मी ्नक ्िए पर्याप्त दण्ड है। और मरा विचार ता यह है कि हमार ोगो की गलती थी कि उन्होंने हरिजना क हाए हुए पत्थरा को तोडने म इकार कर न्यिा। तुम्हारे लिए आग म स बचकर निकल जाना अधिक आसान है—इनक अपने दुष्कर्म से बचन की अप ता। य लोग तो अपनपिछल कर्मों स दूषित रहग पर तुम ता अष्ठ-कुल क हो। अब ता एक शुद्ध करने वाली पूजा की आवश्यकता है और तुम्हार कुटुब पर तो बरे लक्षता का जो छाया है उसका तो एक विशिष्ट पूजा म ही टाला जा सकता है।

जमीन्दार न पुराहित क चहरे को एकटक देखा जस उस विश्वास न आ रहा हा कि सूरजमनी एसी परिस्थिति को भी अपन हित क लिए प्रयाग कर सकता है। वह पुरोहित की चतुराई तो जानता था पर यह शुद्ध करन वाली पूजा का प्रस्ताव तो किसी नरक क देवता क मुख स आया लगता था। पन्िन सूरजमनी न जमीदार के शान्त मुख पर एक चोट खाई हुई निर्दोष छाया देखी। इसलिए उसन करुणा और सम्भावना का पाठ पढाने का प्रयत्न किया और कहा याद रखो कि हर पुरुष और स्त्री म दवी ज्योति होती है—चाह वह कितना ही छोटा हो और लोग अपन पिछल पापा का पर्याप्त दण्ड भागत हैं। निश्चय हा उन्हें दण्ड भोगन चाहिए क्योंकि इसम ही तो व अगल जन्म म उच्च जाति का पाएँगे या ईश्वर को पहचानेंगे। मन्दिर उन्हें धर्म सिखाना है। पर व ईश्वर के निवास-स्थान क भीतर नहीं जा सकते। मैं उन्हें कभी नही जान दूगा। लकिन य धम की

रक्षा के हेतु जो उन्हें बधना से छुडाएगा मूवी भेंट बिना मंदिर की पूजा किए चढा सकते हैं। इनकी स्त्रियाँ बडी धर्म निष्ठ होती हैं और जो कुछ दे सकता हैं देती है। गाँव की शांति और सारी आत्माओं की उन्नति हम पर निर्भर है। कोई भी मूर्खतापूर्ण कार्य कलियुग का अंत और समाप्त ला सकता है। और उससे उन सबका अनिष्ट होगा जिनके ग्रह आपस में टकराएँगे।

जमींदार ठाकुरसिंह पुरोहित के इस चतुर तर्क को सुनकर और भी गुमसुम-सा हो गया। पर वह सूरजमनी को यह न कह सकता था कि वह छल कर रहा है।

अच्छा पण्डित जी जमींदार ने कहा। देखें आप धूलीसिंह के हठी लडके में कम निपटते है। वह आ गया आओ बेटा।

लछमन ने दोनों बुजुर्गों को हाथ जोडे और दुबका-सा आग को आ गया।

क्यों बेटा! पण्डित सूरजमनी ने कहना आरम्भ किया। तेरा चेहरा पीला है क्या बात है? कुछ देर रुककर फिर कहा सारे पाठ धर्म के सारे सिद्धांत जो मैंने तेरे पिता को सिखाए वह भूल चुका है। वह अब धन ओहदे और सरकार का दीवाना है। तेरा पिता लम्बरदार हो तो हो पर उसे ईश्वर के कोप और धार्मिक व्यक्तियों के शापों का तो डर होना चाहिए था।

लछमन ने पण्डित जी के आक्रमण से बचते हुए स्वीकार किया—पण्डित जी बूढे का दिमाग खराब हो गया है।

यह लडका तो अपनी छाछ को ही खट्टा बना सकता है। —सूरजमनी ने कहा।

साजनू जो लछमन के आ जाने पर वहीं आ गया था बात में बात जोडकर बोला पवित्र लम्बरदार तो दूसरों की बुद्धि से काम लेता है।'

पुरोहित ने जोर देकर कहा यदि वह धर्म के मार्ग से भटक रहा है तो लछमन और उसकी माँ को उसके घर में कोई स्थान न रहेगा।'

पण्डित जी मैं तो घर छोड दूगा। —लछमन ने सहमति से कहा।

'क्या कहता है ! जब मैंने समझाया तब क्या नहीं माना ?

जमादार ने सजनू को शात करते हुए कहा—

'बेटा—इसे मत छेड।'

पण्डित सूरजमनी ने कहा मैं तुम्हे एक या दूसरी बात करने की सलाह नहीं दे रहा हूं। हममें से हर एक अपने भाग्य को अपने कर्मों द्वारा बना रहा है। तुम अपना भविष्य चुन सकते हो और अपना मार्ग निर्णय कर सकते हो। निश्चय ही तुम्हे चमारों को दिखाना पडेगा कि वे सब तो अपने कर्मों द्वारा ही अभिशप्त हैं और हमारे बराबर नहीं हैं। मैं जानता हू तेरी मा तो ईश्वर की सच्ची भक्त है और वह तुम्हारे पिता को ठीक राह पर ले आएगी।

और हम तो अपने दोनों घरानों में होने वाले लगन की प्रतीक्षा में हैं। —जमींदार ठाकुरसिंह ने बात में ऐंठ लगाते हुए कहा।

दोनों लडकों ने यह सुनकर कुछ कृत्रिम नम्रता और कुछ विवाह के अप्रत्यक्ष बंधन का विचारकर अपने सर झुका लिए। यही—एक की बहन का दूसरे से गठजोड ही तो एक मूक सूत्र था जो उन दोनों को आपस में बांधता था।

वह घर मेरे लिए नहीं है। लछमन ने कहा और सिवा मा के मुझे वहां रोक कौन सकता है ? मैंने उससे बातचीत की है वह भी मानती है कि पिताजी हम सबको मुसीबत में डाल रहे हैं।

'अब तू अक्ल की बात कर रहा है। सजनू ने कहा।

मुसीबतें किसके लिए आई हैं ? पुरोहित ने कहा। तुम और तुम्हारी मां जब जो चाहे मन्दिर में रहने को आ सकते हैं—यदि घर पर किसी प्रकार का दुख हो। तुम्हारी मां मन्दिर के धर्मशाला वाले भाग को एक और कमरा दान देना चाहती है सो वह दे सकती है।

मैं सोचता हू कि आप समझते हैं कि मैं बुरा हूँ। पर जैसा कि आप कहते हैं कि उन चमारों को तो सबक देना ही है। सजनू ने कहा।

नछमन और मैं दोना अभी जाकर उनके कुटुबा से वहा से जाने के लिए वह सकते हैं क्योकि वह भूमि जहा उनकी झोपडियाँ पडी हैं हमारे घरानो की सपत्ति हो तो है।

पुरोहित न उत्तर दिया पर उनकी औरता की चीख-पुकार तुम्हारे सिर पर अनिष्ट ल आए शायद। निश्चय ही यदि तुम अपन निणय के औचित्य के वारे म सतुष्ट हो तो तुम जो चाहो वह दड उन चमारा को दे सकते हो। भगवान कृष्ण ने भी तो अजुन का युद्ध के लिए अनुमति दी थी—यदि वह न्याय क लिए हो।

इसका फसला तो हम ही करना है। जमीदार ठाकुरसिह ने कहा।

पण्डित सूरजमनी और ठाकुरसिह न दोना नौजवाना को रोका नही चाह उन्होने कोई सीधी कायवाही करन का वचन भी नही दिया। सत्य तो यह है कि उस समय पण्डित जी ने एक क्षण क लिए अपनी आँखें बद कर ली और सावधान करत हुए कहा शाति शाति शाति।

इस पर जमीदार ठाकुरसिह न आधे मन और ढील-ढाले स्वर म जरा जोर स कहा— लडको कोई काम जल्दबाजी म मतकर बठना।

पीपल के पेड म से गुजरते हुए हवा क भाव एक खुनी भट्टी स निकली झुलसाने वाला लपटा क थपेड स लग रह थ और पण्डित सूरजमनी छाया का और दोपहरी म पड़े आराम का महत्त्व भली भाति समझते थे। ज रामजी की। पण्डितजी न जमीदार स कहा और वहाँ स चल दिए।

पण्डित जी मैं तो घर छोड़ दूगा। —लछमन ने सहमति से कहा।

क्या कहता है ! जब मैंने समझाया तब क्यो नही माना ?

जमीदार न सजनू को शात करते हुए कहा—

बेटा—इसे मत छेड़।

पण्डित सूरजमनी ने कहा मैं तुम्हें एक या दूसरी बात करने की सलाह नही दे रहा हूं। हममे से हर एक अपने भाग्य को अपने कर्मों द्वारा बना रहा है। तुम अपना भविष्य चुन सकते हो और अपना मार्ग निर्णय कर सकते हो। निश्चय ही तुम्हें चमारों को सिखाना पड़ेगा कि वे सब तो अपने कर्मों द्वारा ही अभिशप्त हैं और हमारे बराबर नहीं हैं। मैं जानता हूं तेरी माँ तो ईश्वर की सच्ची भक्त है और वह तुम्हारे पिता को ठीक राह पर न आएगी।

और हम तो अपने दोनों घरानों में होने वाले जनन की प्रतीक्षा में हैं। —जमीदार ठाकुरसिंह ने बात में ऐड लगाते हुए कहा।

दोनों लड़कों ने यह सुनकर कुछ कृत्रिम नम्रता और कुछ विवाह के अप्रत्यक्ष बंधन का विचारकर अपने सर झुका लिए। यही—एक की बहन का दूसरे से गठजोड़ ही तो एक मूक सूत्र था जो उन दोनों को आपस में बांधता था।

वह घर मेरे लिए नहीं है। लछमन ने कहा और सिवा माँ के मुझे वहां रोक कौन सकता है ? मैंने उससे बातचीत की है वह भी मानता है कि पिताजी हम सबको मुसीबत में डाल रहे हैं।

अब तू अक्ल की बात कर रहा है। सजनू ने कहा।

मुसीबतें किसके लिए आ रही हैं ? पुरोहित ने कहा। तुम और तुम्हारी माँ जब जी चाहे मन्दिर में रहने को आ सकते हैं—यदि घर पर किसी प्रकार का दुःख हो। तुम्हारी माँ मन्दिर के धर्मशाला वाले भाग को एक और कमरा दान देना चाहती है सो वह दे सकती है।

मैं सोचता हूं कि आप समझते हैं कि मैं बुरा हूं। पर जैसा कि आप कहते हैं कि उन चमारों को तो सबक देना ही है। सजनू ने कहा।

'लछमन और मैं दोना अभी जाकर उनके कुटुवा से वहाँ से जाने के लिए कह सकते हैं क्याकि वह भूमि जहा उनकी झोपडिया पडी हैं, हमारे घरानो की सपत्ति ही ता है।

पुरोहित ने उत्तर दिया पर उनकी औरता की चीख-पुकार तुम्हारे सिर पर अनिष्ट ले आए शायद। निश्चय ही यदि तुम अपने निणय के औचित्य क बारे म सतुष्ट हो तो तुम जो चाहो वह द ड उन चमारा को दे सकत हा। भगवान कृष्ण ने भी तो अजुन का युद्ध के लिए अनुमति दी थी—यदि वह याय क लिए हो।

'इसका फसला ता हम ही करना है। जमीदार ठाकुरसिह न कहा।

प न्ति सूरजमनी और ठाकुरसिह न दोना नौजवाना का रोका नहीं यद्यपि उन्होंने कोई सीधी कायवाही करन का वचन भी नहीं दिया। सत्य ता यह है कि उस समय प डित जी न एक क्षण क लिए अपनी आँखें बद कर लीं और सावधान करत हुए कहा शाति शाति शाति'

इस पर जमींदार ठाकुरसिह न आधे मन और हीन-भाव स्वर में जरा जोर से कहा— लडका काइ काम जल्दबाजी म मतकर बठना।"

पीपल क पड म स गुजरत हुए हवा क झोंके एक [illegible] निकली भुनसान वाली लपटों क थपड म लग रह थ और [illegible] सूरजमनी छाया का और दोपहरा म पहल आगम का [illegible] समभत थ। ज रामजी की। प न्तिजी न जमींदार [illegible] वहाँ से चल दिए।

पाँच

भिक्खू की माँ लछमा शिव की पत्नी काली की मूर्ति के पास सबसे निचली सीढ़ी पर बैठी थी। उसका चेहरा निश्चल था। उसकी आँखें उन लपकती हुई लपटों को टकटकी लगाकर देख रही थीं जो फूस के छतों से उठ रहा था। उन्हीं के बीच तो उसकी एक कमरे की झोंपड़ी अछूत चमारों के छः दूसरे टूटे-फूटे घरों के बीच में कभी खड़ी थी। उसके शरीर पर पसीना-सा आ गया जब उसने दो कबूतरों को अपने घोंसले से उड़ते हुए देखा—और फिर उनको जलकर गिरते हुए भी। आग अपने आँचल में उसके घर के चौक के अंदर उगे नीम के पेड़ को लपेटने लगी। हर बार लपटों के और ऊँचा उठने के साथ वह उस लाल देवी की ओर मुड़ जाती—अपने शीश को अपने हाथों पर झुकाए पर देवी अपनी बाहर निकलती हुई लाल जीभ के साथ सब कुछ बस देखती रही। काले कोयले के रंग के पत्थर में खुदी हुई वह मूर्ति। शायद क्योंकि वह लहू की भेंट की आदी थी—उसे कुछ चिंता न थी पर लछमी अब भी किसी चमत्कार की आस में बैठी रही।

बूढ़ी लछमा को अन्याय और आश्चर्य ने मूक-सा बना दिया और वह सुन्न-सी हो गई पर फिर भी उसे अपनी जाति की औरतों की इक्का-दुक्का बातें सुनाई दे रही थीं जो उससे नीचे बैठी थीं—आपस में गुत्थमगुत्था सी। उनके बच्चे डर और प्यास से चिल्ला रहे थे और अपनी माँओं के सिर के पल्लू अंगिया और कमीजों को खींच

रहे थे। लक्ष्मी यह सब देख और सुनकर और भी गिड़गिड़ाकर आर्द्र-स्वर में प्रार्थना करती मां हमारी रक्षा करो—मां! लेकिन ज्यों ही लपटों ने नीम के पेड़ को जलाना शुरू किया और कबूतर मर कर जमीन पर गिर पड़े तो औरतों का रोना चीत्कारों का एक सामूहिक स्वर बन गया और लक्ष्मी अपने अनुयायियों की भयानक विपत्ति के प्रति जागरूक हो गई। उनकी धर्म गुरू होने के कारण उसने देवी के आगे साष्टांग दण्डवत्कर उससे उनकी आग से मुक्ति के लिए प्रार्थना की और जैसे ही औरतों के चीत्कार ने उसकी आंखों के सबसे दुर्बल भाग को स्पर्श किया वे अश्रुबिंदु जो बाहर आने को मना कर रहे थे उसकी आंखों में छलक पड़े। वह मन्दिर में हजार बार आई थी। उसे अपनी भक्ति की गहराई में पूर्ण विश्वास था इसलिए उसे यह भी भरोसा था कि देवी उसके बेटे और उसकी बिरादरी की अवश्य रक्षा करेगी।

उसके बेटे ने उसकी इस अंधी भक्ति की कई बार हंसी उड़ाई पर फिर भी वह अपनी श्रद्धापूर्ण स्वप्निल आस को वहीं छोड़ती थी। वह उस विकराल देवी को मिठाई तेल और भोजन में जो गांव के आवारा कुत्तों को डाल दिया जाता था प्रसन्न करने का प्रयत्न करती और कभी-कभी काली के नाग मुंह में दूध भी डाल देती। पर इस हताश अवस्था में जब उसने अपने आपको देवी के चरणों पर समर्पित कर दिया था देवी बिल्कुल निश्चल थी। लपटें अब भी झोंपड़ियों से आकाश की ओर लपक रही थीं—चिरमिर करती। चटख और प्रकाश था उनमें और सिरों पर यह काली काली लपटें थीं। सब कुछ उनके शरीर से लिपटकर राख हुआ जाता था। शायद काली माई इसलिए रुष्ट थी कि सूर्यास्त का यह समय तो वह था जब लक्ष्मी को माई के चरणों में दीप जलाना था और जिस जलाने में लक्ष्मी को आज देर हो गई बल्कि पिछले कई दिनों से देर हो रही थी। इसलिए ही काली ने झोंपड़ियों को जलाकर एक विशाल दीप सजा लिया था जिसके प्रकाश में वह अपने स्वर्ग-स्थान को

जा सके।

अपनी भूल के इस अन्तर्ज्ञान पर और उस दण्ड का विचारकर जो उसे इसके फलस्वरूप मिला लक्ष्मी कह उठी हाय माँ तूने हम क्या त्याग दिया है? हम पर दयाकर। इन औरतो और बच्चों को जो रो रहे हैं एक नजर तो देख माँ!'—

पर काली मा ने जो अब काले धुएं के पिशाचो में परिवर्तित हो गई प्रतीत होती थी और नाचती और उडती हुई आकाश से ऊपर चली जा रही थी उत्तर दिया—

मैं तुम सब को भस्म कर दूगी जैसे कि उन पक्षियों का किया है। तुम्हें श्रेष्ठ कुल वालो का विरोध करने का दण्ड भुगतना पड़ेगा। मैं तुम्हे तब तक जलाती रहूँगी जब तक कि तुम्हारी आत्माएं राख में मे पृथ्वी की आँतो में न उतर जाए और तुम्हारे पुत्र और दूसरे नन्हें के दुष्कर्मों के फल का उचित दण्ड न भोगें और जब तुम काफी दुख भग चुकोगे बिच्छु और साप तुम्हें डस चुकेंगे दानव राहु का गम सलाखा का शरीर पर लगाएँगे तब निकासन की भ्यान में तुम्हें कुचला जा चुकेगा तब मैं एक काले पक्षि की तरह आऊँगी और तुम्हारी आत्मा को प्रेता की तरह जागने के लिए पुकारूगी। तुम जिन वन जाओगे और भूख अभाव-सन्तप्त और अभिशप्त गाँव के वायुमण्डल में मण्डराते रहोगे।

रात और आँसुओ के इस पाशिव और आनिष्टमय वातावरण में भिक्खु की माँ की एक चीख निकल गई— हाय-हाय मेरी बकरी तो बची रह गई। और मन बहकर उसने अपना माथा पीट लिया। एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसका शरीर काँप गया और वह वहीं ढेर होकर गिर पड़ी। वह पागल पड़ गई थी और उसके मुह से झाग निकल रहे थे। उसकी चीख सुनकर जोर की थी कि और औरतों ने अपना कराहना बन्द कर दिया और उसको चक्कर खाकर गिरते देख वे सब उसके चारों ओर जमा हो गई।

'इसके पास भीड़ जमाकर, उसका दम न घोटो।' भिक्खु ने कहा, 'उसे कुछ हवा लगने दो।' और वहां वह अपनी मां की देखभाल के लिए रुकने या बकरी को बचाने के मानसिक संघर्ष में ग्रस्त खड़ा था। पशु का मूल्य उससे भी अधिक था—उसकी मां की दृष्टि में क्योंकि उसके दूध को बेचकर ही तो अम्मा रोटियों का गुजारा करती थी। फिर वह बकरी को बचाने के प्रयत्न में जो खतरा था उसके बारे में भी सोचता था। लपटें धुएं के बादलों में से चक्कर लगाकर ऊपर उठ रही थीं और उस चौक में बिल्कुल अंधा सा बनकर पैर रखना होगा। फिर यदि बकरी हाथ से जाती रही तो मां की लगातार सिसकने की आवाज उसके कानों में गूंज उठी। वह सहजभाव से अपनी मां की ओर ही आ गया और उसने उसके सांस के आने-जाने की आवाज सुनी। फिर वह अपनी मां के झोंपड़े के गांव के चौक वाले सिरे की ओर चला गया और परिस्थिति को समझने का प्रयत्न किया। धुएं के बादल और गाढ़े हो गए थे और झोंपड़ियों के बीच छोटे चौक पर मंडरा रहे थे। केवल नीम के पेड़ की हरी पत्तियां लपटों की मशालों के समक्ष चमक रही थीं—वे लपटें जो छतों से आकाश की ओर जा रही थीं। उसने जरा कान लगाकर सुनना चाहा कि बकरी अभी मैं मैं कर रही है और जिन्दा है या कि नहीं। कोई आवाज सुनाई न दी। उसकी रग रग आप-ही आप कांपने लगी और वह एक ओर झुक गया। वह कांप गया जैसे कि अपनी इच्छा-शक्ति को ललकार रहा हो। उसी क्षण—इससे पहले कि वह कमजोर हो जाय—उसने स्वच्छ हवा में एक गहरा श्वास भरा और फिर सांस रोककर वह धुएं से भरी गली के खुले भाग में घुस गया। धुएं ने उसके नथनों, सिर और गले पर आक्रमण किया। वह दस गज ही भाग गया होगा। उसने अपनी आंखों को बन्द कर लिया। अब वह चौक में था। जैसे ही झोंपड़ियों के फूस का सूखा भाग चटककर जली और उसने लपटों को देखा—पल भर के लिए चौक में पर्याप्त प्रकाश हो गया था। उसने देखा बकरी वहां पीपल के नीचे, जहां वह साधारणतया

रस्सी से बाँधी जाती थी—पडी है। वह मत प्रतीत होता थी। उसने सोचा मत बकरी को बचाने के लिए उसने व्यर्थ यहाँ आने का कष्ट किया। अपने जीवन के प्रति प्राकृतिक प्रेम ने उसको आ दबोचा और उसे अपने पर शर्म-सी आई कि क्या वह अपनी माँ की भिड़कियों के डर से यहाँ आ गया। लेकिन क्योंकि अब वह यहाँ आ गया था उसने सोचा कि क्या न बकरी जिन्दा हो या मरी उसे बाहर ले चलूँ। वह तेजी से रस्सी की तरफ लपका और अपनी फुर्तीली उंगलियों से उस गाँठ को खोला जिससे बकरी का गला रस्सी से बंधा था। फिर उसने पशु को उठा लिया। उसकी अगली टाँगें एक हाथ में और पिछली दूसरे में और बकरी को अपने कंधों पर डाल लिया। अन्त में वह लम्बी साँस में घुटन लिए और जब सिर चकरा रहा था वह मृत शरीर को लेकर जिस मार्ग से आया था उसी ओर भाग पड़ा। हर ओर धुआँ और भी गाढ़ा हो चुका था और उसमें गर्मी भी पहले से अधिक थी।

भिक्खु ने निश्चय किया कि वह चिनगारियों की चुभन और धुएं की आवाज करती हुई और झनझनाते बाल दुर्गंध को सहेगा—धैर्य और आत्म-बल के उस अवलोप कोष की सहायता से जिससे उसने आज तक अपने लक्ष्य को प्राप्त किया है। पर हृदय के किसी कोने में वह जीवन के लिए और मृत्यु के विरुद्ध भिन्न माँग रहा था और यह विश्वास कर कि उसकी प्रार्थनाओं ने ही उसे बचाया है उसने फिर स्वच्छ वायु में साँस लिया। जैसे ही वह गाँव के चौक में दोबारा दिखाई दिया बाबू शिवराम और बापू उसका इन्तजार कर रहे थे। नटखट बच्चे उनके साथ थे। हाय-हाय बकरी। बच्चे चिल्लाए। बुढ़िया इस भूल गई थी।

बाबू ने भिक्खु को बाहों में जकड़ लिया।

चल हट। भिक्खु ने कहा मैं यह मूल्यवान बकरी माँ को देने जा रहा हूँ—वह तो बकरी को लेना चाहेगी चाहे मेरी जान चली जाय।

उधर बुढ़िया अम्मा अपने लड़के के सत्तर को जान गई थी जब

उसे औरतों से पता चला कि वह बकरी को बचाने चल दिया है।

वह अपने बेटे की ओर चल दी। भिक्खु ने अपनी धुंधली आँखों का खोला और मृत बकरी को अपनी माँ के आगे पटक दिया। उसने कहा यह ले अपनी अनाखी बकरा—इसने अपने बोझ से मुझे ही मार दिया होता और यदि थोड़ा देर और हो जाती तो मैं वापिस भी नहीं आता।

मेरे बेटे—मेरे लाल—तू मुझसे पूछ बिना क्यों चला गया? मैं तो तुझ पर हजारों बकरियाँ न्योछावर कर देती। लक्ष्मी ने भावावेश में कहा—चाहे वह बहुत-बहुत वह उस मृत बकरी को प्यार कर रही थी। भिक्खु तो इस कठिन परीक्षा से सहम गया था। वह चक्कर खाकर गिर पड़ा।

मैं मरा नहीं हूँ माँ—मुझे बस एक घूट पानी दे दे।' भिक्खु ने बेसब्री से कहा।

मैं धूलीसिंह के घर से अभी ले आता हूँ। बाबू बोला।

लक्ष्मी के शरीर के सारे तंत अप्रत्यक्ष पीड़ाओं से काँप रहे थे। अपने और अपनी साथिनों के अभिशप्त विजातीय होने के नाते वे काली माँ का निर्णय स्वीकार कर रहे थे।

ईश्वर दया करे। —धूलीसिंह ने कहा। भगवान उन पर कृपा करे।

'तू शूद्र ही हमारे अनिष्ट का कारण है। भिक्खु की माँ ने लम्बरदार पर अपराध लगाया। माँ को रोकने का प्रयत्न करते हुए भिक्खु ने कहा— माँ!

नहीं-नहीं। धूलीसिंह ने भिक्खु का हाथ उठाकर शांत करते हुए कहा। 'यह सत्य कह रहा है। पर ऐसा किया किसने? आग किसने लगाई?

जो औरतें सामने खड़ी थीं उन्होंने ठाकुरसिंह के घर की ओर

अस्पष्ट इशारे किए। वे अब नही रो रही थीं क्योकि जो उनकी समझ मे न आता था वह वे भाग्य पर छोड दती थी। मुर्गे की आँख वाले दयाराम का लडका किशार चटपट बोल उठा चाचा—लछमन और सजनू न भिक्खु क घर क पीछे भूस के ढर लगाए और उन्ह आग लगा दी। लछमन और सजनू ने मुझे पीटने की भी धमकी दी थी अगर मैं यह भेद खोल दू तो।

हैं! —धूलीसिंह छोट से बच्चे की बक्वास को गभीरता स न ल सका। किसने किया ? वह जोर स चिल्लाया।

छोट बच्चेन दोहराया लछमन और सजनू ने!

धूलीसिंह खडा-खडा अपनी मोटी नाक म धुआँ सूघ रहा था— उसकी आँखो म आसू छलक पडे और भावातिरेक म वह भिक्खु की माँ के चरणो पर झुक पडा—यह कहत हुए— मा मुझे क्षमाकर दो—यह सब मरा ही दोप है।

छ

श्रेष्ठ जाति हिंदू के इस भाव प्रदर्शन पर भिक्खु की माँ की आँखों से आँसू ढुलक पड़े और उसके गले में सिसकियाँ बंध गई। बेटा मेरी सारी प्रार्थनाएं मेरे खेत के काँटों में मरकर रह गई हैं।"

भिक्खु गंभीर खड़ा था बोलने की इच्छा न थी पर अब वह उस कोमल दृश्य को धुंधलाई आँखों से देख मुँह मोड़ चुका था और लपटों पर से उठने वाले धुएं के बारे में सोच रहा था। वह मजबूत ईमानदार पर शांत व्यक्ति था और आत्मा में इतना पवित्र कि किसी को घृणा न कर सके। वह उच्च जाति वालों द्वारा की गई हिंसा और अन्याय सहन का बहुत आदी हो चुका था—बिना विरोध के। उसे बस यह आशा थी कि परिश्रम और अधिक परिश्रम से उसे मुक्ति मिल जाएगी पर कब यह वह न जानता था।

जो गिरे हुओं के सिरों पर चढ़ेगा वह अवश्य ही गिरेगा' उसने कड़वाहट से कहा।

वह हरामजादा मेरा बेटा लक्ष्मन! धूलीसिंह दहाड़ा। 'वह घर में कभी कदम न रख सकेगा। चला जाय वह ठाकुरसिंह के घर। धूल चाटे वहाँ की। अपने साथी मजनू के पास जिसकी गुलामी का जहूनियत है। गुस्ताख लड़का कहीं का। मैं इस लड़के को सबक सिखाऊँगा।

"सबरदार तुम्हारा भी घर वहीं है? भिक्खु की माँ ने कहा। 'तुम्हारी घरवाली घर से चली गई है और उसने पंडित सूरजमल के

मंदिर में शरण ले ली है—और लछमन अपनी होने वाली दुल्हन को तुमसे अपने अधिक निकट समझता है।

शिवजी का कोप गिरे इन पर! धूलीसिंह ने कहा। मैं वहाँ स्वयं ही नहीं जाऊंगा। और वह वहीं खड़ा रहा। गुस्से से उसका चेहरा और लाल होता जा रहा था।

'आओ—मेरे सारे बेटो आओ। हम सब यहां रहेंगे और काम करेंगे। आओ और जो मेरे घर में है सब उठा लो। हम रात को भूमि पर सोएँगे और कल मैं गुड़गाँवें जाऊंगा और सरकार से इतना रुपया ले आऊंगा जिससे यहाँ की झोंपड़ियाँ बन सकें।

बन—बन! बाबू ने हलके से कहा—अपना विरोध मन ही-मन दबाते हुए। उसका चेहरा लाल था।

उन अछूतों की जिनके घर-बार को उसके नन्हे और सजनू ने जला दिया था सहायता की प्रतिज्ञा करने के बाद भी उन अभिशप्त आत्माओं की पीड़ा का बोझ उसके सर पर था। साथ-साथ हिंदू धर्म का बोझ भी जो उसके जन्म का धर्म था।

उसने कभी न सोचा था कि जाति-पाँति के वे नियम जिनका पालन वह करता आया था एक दिन यह विपत्ति लाएंगे क्योंकि रीति या रिवाज को वह एेसे मानता आया था जैसे कि अछूत अपनी गिरी हुई अवस्था को और यद्यपि वह अपनी उच्च जाति में जो उसका स्थान था उसको न छोड़ सकता था उसके हृदय में अपने बच्चे के द्वारा घरों में आग लगाने के अपराध को स्वीकार करने की भावना थी। साथ साथ सब अपना दोष कि वह अछूतों को सड़क पर काम करने के लिए तत्पर चल पड़ा था जिससे यह विकट अवस्था पहुँची थी। वह देख रहा था—बाबू का क्रोध से धमकता हुआ चेहरा जो उसी की निन्दा में देख रहा था।

उसका घर खाली था जैसे ही वह वहाँ पहुँचा। बस पशुओं की डकार सुनाई देती थी। उसे अपने अकेलेपन में और भी उजाड़-सा

मालूम हुआ क्योंकि वह जानता था कि वह पंचायत या बिरादरी के पास सहानुभूति के लिए न जा सकता था। उसने दालान के पास खड़ी चारपाई को बिछाया और उस पर बैठ गया। फिर उसने अपने आपको मूक-सा अनुभव किया। वहां बैठे बैठे और अचेतन अवस्था में वह हुक्का तलाश करने लगा जो कि उसकी पत्नी रोज ले आती थी जब वह घर वापिस आता था। पर तुरंत ही अपने घर से बाहर गली में अपने पीछे चलने वालों की उपस्थिति का उसे विचार आया—अछूत औरतों के रोने कराहने और चीखने का। वे सब उसको नर्क के वासी मालूम हुए जिन्हें उनके पिछले पापों की सजा दी जा रही हो।

उसकी मानसिक प्रतिक्रिया पहले तो चिढ़ने की हुई क्योंकि उसे किसी का दुख में रोना अच्छा न लगता था। 'बस अब चुप करो।' वह दरवाजे पर आकर चिल्लाया। पर जैसे ही उसने उनको अपनी ड्योढ़ी पर रेंगते हुए देखा उसके हृदय में अपने प्रति ही ग्लानि भर गई। क्योंकि वे सब वही तो थे जिनका वह देनदार था। जिनका घर बार लुट जाने की क्षति उसे पूरी करनी थी।

औरतों ने नम्रता से अपनी निगाह नीची कर ली और जल्दी से अपने चेहरे घूंघट से ढक लिए। वे उसमें टूटे फूटे गानों में प्रार्थना कर रही थीं और बच्चे दूध के लिए चीख रहे थे जब कि लड़के खड़े थे या नाक में पीछे बैठे थे।'

स्त्रियों के रोने की आवाज में बसी करुणा और उनके दुख की असह्य अवस्था ने उसे पागल-सा बना दिया और उसने चिल्लाने के लिए अपना मुंह खोला। तब उसने देखा कि भिक्खु ने उस सारे दृश्य में मुंह फेर लिया है और अचानक उसे उस लड़के पर दया-सी आ गई जिसकी दशा उससे भी बुरी होगी। उसने आवेश में कहा—

अब सब घर जाओ—घर में चले जाओ।

वह भगवान की चली तो अपने उचित स्थान को चला गई—मन्दिर को। वह दुष्ट लक्ष्मण मेरा लड़का ही नहीं है। मैं भी हमेशा के

लिए जाति से निकल गया। इसलिए यह घर तुम्हारा है आओ मेरे बेटे बटियो। यह कहकर उसने घर का दरवाजा पूरा खोल दिया। उसने एक विशालकाय देव की तरह लंबे-लंबे डग भरे और अपनी अनाज की मुख्य कोठरी की ओर आया जैसे कि कोई हृदय के भीतर रोप का ज्वालामुखी फटना चाहता हो। एक क्षण उसने कोठरी के अंधियारे में इधर उधर देखा—उसकी आंखें अंधेरे में देखने की आदी थी। उसे अपना घरवाली की कमीज और सर का कपड़ा एक खूंटी पर टंगा नजर आ गया—उसने उन कपड़ों को झपटकर उठा लिया और वह काफी तेजी से दौड़कर दरवाजे पर पहुँचा क्योंकि अछूत घर में न आए थे। आओ—और इन्हें ले लो। उसने पुकारकर कहा और उसने कपड़े औरतों की ओर उछाल दिए। अब उसके मन को शांति हुई। उसने अपना सदूक खोला और अपने मोटे हाथों में कपड़ों को उठाकर वह कोठरी में से बाहर भागा—जैसे रास्ते में चोरी करने वाला कोई लुटेरा हो।

वह फिर वापिस आया। कपड़े जैसे तैसे उठाए और गोदी में भर भरकर गली में उछाल दिए। उसका दिल ढोल की तरह बजने लगा पर वह कपड़े फेंकता गया जब तक कि संदूक खाली न हो गया। आओ आओ मेरे बेटे बेटियो—आओ सब कुछ तुम्हारा है—अब मुझे अपने पाप धोने के लिए गंगा जाने की आवश्यकता नहीं। आओ—जो जो तुम्हारा खाया है वह यहीं ले लो। लड़कों के लिए तो कुछ नहीं पर औरतों के लिए काफी है। वह कह रहा था और उसकी सांस फूलती था। वह चिल्लाया तुम मुझे खा लो—मैं सजा के योग्य अपराधी हूँ। मैं अपने जन्म के धर्म से दूषित हूँ। तुम चाहो तो मेरा भोजन बना लो। और जैसे ही उसने ये शब्द कहे उसकी आंखों से आंसू लुढ़ककर चेहरे की रेखाओं पर आ गिरे उसकी मोटी नाक की झुर्रियों की नालियों में बह गए और वह सिर लटकाए चारपाई पर बैठ गया।

सात

सूय डूब चुका था और नाम का अधियारा सता पर फलता जा रहा था। भिक्ख धूलीसिंह की जमीन की ओर अपन साथिया सहित चुपक चुपके जा रहा था। वह और लडको स थाडा और अलग हो गया और उन पत्थरा क ढेर पर बठ गया जो उसन उस दिन तोडे थे। वह गाँव के बाहर था। उसन अनुभव किया कि यह जमीन उसकी भी उतनी ही थी जितनी कि हिंदुओ म स किसी की भी क्योंकि वह उसको बिना दूषित किए हुए बठ सकता था।

यह वही पृथ्वी थी जिस पर वह बचपन म खेला काम किया और जिस पर वह युवावस्था तक पहुँचा। ऐसी पृथ्वी स सपक-मात्र बडा विश्वासोत्पादक था। पर फिर उसे यह काटने वाला विचार आया कि इस सवण हिंदुओं द्वारा अछूता पर लादी गई लडाई म उसका इस पृथ्वी स सबध टूट गया। इस विचार से उसक कान लाल हो गए और उसकी नसें ऐसी उत्तजित सना की पक्तियाँ बन गइ जो विद्रोह की भावना स उत्तजित हो।

उसन लज्जा और हार क अध-पतन का भावना से सिर झुका लिया। वह अपने साथियो की आँख स आँख न मिला सकता था पर फिर उसकी दृष्टि अपनी नाक से परे चली ही गई और झाडी पर टिक गई। भूरे रंग की छिपकली वहाँ ताक म बठी थी—सूखत हुए गोबर पर बठी हुई मक्खियो क झुण्ड को खान के लिए। छिपकली न अपना सिर ऊपर उठा लिया था और अपने मुह को नीच से आक्रमण करने

को बिल्कुल तयारकर रखा था। बस एक बार एक मक्खी एक क्षण के लिए बठ भर जाय। वह छिपकली वार करेगी और मक्खी का निगल जाएगी। पर भिनभिनाती हुई मक्खियां खतरे स अनभिज्ञ थी।

भिक्खु की विचार-व्यवस्था गडबड थी। उस इस समय व सब अपमान क क्षण याद आ गए जो उसने आज स पहले जब तक उन्होंने उनकी झोपडिया म आग भी न लगाई—बिताए थे। हमशा सजनू और लछमन ने उसस तरह-तरह क नाच नाम कराए थाह व सब साथ साथ खेलते थ। वह तो उनका एक भूमि रहित चमार नौकर था। पडित सूरजमना न एक बार उस वचन दिया था कि वह उसको मन्दिर क स्कूल म दाखिल कर लेगा यदि वह आए और उस पवित्र आँगन क बाहर ही बठा-बठा पाठ दोहराता रह। इसलिए उस पढना लिखना सीखन क लिए दो मील दूर शिवालपुर गाँव जाना पडा। वहाँ उसका अछूत भाई डण्डाराम जो स्वय भी एक छोटा मोटा कवि था उसे पढाता था। वास्तव म डण्डाराम न भिक्खु का भी एक कवि बना दिया था जब कि जमींदार और तबरदार क लम्बे बीस तक गिनती भी न गिन सकत थ। पर व सब तो गगन धरा क इतन समीप थे जितना कि अब वह कभी न हो सकता था। उसका घर ही यहाँ था अब ? रुक्मणी का मूर्ति उसकी आँखो क सामन हमशा एक घूमती हुई फिरकी की तरह धधली-सी नजर आती क्योंकि वह उसको अपन हृदय क दपण म देखने का भी साहस न कर सका था—इस आशा म कि वह उस नही छू सकता है। डण्डाराम न भिक्खु को बताया था कि रामायण और महाभारत क युग स बहुत पहले भी यहाँ एक युद्ध हुआ था जिसम उच्च जाति हार जाती थी और अब कोई आस न थी—सिवाय इसक कि धूली मिट्टी उनको मान्यता करन पर तुला था—इस बात पर कि व भी कुछ करन को तयार हुआ।

लो ! वह आ रहा है पकौशा नाक वाला—अब कुछ नष्ट होने क बाद राजा हुआ। —बाबू न कडवाहट स कहा।

चल मूभर' —'दारय न बापू को फटकारा।

एक आँख वाले गिवराम न लवरदार की ओर अपनी नजर डाली, जस वह उसे एक पाप-पूण राचकता स देखना चाह रहा हा।

बूढा बापू और गरावी गकर उकड़ू और सहमे-स बठे रह और उन्होंने अपनी आदत के अनुसार हा लवरदार का हाथ जाड लिए।

लडका अब चल आओ —धूर्तासिंह न कहा। हमारे पास और अधिक समय नहीं है। रात को गरण लन क लिए हम कुछ-न-कुछ तो बनाना हा है। मैंन औरतों को एक पुराना कनात द दा है जा व अपन माथ ला रही हैं। गिवराम गकर—तुम जाकर चार बास ता ल आओ। वे मेरे घर क बाहर गली म पडे हैं।

भिक्खु न धूलीसिंह का कृतघ्नता मे देखा। फिर उसन अपनी आखों म भर आमुओ से अपना ध्यान हटाकर उन दो लडको की ओर देखा जो गाँव की ओर चल जा रहे थे।

धूर्तासिंह समझ गया कि हट्टा-कट्टा भिक्खु भी विपत्ति से झुक गया है। उसने कहा—

इन मूख नागो क कम देखकर भक्त कबीर रो दिए?

जो जी चाह कहो —बापू ने ताना देते हुए कहा। लेकिन तुम तो उन्हीं म से हो।

उनके पाप तो धुल जाएँगे हमारे ही पादिया तक चलते हैं। भिक्खु न कहा।

धूलीसिंह न अपने मुह म भागो का विनाद हुआ और अपनी मूछो क नीचे दाढ़ी को थामते हुए कहा—

यह तुम क्या कहते हो? उनके और हमारे की बात क्यों? जैसे व सडक न चाहते हो और हम चाहते हैं। व भी सडक बनाना चाहते थ। बस व य नहीं चाहते कि तुम काम करो और रोजी कमाओ। और सारी बातें झूठ हैं। मैं उनमें से उतना ही अधिक या कम हूँ जितना कि तुम। जब धन का प्रश्न आता है हम इतना अवश्य कमाना

पडता है कि भूख और अकाल से अपनी जीवन रक्षा कर सकें। मैं तो नए धर्म का अर्थ यह ही समझा हूं। प्रार्थनाएं बेकार हैं। सोचो तो एक मेरे जैसा किसान जिसके पास दस एकड भूमि है कितना कमाता है? यह जमीन पर काम करना कितना कठिन कार्य है। हम नंगपन को अपनी धन रहित अवस्था की नग्न सत्यता को देखना चाहिए। हमारे देश में तो भगवान को भी रोटी के रूप में ही साकार अवतरित होना चाहिए।

जमींदार ठाकुर सिंह के पास तुमसे अधिक संपत्ति है —बापू ने कहा।

यही कारण है कि उसके और मेरे बेटे ने तुम्हारे घरों को आग लगा दी। —धूलीसिंह ने उत्तर दिया।

निश्चय ही। —बापू बोला।

धूलीसिंह चुपचाप बैठा रहा इस आशा में कि भिक्खु जान जाएगा कि वह क्या करना चाहता है। पर अछूतों का नेता भिक्खु तो बिना ध्वनि किए साँस ले रहा था। वह उस डूबते सूरज के बारे में सोच रहा था जो लाल और नारंगी रंग की पृष्ठभूमि से उभर रहा था—जैसे आकाश के सिरे पर किसी कत्ल के बाद।

आखिर नंबरदार उठा और उसने धीमी आवाज में कहा—

हम कुछ शरण-स्थान टहनियों और चटाइयों से बनाते हैं। इसलिए हम यहां बेकार सोचते हुए न बैठे रहें।

अच्छा —भिक्खु अपने कंधे मारते हुए बोला। फिर उसने अपनी बाँहें फैलाईं और उठ गया।

उसने कहा— सब कुछ जलकर राख हो गया! सब कुछ सिवाय इन हाथों के।

धूलीसिंह ने अपनी मोटी नाक हिलाकर सहमति प्रकट की और अपना हाथ भिक्खु के कंधे पर हल्के से रख दिया।

आठ

घूनीसिह की घरवाली सप्ति और उसकी लड़की माला मदिर के भीतर मूर्ति के चारो ओर अंधेरे मे परिक्रमा कर चुकी थीं। फिर उन्होंने विष्णु भगवान की प्रतिमा को हाथ जोड पडित सूरजमनी को नमस्कार किया और वापिस लौटने लगी।

मेरा सिर तो बार-बार परिक्रमा करने स चकरान लगता है — सप्ति न कहा।

'लेकिन तुम यहा आना जो चाहती थी।' —माला न अपनी मा का हाथ पकडकर बाहर की ओर ल जाते हुए कहा।

सफेद धुआं घरो की छतो पर स उड रहा था और छोटी छोटी लपटें पिशाचो की तरह चौक मे से रह रहकर ऊपर को उठ रही थी।

'शीघ्र ही हम घर पहुँच जाएँगे' —माला की माँ न आराम की साँस लकर कहा। मुझे आशा है कि स्त्रियो के लिए मीठा तल तो काफी है। तब तो मैं एक और अरदासकर सकती हूँ कि तेरे पिता अपने धर्म मार्ग पर फिर आ जाए।

पर लड़की की आँखें तो धुएँ और आग मे उठती हुई सर्पिल कुडलियो पर जमी थीं। उसने अपनी माँ की पवित्र कामना की कोई परवाह न की।

अचानक माला को चमारो की झोपडियो की ओर स आती हुई लगातार रोने चिल्लाने की आवाजें सुनाई दी।

उसे पूरा पता था कि यह धुआं किस ओर से आ रहा है। वह तो

उन गलियों मे अछूत बच्चों के साथ खेल चुकी थी। वह उस पूरे दृश्य की अच्छी तरह कल्पना कर सकती थी जो धुए के जगमगाते हुए बादलों ने—जो उस समय उसके सिर पर से गुजर रहे थे—रचा था।

मां लछमन और सजनू ने चमारों के घरों को आग लगा दी है। —उसने चिल्लाकर कहा।

है!—क्या बकती है पगली?

वे वह रहे थे कि वे ऐसा करेंगे और बापू—वह क्या कहेगा?

सत्ति पीपल के पेड के नीचे ऐसे बैठ गई जैसे वह वहां ढेर हो गई हो। उसने अपने माथे को अपने हाथ से पीट लिया और हाय हाय करके रोने लगी।

माला का भी जी भर आया पर वह रो न सकी।

वह गूगी-सी खडी रही और उसका मुह लाल सा हो आया। वह उस सर्वनाश की कल्पनाकर रही थी जो उसके घर को अपने में समा लेगा क्योंकि उसका कठोर पिता अपने खान्दान को अछूतों के विरुद्ध ठाकुरसिंह के खान्दान से मिल जाने पर कभी क्षमा नहीं करेगा। वह जानती थी कि उसका हाथ सजनू के हाथ में दिए जाने का वचन दिया जा चुका है और उसके बदले में लछमन को रुक्मणी मिलनी है। यह विचार इस समय जो आया तो उसकी अंतरात्मा बिना आवाज किए चिल्लाने लगी। उसका रोम फड़कने लगा। उसकी नाक कान और आंखें जलने लगे और त्वचा बजने लगी। उसे यह भी आभास हुआ कि यह अवसर तो था कि वह इस अन्त-बन्ध के व्यवधान से मुक्ति पाए और वह सजनू को न सौंपी जाए—सजनू जिसको वह उसके घमण्ड और उजड्डपन के कारण घृणा करती थी। उसका हृदय अछूत औरतों के प्रति सहानुभूति से भर गया चाहे वह हतप्रभ-सी खडी थी और यह न जानती थी कि वह अपनी हमदर्दी को कैसे प्रदर्शित करे।

अब आजा मां। उसने अपनी मां सत्ति को टेलते हुए कहा। हम

चलकर देखना चाहिए कि कहीं आग हमारे घर तक तो नहीं फैल रही है।

मक्ति के काले चेहरे पर झुर्रियों की संख्या और बढ़ गई। वह बोला—यह हमारे बुरे कर्मों के फल हैं और अपनी आँखों को दुपट्टे के एक सिरे से पोंछते हुए वह वहीं बैठ गई। उसे चक्कर आ गया।

माला का हृदय तेजी से धड़कने लगा और वह अपनी माँ सक्ति पर लेट गई। ऐसा लगता था कि वह बूढ़ी औरत माला की माँ मक्ति— चिरकाल से ऐसे ही लेटी हो—माला का हाथ अपने सिर पर रखे थोड़ा देर बाद वह उठी। लड़खड़ाती हुई गिरती हुई और आह भरती हुई। फिर उसने अपना हाथ अपनी बेटी के कंधे पर रख लिया और उसके पीछे-पीछे चल दी।

अछूत औरतें माला के पिता के घर के बाहर गली में एक घिच पिच बनी थीं जैसे कि वे मरा हुओं का मातम कर रही हों।

हम तो तबाह हो गए। भिक्खु की माँ ने चीखकर कहा। बस तुम्हारा पिता ही हमारा रक्षक है। क्यों न उसने हमें वस्त्र दिए हैं। उसने बाँटे हुए कपड़े दिखाने को गाँठ खोल दी। फिर कहा—

आ बाला माई! हमारी इस विपत्ति की रात्रि में सहायता कर। माला हमारा सब कुछ जाता रहा। बस तुम्हारे उच्च-चरित्र वाले पिता की उदारता का सहारा है।

बहिन हम तुम्हारे पाँव पड़ते हैं। दूसरी चमार औरतों ने माला का हाथ जोड़ते हुए कहा।

माला अपने कपड़ों की क्षति पर अपने मन को समझाने का प्रयत्न करने लगी। उसको आशा थी कि उसके ब्याह के कपड़े ही बाँटे गए होंगे। उसके शरीर के किसी रहस्यमय भाग में यह सन्देश-सा आता लगा कि मजनू अब कभी भी उसे न पा सकेगा। पर फिर भी उसे यह विचार आया कि वह उन कपड़ों को पहनकर सुन्दर जरूर होगा।

वह अपनी माँ को साथ मुड़ी जो अब गली तक पहुँच चुकी थी।

लकिन अपनी मा तक पहुँचने म पहल ही उसने देखा कि भिक्खु की माँ और दूसरी चमार औरतें सप्ति क सामन दौडकर उसके चरणा पर लट गई हैं।

न—न ! सप्ति न चिल्लाकर कहा। मैं अभी-अभी मदिर स आई हू।

औरतें पीछे हट गइ—पर उकडू बठ गइ। हाथ जोडकर गात नम्रतापूण और भेड की तरह मिमयाई हुए।

माँ—हम क्षमा कर दो। उनम स एक ने कहा।

तुम्हार पति न हमार साथ बहुत भलाइ की। लक्ष्मी न जोर देकर कहा। हमारे घर जन गए पर व तो त्यागू ईश्वर-सा बनकर आगया।

उसन कितना दान दिया हम। बाबू की माँ न जोगता न कहा।

सप्ति पत्थर की मूर्ति बनी खडी रही। उसक सारे अधिकार-बोधक भाव उसक चेहर पर उठ आए और उसको गर्वीले लाल रग म रग दिया।

फिर उसन कहा— इन सब लुटेरा की धरती निगल जाए। इनक सारे पाप कम कलियुग की अग्नि म भस्म हो जाए।

माता न विरोध करत हुए कहा— लकिन माँ ! हमारे लक्ष्मन न हो तो इनक घरा म आग लगाई है। बापू न इनको जो कुछ बाँटा है वह इसलिए कि वह इनक मर्दों का सडक बनान क लिए लता का ल गया था। सप्ति चकित और स्पष्ट-सा खडी रहा।

फिर उसका आत्मा क अधकार म स एक दर्दीली चीख निकल पडी। उसा चाख जा खाए हुए कपडा खाए हुए धम खाए हुए पति खाए हुए पुत्र और खाइ हुई बहा पर मातम का चाख थी और इसी चीख न उसक दिल का छुआ—उस दिल का जो आसुआ स लबालब भरा था। सप्ति का हिचकी बध गई। माता न अपनी माँ का थामा पर उसका सिर एक तरफ का गिर गया और उसन माता स कहा—

आ—कहीं चल जहाँ तक दिखा है। हम वहाँ एक पल भी नहीं ठहर सकत जहाँ घर का कोई व्यक्ति न हो।

नौ

गाँव का वह भाग जो उस पवित्र कुएँ से लगा था जो ठाकुरसिंह के पूर्वजों के श्मशान के किनारे था—बिलकुल शांत था। ऐसा शांत जैसे कि वे मृत शांत थे जिनकी राख छोटे-छोटे गुंबदों की समाधि के नीचे दबी थी। नीम के हरे पत्तों का झुरमुट जो सबसे पुरानी समाधि के ऊपर खड़ा था—वह भी गोधूली के मटमैले प्रकाश में स्तब्ध था। लछमन सोच रहा था कि कहीं जमादार ठाकुरसिंह के मृत पूर्वजों की प्रेतात्माएँ वहाँ विचरण करती हुई उसे देख न रही हों। अब उसका यह सोचने का मन किया कि वह मजनू का साथ छोड़कर न आता और उसे भी यहाँ ले आता तो अच्छा था। पर वह तो एकांत चाहता था और तब तक चलते रहना जब तक कि वह थक न जाय। यह न हुआ बल्कि जैसे-जैसे वह वांछित स्थान के पास आने लगा उसकी रगें बेसुरे स्वर में बजने लगीं। उसका शरीर काँपने लगा और उसकी श्वास जल्दी-जल्दी चलने लगी जैसे कि वह कोई शून्य को भरने का प्रयत्न कर रहा हो। एक क्षण वह श्मशान के पार पहाड़ियों को देखने के लिए रुक गया। उसके होठों से बुझे श्वास की तरह कुछ असुर शब्द निकल गए।

तुम क्या चाहते हो। तुमने उनसे अपने आपको क्यों छुआ जाने दिया? क्या? आखिर क्यों? पर पत्थरों ने कोई उत्तर न दिया।

वह महानता जो उसने मडुआ के घर को आग लगाने के समय अनुभव की थी पहले ही कम हो चुकी थी और अब उसके शरीर और आत्मा में कोई जीवन-युक्त शक्ति न थी जैसी कि तब थी जब कि वह

गाव स बाहर गया था। वह अपन म कोई और विचार न लाना चाहता था—इस डर स कि कही उसम कोई अपराधी ठहरान वाना विचार न आ जाय। पर उसक शरीर की शक्ति ता नष्ट हो चुकी थी। वह कवन खडा रह सकता था और शून्य म देख सकता था। उसका आगे बढ़न म थाडा-थोडा डर भी नगता था और उसका दिल उस अनुभूति क बोझ से बठता जा रहा था जो कि क्रोध के स्वय का क्षय करन के पश्चात होती है।

मुझे क्या हो गया ? मेरे भाग्य म क्या बदा है ?

जस ही उसक मह से य शब्द निकल उस ऐसा नगा जस वह अकेला न हो और उसके शब्दों की प्रतिध्वनि न उसकी आकृति की छाया का रूप ल लिया हो।

वह एकदम तेजी स पाछे मुडा कि कहा कोई भूत तो नही है।

'नहीं' वह मन मन में बडबडाया पर फिर भी वह इस स्थान पर आन पर अपन आपको कोस रहा था। वह गाँव के कुए पर नही नहा सकता था क्योंकि कोई उसे ऐसा करते देख लेता—जो वह नही चाहता था।

अब वह शराब के से नशे म झमन नगा और आग चल दिया।

मैं बहुत कुछ कर सकता हू। उसन अपन मन म कहा। शायद मैंन पिता की इच्छा क विरुद्ध काय कर क मूखता की। नकिन वह तो धम भ्रष्ट हो चुका है। जब कि मैं

य नाटकीय ढग स कहे हुए शब्द वातावरण म खो गए। मैं शब्द न उसका घृणा म भर दिया। उस इस बात का चलना थी कि उसने कभा भी अपना माँ क धार्मिक विश्वास या पण्डित सूरजमना क प्रति कोई आदर भाव न रखा था। जो भय वह बाल चुका था उसक बाद वान विचार न एकदम उसका मानसिक उथल-पुथल का दूर कर दिया और उस क्षण की ग्लानि म उस नगा कि यह सब तो रुकमणा क निए हुआ है—क्योंकि मजनू न उसकी सगाई तोडन की धमकी दी थी यदि

नेल्समन उसके साथ न हुआ तो।

वह एक बड़े पत्थर से टकरा गया जैसे वह अपना संतुलन खो चुका हो।

वह अपने आपको संभालकर खड़ा रखने का प्रयत्न करते-करते यह सोचने लगा कि अब सज्जन क्या करेगा? उसका पिता तो जो कुछ उसने किया है उसकी सराहना ही करेगा। इसलिए उसके लिए सब कुछ आसान होगा। पर रुक्मणी तो हमेशा अपने पिता से सहमत न होती थी। क्या वह अब उससे घृणा करने लग जाएगी? और फिर उसकी अपनी माँ? क्या वह उसका साथ देगी या पिताजी के पास चली जाएगी? पर ये सब तो बहुत दूर हैं फिर चिंता करने का क्या लाभ? वह नीरवता से सीढ़ियों वाले कुएं के पानी में अपने शरीर को नहलाकर पवित्र कर लेगा।

अचानक उसे लगा जैसे कि उसके आगे बढ़ने का विरोध हो। हवा बोझिल थी और संध्या का अदृश्य बोझ उसको कुचलता-सा मालूम होता था। मृत पूर्वजों की प्रेतात्माएं उसकी माँ के सिर में श्राद्ध के समय पीड़ा का कारण बन जाती थीं इसलिए उसने सोचा कि ठाकुरसिंह के पूर्वजों की प्रेतात्माएं आज उसको सताने आई हैं। लेकिन वे पूर्वज तो सब उच्च जाति के अच्छे हिंदू थे जिनकी आत्माओं को उसके कृत्य पर प्रसन्न होना चाहिए था।

वह आगे बढ़ गया और बड़बड़ाया— मैं तो सिद्धांत से कभी भी नहीं गिरा।'

जब वह आम और नीम के पेड़ों की घनी हुई छाया के नीचे पहुँचा उसने सोचा कि इसी स्थान पर कपड़े उतार दूंगा और फिर सीढ़ियों से होकर कुएं पर पहुँच जाऊंगा। पर उस बड़ा समाधि की भयावह निस्तब्धता में जिसमें ठाकुरसिंह के सबसे पहले पूर्वजों की राख दबी थी उसे डरा दिया।

वह धीरे धीरे आगे बढ़ा—संभावित प्रेतात्माओं के विरुद्ध साहस

का प्रदशन करता हुआ जिससे वह अपनी दृष्टि म ही कायर प्रतीत न हो।

कुए के मुह के पास पहुँचकर वह फिर रुक गया। कुए का मुह वाया प्रवेश स्थान जिसके दोना ओर दीवारें थी और सीन्यिा जमीन के पेट के अदर चली गई थी उसे ऐसा लगा जसे कि नरक का भया नक द्वार हा।

एकाएक उसको एक घबराहट ने आ दबोचा जस वह डव रहा हा—मर रहा हा। क्या न वह इस सबका अत कर दे ? सीधा पानी म भागता चला जाय और उसम अपने आपको डवा द ! लेकिन उस पता था कि वह तर सकता है।

कुछ चीटियाँ कुए की पहली सीढी पर कगमकश करता हुई चावल क दाना तक पहुँचना चाह रही थी। ये चावल पवित्र कुए के सामने गाँव की औरता न बिखेरे थे। उसने अपन दाए पाव से चीटिया की एक पूरी लाइन को कुचल दिया। पर हत्या की गई चीन्यिा क कुच लन की आवाज से जो उसके जूत क तल क नीच हुई उसका मन घृणा म भर गया। बस—और वह काफी तेजी स नीच की ओर दौडा। बस अब ता वह अपन आपको कुए के पानी म भिगाएगा। उसम उसक दाप घुलेंगे शान्ति आएगी और अपन पिता की अवहेलना करन क अपराध क लिए वह अपन आपको क्षमाकर सकगा। उसका यह भी विचार आया कि शायद चमार घरा की औरतें अब भी रा-चीख रहा हैं और काना देवी का सहायता क लिए पुकार रही हैं। उसन एक गानाखार की सी दक्षता क अनुरूप अपन कपड उतार फेंके। वह नगा हा गया। उसन अपन बालाकार पट को घृणा-पूर्ण विरूप दृष्टि स दखा अजीब उथल-पुथल था वहाँ—जस काई पानी भातर भातर उबल रहाहा। वह अपन हाथ वक्ष पर ल गया और दखा कि उसका हृदय बाए हाथ का हथला क नाच जार स धडक रहा है।

उसके माथ पर पसीना आ गया। वह उत्तजित हो उठा यहा तक कि अपनी छाया स भी उसे डर लगन लगा। फिर वह कुएँ की सीढ़ियों स नाचे उतर गया जो पाना म डवा थी और वही वठकर पानी क छाट दता हुआ भगवान का नाम स्मरण करन लगा।— ईश्वर! ईश्वर!'

पर ईश्वर तो आकाश से उतरता दिखाई न दिया। सिफ एक मन्त्र पहला सीढा के एक सिरे पर टरा रहा था जिसस उसक रागटे खड हो गए और उस ऐसा लगा जस कोई साप पानी म से निकलन वाला हो। वह साँप उस डस लगा और उसके पाप-कर्मों का दण्ड उमे मारकर दगा।

परमश्वर! —उसन फिर उच्चारण किया और अपन सिर और सीने पर पाना डाला। फिर उसन मुह को दोना हाथा स ढक लिया। वह सोचन लगा। 'यदि भिक्खु यहाँ आ जाय और मरी हत्या कर दे तब ही मेरे पाप का प्रायश्चित हो सकता है—मरे खून स ही—न कि इस पानी स।

दस

अगले दिन सूर्य निकलने से पहले दीवान रूपकृष्ण गाँव में चौक तक अपनी जीप-गाड़ी चलाता हुआ पहुँच गया। वह गठीले शरीर का मजबूत व्यक्ति अछूतों की जली हुई झोपड़ियों की ओर चल दिया—भारी भारी दिल में चेहरे पर परेशानी की गाँठ बाँधे। चाहे धूर्तसिंह पिछली रात को बरबादी का हाल बता चुका था फिर भी जब तक उसने अपनी आँखों से नहीं देख लिया तब तक उसे उच्च-जाति वालों द्वारा अछूतों के सर्वनाश का विश्वास न आया। उसने सारी बरबादी के दृश्य को बड़ी जमी हुई दृष्टि से देखा। पर वह दृष्टि भावशून्य थी और उसका क्रोध निष्क्रिय था क्योंकि वह गाँव की रूढ़िबद्धता के सामने अपने आपको रखना चाहता था—इस विचार से कि उसे अभी सम्बन्ध बनवाना है और उसे अपना राम-काज चलाए रखना है। उसे उस घृणा की भावना को जो उसके हृदय में जमींदार ठाकुरसिंह के लिए उमड़ रहा था कुछ नियंत्रण में रखना पड़ा और यह वह कर सका—अपने आप को यह याद दिलाकर कि स्वयं उसका भाई जो अमृतसर में था हिन्दू महासभा के राजनैतिक दल की ओर झुका था। अन्याय के पागलपन के उत्तर में घृणा नहीं होनी चाहिए वह जानता था। फिर भी उसने ठंडे क्रोध की कड़वाहट महसूस की। नीम के पत्तों की हरियाली जो आग के चंगुल में न फँसी थी उसको ठंडक दे रही थी और वह पास के ऊँचे चबूतरे पर जो विष्णु के मन्दिर के पास था पहुँच गया।

जमीदार ठाकुरसिंह जिसको अफसर के आने की खबर बच्चों से लगी थी उसके पास पाखंडी भाव से नमस्कार करता हुआ आ गया।

जैसे ही दीवान रूपकृष्ण के चेहरे की चमक जमींदार की आंखों में घुसकर जलने लगी उसके चेहरे का रंग उतर गया और वह सरपंच के आगे झुक-सा गया।

ठाकुर सिंह —अफसर ने लापरवाही जताते हुए कहा।

फिर उसने सिगरेट जलाई—अपने आपको वह आवश्यक समय देने के लिए जिसमें वह उस भाव-व्यंजना को पकड़ सके जिसकी सहायता से वह और लोगों से सफलतापूर्वक व्यवहार करता था। वह सहज ज्ञान उसके मानसिक धरातल पर एकदम आ गया और उसने कहा—

क्या तुमने मेरा भी हुक्का-पानी बन्द करा दिया है या घर में चिलम भरने के लिए कह दिया है ?

जमींदार की अतिथि-सत्कार की भावना को जैसे ठेस लगी हो उसने कहा—

गरीब-परवर—निश्चय ही तुम्हारे लिए हुक्का तैयार किया जा रहा है।

—और उस गली की ओर मुड़कर जो उसके घर की ओर जाती थी, वह चिल्लाया।

'ओ मजनू ! दीवान साहब के लिए हुक्का ता ले आ !

मजनू तो खेतों को गया है। लड़कों में से एक ने उत्तर दिया।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह अपने घर की ओर ऐसे भागा जैसे कोई घसीटा जाने वाला मुर्गा हो जो बिल्ली से डर गया हो।

दीवान रूपकृष्ण ने कुछ बच्चों को जो जोहड़ में चल रहे थे और हॉर्न को छेड़ रहे थे लात मारकर भगा दिया। फिर वह चारपाई पर बैठ गया या यूँ कहो उस पर गिर पड़ा। अपने भीतर उसे खोखलापन सा लगता था क्योंकि उसे पता था कि वह उच्च-जाति वालों की

दस

अगले दिन सूर्य निकलने से पहले दीवान रूपकृष्ण गाँव के चौक तक अपनी जीप-गाड़ी चलाता हुआ पहुँच गया। वह अगले नगर का मजबूत व्यक्ति अकेला ही चलते हुए झोपड़ियों की ओर चल दिया—भारी भारी दिल से चेहरे पर परेशानी की गाँठ बाँधे। चाहे धर्मसिंह पिछली रात की बरबादी का हाल बता चुका था फिर भी जब तक उसने अपनी आँखों से नहीं देख लिया तब तक उसे उच्च जाति वालों द्वारा अछूतों के सर्वनाश का विश्वास न आया। उसने सारा बरबादी के दृश्य को बड़ी जमी हुई दृष्टि से देखा। पर वह दृष्टि भावशून्य था और उसका क्रोध निष्क्रिय था क्योंकि वह गाँव की हरिजनबद्धता के सामने अपने आपको रखना चाहता था— इस विचार से कि उसे अभी सड़क बनवाना है और उसे अपना राम-राज्य चलाए रखना है। उसे इस घृणा की भावना को जो उसके हृदय में जमींदार ठाकुरसिंह के लिए उठ रही थी कुछ नियन्त्रण में रखना पड़ा और यह वह कर सका—अपने आप को यह याद दिलाकर कि स्वयं उसका भाई जो अमनसर में था हिन्दू महासभा के राजनैतिक दल की ओर झुका था। अन्याय के पागलपन के उत्तर में घृणा नहीं होनी चाहिए वह जानता था। फिर भी उसने ठण्डे ठण्डे क्रोध की कड़वाहट महसूस की। नीम के पत्तों की हरियाली जो आग के चंगुल में न फँसी थी उसको ठण्डक दे रही थी और वह पीपल के नीचे चबूतरे पर जो विष्णु के मन्दिर के पास था पहुँच गया।

जमींदार ठाकुरसिंह, जिसको अफसर के आने की खबर बच्चों से लगी थी उसके पास पाखंडी भाव से नमस्कार करता हुआ आ गया।

जैसे ही दीवान रूपकृष्ण के चेहरे की चमक जमींदार की आंखों में घुसकर जलने लगी उसके चहरे का रंग उतर गया और वह सरपंच के आगे झुक-सा गया।

ठाकुर सिंह —अफसर ने लापरवाही जताते हुए कहा।

फिर उसने सिगरेट जला ली—अपने आपको वह आवश्यक समय देने के लिए जिसमें वह उस भाव-कला को पकड़ सके जिसकी सहायता से वह और लोगों से सफलतापूर्वक व्यवहार करता था। वह सहज ज्ञान उसके मानसिक धरातल पर एकदम आ गया और उसने कहा—

क्या तुमने मेरा भी हुक्का-पानी बंद करा दिया है या घर में चिलम भरने के लिए कह दिया है?

जमींदार की अतिथि सत्कार की भावना को जैसे ठेस लगी हो उसने कहा—

गरीब-परवर—निश्चय ही तुम्हारे लिए हुक्का तैयार किया जा रहा है।

—और उस गली की ओर मुड़कर जो उसके घर की ओर जाती थी वह चिल्लाया।

'ओ सजनू! दीवान साहब के लिए हुक्का तो ले आ!'

सजनू तो खेत को गया है। लड़कों में से एक ने उत्तर दिया।

इस पर जमींदार ठाकुरसिंह अपने घर की ओर ऐसे भागा जैसे कोई जमीन्दार जाने वाला मुर्गा हो जो बिल्ली से डर गया हो।

दीवान रूपकृष्ण ने कुछ बच्चों को जो जीप में चढ़ रहे थे और हॉर्न को छेड़ रहे थे डांट मारकर भगा दिया। फिर वह चारपाई पर बैठ गया या यूं कहो उस पर गिर पड़ा। अपने भीतर उसे खोखलापन सा लगता था क्योंकि उसे पता था कि वह उच्च-जाति वालों का

गव-पूण महानता की भावना को किन्ही शब्दो से भी जो वह प्रयोग कर सकता है, नष्ट न कर सकता था। कुछ भी हो उसे कोई बलिदान के बकर का खोज नही करनी थी। न ही वह एक विरक्त दशक का तरह अपन आपको नियत्रण म रख एक सुरक्षित दूरी से सब कुछ दखता रह सकता था प्रशसा और निंदा ता किसी चतुर ढग स दर्शानी थी।

जसे ही वह बठा और सिर को पीछेकर अपना बाहो का अपन पीछ फलाया उस अचानक लबरदार धूलीसिंह क लडक लछमन का उप स्थिति का आभास हुआ। लछमन हाथ म वही हुक्का लिए था जो वह दीवान साहब के लिए जब वह पिछली बार आए थ—लाया गया था।

तू बहुत दिन जिए बटा! अफसर न कहा। य सिगरेट तो गोबर से भरी मालम होती हैं और फिर सवेरे-सवेर सब से पहल हुक्क की गुडगुडाहट स अच्छा सगीत क्या हा सकता है? वह तो भरवी राग स भी अच्छा है!

लडका मुस्करा दिया और उसे इस बात से सतोष हुआ कि उसको स्वीकार कर लिया गया है। उसने हुक्का नीचे रख दिया और बडी मानसिक खिचाव की अवस्था [म प्रतीक्षा करने लगा। उसे अब भी आशा थी कि दीवान रूपकृष्ण क भारी शरीर म से क्रोध का बारूदी गोला थोडी देर म अवश्य फटेगा।

पर अफसर उठकर बठ गया। उसन हुक्के के धुए को श्वास से हवा म उडाना आरभकर दिया। वह उस समय एक प्राकृतिक वातावरण म काय करन वाले व्यक्ति जसी मानसिक फुर्ती का परिचय दे रहा था—एस स्थान पर भी जहाँ बिना अथाह कठिनाइया क कुछ न हो सकता हो। वास्तव म उस अपनी स्थिरता पर स्वय आश्चय था।

इस समय जमीदार ठाकुरसिंह यह कहता हुआ वापिस आ गया—

'हजूर—हुक्का आ रहा है। पर यह लडका तो मुझसे भी तज निकला।

'वह तो दानव है।' —दीवान रूपकृष्ण ने कहा।

अब लछमन और जमींदार दोनों अफसर द्वारा बात आरंभ करने की प्रतीक्षा करने लगे।

बस अफसर ने यहां कहा—

अच्छा ! तुम लोगों ने होली का त्यौहार इस वर्ष दोबारा मनाया है ?

दोनों गांव वाले एक पल तो असमंजस में आ गए और निंदा-पूर्ण बातों का इंतजार करने लगे—इस असंबंधित वाक्य के बाद।

उन्होंने चारों से एक-दूसरे पर नजर डाली और दीवान रूपकृष्ण को होली के बारे में जिक्र करने का अर्थ समझ गए। वह होली जिसमें उल्लास-मय लापरवाही से दूसरों पर रंग फेंकने के अतिरिक्त कुछ भी कहा या भी किया जा सकता है।

जनाब ! होली तो कभी की बात चुकी। जमींदार ठाकुर सिंह ने कहना आरंभ किया। अब तो हम सब वर्षा के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कितनी तेज गर्मी है और ।

दीवान रूपकृष्ण को जमींदार के बात करने के ढंग से अपने लिए एक खुला मार्ग मिल गया। उसने कहा—

कुछ दिनों की बात है कि गुड़गांवे जिले के एक गांव में एक तारा दूसरे तारे की दुम में दिखाई दिया और अगले दिन औरतों का एक समूह मेरी स्त्री से पूछने आया कि कौन सी तिथि प्रधान-मंत्री की जीवित समाधि बनाने के लिए निश्चित हुई है क्योंकि वे तो इतने सज्जन और दयालु हैं कि स्वयं उनकी मृत्यु कभी न आएगी। इसलिए स्वर्ग जाने का प्रबंध करने के लिए उन्होंने आप ही आदेश दिया है। मैंने उन्हें ठीक तारीख तो नहीं बताई पर विश्वास दिलाया कि प्रधान-मंत्री अमर हैं।

दोनों प्रौढ़-व्यक्तियों के मस्तिष्क इस कथा को सुनकर चक्कर में

चन कहा ? मेरी आँख का दाप मरी पनगा क सामन है। यदि मजनू जिमन यह मब मेरे साथ मिनकर किया है मान जाता तो हम दाना इकट्ठ बापू क पास जाते और उसक माथ मिनकर काम करन का वायदा करत। पर सानू का हृ"य ता अभा तक चमारा का मवनाग करन पर तुना है। बस एक मैं ही मानसिक पीडा म हूँ।

जमादार ने काफी देर तक कोई उत्तर न दिया। बस उसका चहरा पीना और लाल हाता जा रहा था। उसने गम स सिर झुकाए रखा और दीवान रूपकृष्ण से अपनी नजरें मिलान न दी।

दीवान रूपकृष्ण उठा और धूनीसिंह के खेत की ओर यह कहता हुआ चला गया—

मुझे काम पर चलना है। यदि मनुष्य काम न करे तो वह नष्ट हो जाय!

"वह तो दानव है।" —दीवान रूपकृष्ण ने कहा।

अब लछमन और जमींदार दोनों अफसर द्वारा बात आरंभ करने की प्रतीक्षा करने लगे।

बस अफसर ने यही कहा—

अच्छा ! तुम लोगों ने होली का त्यौहार इस वर्ष दोबारा मनाया है ?

दोनों गाँव वाले एक पल तो असमंजस में आ गए और निंदा-पूर्ण बातों का इंतजार करने लगे—इस असंबंधित वाक्य के बाद।

उन्होंने चोरी से एक दूसरे पर नजर डाली और दीवान रूपकृष्ण का होली के बारे में जिक्र करने का अर्थ समझ गए। वह होली जिसमें उल्लास-मय लापरवाही से दूसरों पर रंग फेंकने के अतिरिक्त कुछ भी कहा या भी किया जा सकता है।

जनाब ! होली तो कभी की बीत चुकी। जमींदार ठाकुर सिंह ने कहना आरंभ किया। अब तो हम सब वर्षा के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कितनी तेज गर्मी है और ।

दीवान रूपकृष्ण को जमींदार के बात करने के ढंग में अपने लिए एक खुला मार्ग मिल गया। उसने कहा—

कुछ दिनों की बात है कि गुड़गाँवे जिले के एक गाँव में एक तारा दूसरे तारे की दुम में दिखाई दिया और अगले दिन औरतों का एक समूह मरी स्त्री से पूछने आया कि कौन सी तिथि प्रधान मंत्री की जीवित समाधि बनाने के लिए निश्चित हुई है, क्योंकि वे तो इतने सज्जन और दयालु हैं कि स्वयं उनकी मृत्यु कभी न आएगी। इसलिए स्वर्ग जाने का प्रबंध करने के लिए उन्होंने आप ही आदेश दिया है। मैंने उन्हें ठीक तारीख तो नहीं बताई पर विश्वास दिलाया कि प्रधान-मंत्री अमर हैं।

दोनों प्रौढ़-व्यक्तियों के मस्तिष्क इस कथा को सुनकर चक्कर में

आ गए। उनका विचार था कि अवश्य इस कथा म कोई नतिक शिक्षा छिपा है।

दीवान रूपकृष्ण ने लछमन के चेहरे के जख्मी पीलपन का देखा और उसका मन किया कि अपने अफसरी पद का मान छोडकर लछमन को गले लगा ले। पर उसका मह ऊपर उठा रहा आँखें अधमदी रहीं और होठ कापते रहे जसे उस लडके से कुछ कहना चाहते हो। कहीं उसकी ईमानदारी का यह क्षण यू ही न बीत जाय। अफसर न सहृदयता से कहा—

बेटा—तू अपने पिता के पास चला जा और जो कुछ बात गया है उस भूल जा। तूने उपनिषद के इस सत्य को सिद्धकर दिखाया कि चोर के भी आत्मा होती है।

बेटा! तू मेरी लडकी का उसका विवाह होने से पहले ही विधवा नहीं बना सकता। जमीदार ने लछमन से करारी आवाज म कहा। 'हमारा जाति और कुल तो श्रेष्ठ हैं। चाहे दीवान साहब कुछ भी कह हम अछूतों म नहीं मिल सकते।

लेकिन लछमन ने जमीदार के शब्दों की ओर बिलकुल ध्यान न दिया। वह उठा और बच्चों से अपनी आँखों के आँसू छिपाते हुए वहाँ से दौड पडा। जाते हुए उसने धीरे से कहा— मैं वहा जा रहा हू जहा मेरा कुटुम्ब है।'

जमीदार ठाकुरसिंह ने कडवे ताने के स्वर म कहा—

मेरी बेटी! आसू तो ससार की सारी वस्तुओं से पहले सूख जाते हैं। यह उसने ऐसे कहा जसे रुक्मणी पास हो वह उससे बात कह रहा हो और उसके वर के छूट जाने पर उसे सात्वना दे रहा हो। दीवान रूपकृष्ण ने हुक्के मे तनिक प्रदर्शन करते हुए घूट मारा। फिर उसने खाँसा और अपना बाया हाथ जमीदार ठाकुरसिंह के कधे की तरफ फैलाते हुए कहा—

सब्र से काम लो सरपच ठाकुरसिंह! तुम अपने मन से तो पूछो

कि क्या तुम मुगल-शहंशाह आलमगीर की तरह मरना चाहते हो ? मरने के बाद न झोंपड़ी हो न चूल्हा हो न घड़े में एक बूंद पानी। या तुम वर्षा आरम्भ होने से पहले ही लड़कों से मन्दिर बनवाकर तैयार करा सकोगे ?'

'हजूर ! निश्चय ही।' जमादार ने दुःखात्मक भाव से कहना आरम्भ किया। 'हमारी बिरादरी तो ऐसी है जो पत्र में कुछ लोगों के जोड़ के अनुसार ही जीवन बिता रही है। मेरा एक जवान बेटा है जिसकी सगाई लछमन से हो चुकी है। दूसरी ओर धूनासिंह उसकी स्त्री और उसकी बेटी अछूतों के साथ रहने चले गए और इस संबंध को भंग कर गए। बहुत दिन पहले मैंने अपनी घरवाली से रुक्मणी और इस लड़के का विवाह रचाने के लिए कहा था क्योंकि लगभग उस समय उचित संयोग में थे। यदि वह विवाह हो जाता तो आज उनकी अवस्था क्या होती ?

लछमन का चेहरा झेंप और अपने किए हुए पाप की भावना से गहरा लाल हो आया। वह जानता था कि पिछली रात जब से उसकी माँ और बहिन उसके पिता के पास रहने चले गए थे उसके और ठाकुरसिंह के कुटुम्ब के बीच स्थापित सगाई का संबंध खतरे में पड़ गया है। वह स्वयं सारी रात नहीं सोया था और चमारों की झोंपड़ियों को आग लगाता-लगाता बहुत थक चुका था। उसकी समझ में यह न आता था कि क्या उसके सारे पाप-कर्मों में सुधार का-सा दिख ना रहा है जिससे प्राण केवल शुद्ध होकर और ईमानदारी का जीवन बिताकर ही मिल सकता था न कि चोर की मौत मरकर—एक ऐसे इन्सान की मौत जिसने दूसरों के घरों में आग लगाई हो।

फिर तीनों व्यक्ति देर तक आपस में कुछ न बोले। लछमन ने शान्ति भंग करते हुए टूटे-फूटे शब्दों में कहा—'हजूर मैं क्या कहूँ ? क्या जो कुछ मैंने किया है उसके करने के बाद मैं आपके चरण छूने का साहस कर सकता हूँ ? इस अग्नि काण्ड का पाप मुझ पर है। मुझे

वन कहा ? मेरी आँख का दोष मेरी पलकों के सामने है। यदि सजनू जिसने यह सब मेरे साथ मिलकर किया है मान जाता तो हम दोनों इकट्ठे बापू के पास जाते और उसके साथ मिलकर काम करने का वायदा करते। पर सजनू का हृदय तो अभी तक चमारों का सर्वनाश करने पर तुला है। बस एक मैं ही मानसिक पीड़ा में हूँ।

जमींदार ने काफी देर तक कोई उत्तर न दिया। बस उसका चेहरा पीला और लाल होता जा रहा था। उसने शर्म से सिर झुकाए रखा और दीवान रूपकृष्ण से अपनी नजरें मिलने न दीं।

दीवान रूपकृष्ण उठा और धून्नीसिंह के खेत की ओर यह कहता हुआ चला गया—

मुझे काम पर चलना है। यदि मनुष्य काम न करे तो वह नष्ट हो जाय!

ग्यारह

रुक्मणी ने अपने पिता की आँखों में विषाद देखा और वह जान गई कि जो अफसर बाहर से आया था उसने उसके पिता को भला बुरा कहा है। उसका यह भी अनुमान था कि इसके अतिरिक्त भी कुछ हुआ है—पर वास्तव में क्या हुआ है यह वह न जानती थी। चमार औरतों के रोने और चीखने के शोर से वह समझ गई थी कि उन पर तो सारा संसार ही टूट पड़ा है। उसे यह भी आभास था कि उसका भाई मजनू और उसके दो किसी-न-किसी ढंग से इस जुर्म को ढाने के उत्तरदायी थे। उसने अपने कुटुम्ब का ही पक्ष लिया—उस धूलीसिंह के विरुद्ध जो अछूतों के साथ हो लिया था। बल्कि वह तो अपनी होने वाली सास और ननद के भी विरोध में हो गई क्योंकि वे दोनों घर छोड़कर जबरदार के साथ खेत पर मिल गई और उसे मन ही-मन इस बात पर बड़ा उल्लास था कि उसके दो तो घर पर ही रहे। शायद उसके ही कारण। अछूत तो हमेशा से रोते-चीखते आए हैं और वह अपने ऊँचे घर की पवित्रता में रहकर सन्तुष्ट थी। लेकिन अब अपने पिता को सर लटकाए देख उसके शरीर की कठोर और हीरे जैसी शीतलता उत्तेजना की गर्मी के रंग को भनक देने लगी।

उसकी माँ ने उसे हाथ में भरा पीतल का गिलास पकड़ा दिया इसलिए कि वह उसे अपने पिता जमादार ठाकुरसिंह को दे दे। रुक्मणी जहाँ उसका पिता खड़ा था गिलास ले गई। वह उस हुक्के में घूँट भर रहा था जो दीवान रूपकृष्ण के लिए तैयार किया गया था—पर देर से।

मुझे प्यास नहीं है। —उसके पिता ने कहा और रुक्मणी को हाथ हिलाकर चला जाने के लिए इशारा करता हुआ वह बरामदे में चारपाई पर बैठ गया।

रुक्मणी की मा ने विरोध करते हुए कहा—

गर्मी तुम्हारे दिमाग को चढ़ जाएगी। इसलिए छाछ पी लो और बाहर जाने से पहले थोड़े ठंडे हो लो।

यह अपने बेटे को दो। जमींदार ने उत्तर दिया। वही तो एक बार है जो यह सब बला मेरे सिर पर ले आया है।

अरे ! हुआ क्या ? वो तुम्हारे सिर पर क्या ले आया है ? रुक्मणी की मा ने पूछा।

जैसे ही उसकी मा ने चिल्लाकर ये शब्द कहे छाछ का गिलास रुक्मणी के हाथ से छूट गया।

ठाकुरसिंह ने गरजकर कहा—

'उसीसे पूछो—और उसके साथी लछमन से। जहाँ तक उसके मित्र और जुर्म में भागीदार होने का सवाल है उसका दिमाग तो फिर गया है। अपने दगाबाज खानदान के और आदमियों की तरह वह भी सड़क पर काम करने चल दिया है।

उसकी यह मजाल कैसे हो सकती है ? सारे समय मेरे साथ रहते हुए भी। सजनू चिल्लाया।

तो तुम्हीं ने आग सुलगाई थी ? ठाकुरसिंह ने पूछा।

निश्चय ही बापू लेकिन सजनू ने उत्तर दिया।

मूर्ख तुम उनकी ओर ध्यान न देते तो अच्छा था। उनकी भाप डिया बरदाश्त न करते। उनके ही नगाड़े पर उनको अपना ही नाच उन्हें सिखाना—हमें शोभा न देता था।

अच्छा—पर बापू ! क्या तुमने नहीं कहा था ऐसा करने को ? सजनू बोला।

जमींदार ठाकुरसिंह को इस जुर्म में अपने योग की पूरी चेतना

थी। बस वह स्वयं आग लगाने वाला न बनना चाहता था। फिर भी उसके लड़के की आँखों म जो उँगली उठाने वाली दृष्टि थी उसमे वह झुक गया। बाप और बटे के मध्य थोडी देर के लिए एक भयानक शांति छा गई।

एक भिनभिनाते हुए बड काल बर्रे के शोर न बरामदे की शून्यता के भार को और अधिक कर दिया और वह खाइ जो पिता और पुत्र को एक दूसरे से अलग करती थी और चौडी हो गई।

रुक्मणी अपने घर के दोनों आदमियों को चोरी म देखती हुई माँ के पास बठी अपने आपको शांत करने के लिए जोर-जोर से साँस लेने लगी क्योंकि पिता और भाई के प्रति उसके जी म जितना क्रोध था उसमे उसका दम घुट रहा था। इन दोनों न ही तो इस मुसीबत को ढाया था, और उनको अपने पिता के पास जाने के लिए विवश किया था।

अपने पिता और भाई म वहाँ अधिक उसके भाव उनकी कल्पना म महीनों तक अनदेखे बधे रहे—वो जो किसी दिन उसको गले लगाएँगे। उसके जीवन म इससे मधुर कल्पना क्या हो सकती थी कि शीघ्र ही एक पुरुष उसको अपने इस घर से ले जाएगा। लेकिन वह जिस को उसका रखवाला चाहता था खुद हो चला गया। अब उसे वह अपनी कल्पना म सता पर काम करता देख सकती थी—अपने अटल मार्ग पर चलते हुए—उससे दूर—अपने अभिशाप्त पिता के साथ चमारों म बठे हुए। उसे लगा वह अकेली है निस्सहाय और अभावपूर्ण। एक ऐसी स्त्री जो विवाह स पहले ही विधवा हो गई।

माँ ने चीखकर कहा—

वह सूअर लछमन!

हम दोनों साथ थ। अब भी सब कुछ साथ ही भुगत लते। गंवार कहीं का!

उसे बुरा भला मत कहो। इस मूर्खता-पूर्ण काम म वह अकेला

वह था ? क्योंकि वह अपराधी था उसने ठाकुर साहब के सामने स्वीकार किया। मुझे यह सब बिल्कुल ही नहीं करना चाहिए था। — रुक्मिणी बोली।

ठाकुर की माँ ने रोते हुए कहा—

अब तो मेरे बेटे को [illegible] मत करो।

फिर [illegible] उत्तर दिया—

तुम्हारा प्यारा बेटा तो सर्वथा पवित्र है ना ?

यह अपने माता की कमजोरी रुक्मणी को शक्ति देती प्रतीत हुई। जो अन्याय उसके भाई और उन्होंने किया था उसका अवर्णनीय भय उसकी माँ की अपने पुत्र के प्रति धार्मिक भावना के साथ उस पर छा गया। उसे लगा जैसे हमेशा लड़का की ही हिमायत की जाती रही हो। लेकिन जो कुछ हो गया है वह उसको अब सब मर्दों से दूर रखेगा। उसका भाग्य ही ऐसा था। अपने पिता की ऊँची हवेली की पत्थर की दीवारों के पीछे रहने के पीड़ा-युक्त विचार की अग्नि उसे भस्म करने लगी। उसकी आँखों से चमकती हुई चिन्गारियाँ-सी निकलने लगीं—बिल्कुल वैसी ही जैसी कि चमारों की झोंपड़ियों से उठी थीं। उसने अपने दुख के ज्वालामुखी को फटने से बचाने के लिए अपना सिर तनिक हिलाया। पर जैसे ही उसका मुँह उसकी माँ के रोषपूर्ण पीले चेहरे की तरफ हुआ उसकी आँखें अश्रुकणों से भर गईं और उसने उसकी गोद में सिसकियाँ भरते हुए अपना सिर छिपा लिया।

मेरी बच्ची! रो मत —माँ ने तसल्ली दी। 'तू तो हमारी बच्ची है—नन्ही-सी! जाने दे उसे चमार बिरादरी में और करने दे शादी उन्हीं की किसी लड़की से। हम तेरे लिए और उचित वर खोज लेंगे। आजा मेरी मुन्नी! "

और उसने रुक्मणी के सिर को अपनी गोद में और गहरा डाल लिया। उसके बालों को [illegible] को [illegible] और तनिक लाज से उसका एक चुंबन ले लिया!

बारह

गवी सन्व का ग्रार जान हुए मजन् न ग्रपन ग्राप का ग्रन्ना ग्रनुभव निया। बम बवन भुनमान वान ग्रौर सिर पर चमकन वान मूय क प्रकाग म उसका छाया ही उमक पीछ गिर जाता थी।

वह ग्रपन घर स बाहर निकन ग्राया था क्याकि उम समभ म ग्रा गया नि उमक पिना पहन ता उम ग्रपना जाति पर टिक रहन क निए प्रेरित करत रहे थ नेकिन ग्राज व उसस घृणा करत थ। दूसरी ग्रार उसकी माँ रुक्मणी के मरतर नछमन क साथ छाड जान का नापो उस हा ठहराती थी।

गना म स गुजरते हुए उम लगा जस बच्चे भी उससे कतरा रह हा। ग्रौरतें ग्रपना घघट एस खीच नता जमे वह काइ ग्रजनवी हा ग्रौर मुरझाए वृक्ष भा एस भागत जस वह उन्ह पीटन जा रहा हो।

उसक ग्राग ग्राग गर्मी ग्रौर धुध के छाट छाट ववन्डर उठन ग्रौर बिखर जात। वन जार म साँस लता ग्रौर थाडा हाफ जाना।

क्या उमक पगा के नीच का धरती फट जाएगा ग्रौर उस निगल नगा? पर धरता न एसा नहा किया। धरती का कठोरता की ग्रनुभूति मात्र म ही उसन ग्रपन ग्राप का सुरक्षित ग्रनुभव किया।

नकिन उसक भीतर एक भावना का प्रनारमा जिसका कोइ ग्रावाज न था उसकी हँसी उडा रही था। यह भावना उस न्भ म पर था जा उसक पूवजा क उच्च जाति म मवर रखन क कारण था। यह उस न्ल्भ पर भूठे ग्राभिमान स भा पर थी जो कि उसन नछमन क

साथ मिलकर किया था। आरम्भ में एक फाँस की तरह इस भावना ने उसे धूनीसिंह के खेत की जगह मंदिर की ओर जाने के लिए उकसाया। मंदिर में केवल सूरजमना अपनी नाक में कठिनता से भजन गाते होंगे। यह गाना इतना उबाने वाला होगा कि वह भगवान की मूर्ति के पास प्रार्थना के लिए भी न जा सकेगा। और फिर उस समय उसकी चाह यह न थी कि यह प्रार्थना करे बल्कि यह कि वह किसी से बात करे। लेकिन सारे संसार में कौन था जिससे वह एक शब्द भी कह सकता था?

उसे याद हो आया कि एक दिन वह कुएँ की ओर जाती हुई गाँव की लड़कियों के पीछे हो लिया था। वह उनसे बात करना चाहता था लेकिन वे भाग उठी थीं और वह अकेला रह गया था। और वहाँ चट्टान पर बैठे-बैठे उसने अपने आप को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर कर लिया था कि वह उनके साथ बलात्कार करना चाहता था।

उसे लगा जैसे वह आज भी ऐसी ही मानसिक अवस्था में हो। एक बहुत बड़ी खाई उसके और गाँव के हर एक व्यक्ति के बीच में थी। जैसे ही अपने एकाकीपन की वीरानी की भावना उस पर पूरी तरह छा गई उसे लगा कि मृत्यु को छोड़कर और सब अच्छे-बुरे में उसका भाग्य गाँव के साथ ही बँधा है।

एकदम उसने निश्चय किया कि वह अपने मित्र के पास जाएगा। उससे साथ छोड़ देने की शिकायत करेगा और उसे अपनी ओर लाने का प्रयत्न करेगा। या फिर अगर लक्ष्मन ने उससे विनय की तो वह भी उसके ही साथ हो लेगा।

जैसे ही उसने यह सोचा उसका स्वाभिमान लौट आया और वह चिल्ला पड़ा— मादर... गद्दार। —और धूनीसिंह के खेत से सौ गज की दूरी पर पड़े एक बड़े पत्थर पर बैठ गया।

वहाँ वह हथौड़ों से पत्थर तोड़ने की सपाट आवाज तो सुन सकता

था, पर उस आदमी दिखाई न देते थे ।

धूनीसिंह को काम की देख रेख करते हुए सजनू को एक झलक दिखाई दे गई और यह कल्पना कर कि यह लडका अपने मित्र को खोज में आया है उसने अपना सिर एकदम नीचे कर लिया और सजनू की आकृति को झाडी की झीनी झीनी पत्तियों में से देखा ।

अभी वहां वह कुछ पल ही बैठा था कि सजनू को प्रतीत हुआ कि सूर्य तो उसको एक पर्वत की तरह दबाए चला जा रहा है और उसकी रश्मियों को पसीना बनाकर घुला रहा है । यहां तक कि उसका शरीर बिल्कुल हल्का-फुल्का-सा हो गया और इधर उधर भ्रमने लगा । और इस तेज गर्मी के प्रभाव में उसे लगा मानो उसके अपराध का ईश्वर उसे दण्ड दे रहा है । इसलिए इस कष्ट क्रिया को उसने एक व्याधि से मुक्त करने वाली तपस्या के रूप में स्वीकार किया और वायु को अपने शरीर में से ऐसे जाने दिया जैसे कि नर्क में यम के दूतों द्वारा चलाए जाने वाला आरा उसके दो टुकडे कर रहा हो ।

बडा ऊचा टीला है । —धूनीसिंह कह रहा था । आओ सजनू ! तेरा दोस्त लछमन यहीं है ।

सजनू का मुंह उतर गया । एक क्षण वह दृढ़ता से पत्थर पर बैठा रहा । उसका मन किया कि वह वहां से भाग जाय ।

उसने देखा कि खेत को पार करता हुआ लछमन उसकी ही ओर आ रहा है । सजनू ने सोचा क्या न वह लछमन पर थूक दे । लेकिन उसके पास बस यही अवसर था जो फिर कभी न आएगा । धूनीसिंह की बातों के नम्र सहज ने क्षमा की उस आशा पहले ही बंधा दी थी । वह चुपचाप बैठा रहा—लहर को आने पर न रोक पाए हुए । लछमन आया और पीछे से उसने गिनवाई करते हुए बांहें डाल दी और उसे ऊपर उठा लिया । फिर अधिक से अधिक असभ्य भाषा में सबोधित कर कहने लगा—

साला ! सजनू के बच्चे ! साले ! इधर आ ! मेरा बापू तुझे

हमारी ओर आने के लिए वह रहा है।

सजनू ने अपने आप को बचाते हुए कहा—

तुम्हारा बापू क्या गाव के सर्वाधिकार रखता है?

लेकिन यह तो मेरे या तेरे बाप की बात नहीं—मेरा और तेरा सवाल है।

मैं अपने आप को तेरे नए मित्रों में मिलकर दूषित न करूंगा। सजनू बोला

लछमन ने कहा—

तू तो पहले ही दूषित हो चुका है क्योंकि वे तो मुझे छू चुके हैं और मैं तुझे छू चुका हूं—इसके इलावा उन्होंने तो मेरे साथ बहुत अच्छाई की है।

अच्छाई तो हर जगह है। कपूरी कहीं के! क्या तुम्हारे पिता और चमारों में अच्छाई नहीं है?

पर पुलिस वाले अच्छे आदमी नहीं हैं। यदि उन्हें पता चल जाय कि हम दोनों ने चमारों की झोंपड़ियों में आग लगाई थी तो हम दोनों ही को जेल की हवा खानी पड़ेगी। —लछमन बोला

सजनू ने अपने मित्र की ओर नासमझी से देखा और आत्मसमर्पण कर दिया।

तेरह

कुए की सान्यिा पर खड हावर मूरजमनी ने अपन सिर पर वह पानी की बालटी उडेन दी जो उसन खीची थी और प्रत्यक स्वर क माथ ईश्वर क विभिन्न नाम उच्चारण किए —

हरि ग्रो॰म परमेश्वर परमात्मन् !

फिर बिना अपना गरीर पोछे हुए उसने बालटी का लवडी की चरखा पर पडी रस्सी म कुए म नटका दिया। पानी उनक पवित्र गरीर से अमृत और पसीने का मम्मिश्रण बनकर बूद-बूद नीचे कुए म गिर रहा था और चाहे यह तज गर्मी का एक प्रभात था वह कांपता जा रहा था। उमवी गतिमय आवाज लडखडा रही थी क्योकि वह जानता था कि पवित्र पद ता बम उमा प्रकार मामानी स उच्चारित किए जा सकते हैं। मत्रा ने उमे इतनी गक्ति प्रदान की कि वह अपन निर्जीव हाथ-परा स बालटी कुए स खींच ल। और वह पानी को अपन गरीर पर डालता हुआ माथ साथ भजन गाता जाता था।

जब कि वह काफा ठडा हा चुका ता उसन साचा कि यह स्नान अब समाप्त हाना चाहिए। लकिन उम आगा थी कि एक या दो गाँव की औरतें पानी लन जरूर आएगा और उस नहाता हुआ देख गेंगी क्योकि उसका शरीर ता मलमल की लगाटी म पारदर्शी गान की तरह चमक रहा था। लकिन औरतें गली म वहाँ से पचास गज दूर पापस म घिच पिच खडी थी और उन हाथ-परा का देखकर हम रही था जो गीनी धोती की चिपटती हुई तहा म स साफ नजर आन

थे। व झेंपी झेंपी सी खिसिया रही थी और कुए तक जान क लिए एक दूसरे को धक्ल रही थी। उह लाज भी आ रही थी चाह वह वह नाराज भी बठी थी—क्योकि बूढे आम्मी क दर लगान क कारण उन को कुए स पानी लान क काम म दर हो रहा थी।

यह एक एसा मजाक था जो राज हा दोहराया जाता। पर राज रोज होन पर भी उसका आनद नही गया। और आम तौर पर उसका अत यह होता कि औरतें एक बच्च को भेजकर पडित सूरजमनी को याद दिलाती कि वह लौट आय क्योकि चाची कुए पर आना चाहती हैं। वह अडियल ब्राह्मण उस समय इशारे को साफ समझ जाता और कुए से चल देता।

पर आज सवर तो वह औरा क कष्ट का एक दूसरे ही कारण से बना रहा था न कि अपन शरीर का प्रदशन करन क निमित्त।

वह जानना चाहता था कि धूलीसिह क रात मैं क्या हो रहा है। वह जानता था कि लछमन और सजनू न प्रायश्चितकर लिया है और व दावान रूपकृष्ण क गाव म आन क बाद चमार लडका के साथ काम करने चल दिए हैं। और यह भी कि लवरदार की जमींदार ठाकुर सिंह के ऊपर जिसकी उसने सहायता की थी विजय हुई। अब यह आवश्यक था कि किसी प्रकार गाव म दोनो दला म समझौता कराया जाय। निश्चय ही जमींदार ठाकुरसिंह ता आसानी स न मानगा—अपा बड़ लड़ा लाद गए अपमान क कारण। लकिन सूरजमनी ने मन म सोचा कि सौभाग्य स उसन स्वय दोना लडको को अछूता क घरा म आग लगाने की सीधी कायवाही की सलाह नही दी थी। बल्कि उसन जान-बूझ कर एस शब्दा क प्रयोग स अपन आपको बचाया जो उस दोना पक्षा का समथक दर्शाए। इसलिए शायद वह बीच-बचाव करा सक।

उसन अपन दाए हाथ की हथेली का ऊपर उठाकर आँखो पर छाया करत हुए बगुल की तरह गदन उचकाई और देखन का प्रयत्न

किया कि क्या हो रहा है। उसे बस यहा दिखाई दिया कि धूलीसिंह के ऊपर उठे हाथ आम के पेडा की शाखा से उलझे हैं और फल तोड़ रहे हैं। अब उसे एक काम करना था—वह जाएगा और लबरदार से मंदिर के लिए कुछ आमो की भेट मागकर बातचीत शुरू करेगा। सच तो यह है कि उसे धूलीसिंह की पिछले दिनो की उदारता के आधार पर यह विश्वास था कि यह भेंट तो बिना माँगे ही मिल जाएगी।

आमो की प्राप्ति के आकर्षण-वश पडित सूरजमना कुछ गज की दूरी पर नाम के पेड के नीचे रखी हुई अपनी सूखी लगोटी पहनने के लिए चल दिया। उसने इस वस्त्र-परिवर्तन मे समय न लिया—हर दिन की तरह जब वह अपनी एक लगोटी बडी देर मे बाधता था जिसमे औरतें उसके नग्न शरीर के दर्शन कर सकें। आज उसने शीघ्र ही शरीर पोछा धोती पहना गीली लगोटी को निचोडा और अपना सामान लेकर आगे चल पडा।

जब तक पडित सूरजमना भाडो तक न पहुँचा था वह निश्चित था पर वहाँ पहुँचा नहीं कि उसका हृदय धडकने लगा।

किसी को उसके आगमन का पता न चला क्योकि धूलीसिंह की उसकी ओर पीठ थी। लडके अलग अलग ढग पर पत्थर तोड रहे थे, और औरतें आम के पेडो के झुरमुट के नीचे अपने सुख-दुख कहते या आगे सुनती रही थी।

पडित सूरजमना को प्रयपूर्ण ढँग से खाँसना पडा।

सहज भाव से धूलीसिंह का सिर मुडा। उसने पुरोहित के रगडकर चमकाए हुए शरीर को देखा और फिर मुस्कराता हुआ उसकी ओर देखने लगा।

आमो! आमो! पडित सूरजमनी जी आपकी ही तो कमी थी।

"राम जी की भाई!" पुरोहित ने उत्तर दिया।

उसके बाद थोडी देर तक शांति रहा। इन क्षणो मे दोनो ऊपरी भावभगिमा के अलावा समझौते की-सी बातचीत शुरू करने के लिए

अवसर टटोलन लगे।

आइय—हम आपको मन्दिर के लिए कुछ आम अवश्य लेन चाहिए। —धलीसिंह क कहा। वह प्रकृति से उदार था इसलिए *उसन निश्चय किया था कि विरोधी दल क प्रत्यक व्यक्ति का अपन* हृदय की विशालता दिखाकर अपनी ओर जीत लेगा।

लबरदार धूलीसिंह क वक्षो का फल तो मीठा ही होगा! —सूरजमनी न उत्तर दिया।

'अच्छा! तो आओ और देवताओं क लिए चलवा तो लत जाओ। —धूलीसिंह न कहा।

पुरोहित क पाव रखन की जमीन तयार हो गई थी।

निश्चय ही तुम तो यहाँ सारे गाव को जीवित किए हुए हो। भगवान दरिद्रनारायण साकार हो गया है—इन चमारो म!

धूलीसिंह न केवल सिर हिला दिया।

ब्राह्मण न कृत्रिमता स कहा— हर एक को यहा काम करत देख कितनी प्रसन्नता होती है।

अब धलीसिंह बोला— तुम्हारी दया से लड़क बच्चे अच्छा काम कर रहे हैं। निक्क बाद छविराम और नक्कर—यहाँ तक कि कान्ति दसरथ न भी काम करन की आदत सीख ली है। और मजनू और लछमन भी व रहे। यह बीमारी तो छूत से फलती है। ख्वाजा गजराज भी आ गया है। मामराज चपरासी जो दहली से छुट्टी पर आया है वह भी काम पर लगा है। और मित्र बन्ई नरसिंह को भी कहाँ भूल सकते हैं।

अचानक पण्डित सूरजमनी ने सुजातीय हिन्दुओं और विजातीय अछूतों क एक साथ काम करन क अद्भुत दृश्य की प्रशंसा की साक्षी दकर सराहना आरंभ कर दी।

तुम वास्तव म धन्य हो लंबरदार धूलीसिंह। जसे गीता म श्रीकृष्ण न कहा है—जो भी मरे पास आते हैं उन सब को मैं ग्रहण

कर लेता हूँ। तुमने भी इन लडकों को अपने में समाविष्टकर लिया है और काम के प्रति अपने अनुराग के द्वारा तुमने सिद्धकर दिया है कि तुम सच्चे कर्म-योगी हो। तुम्हारी घरवाली नियम से मंदिर आती है और अपने कर्मों के फलस्वरूप उसने परमेश्वर का आशीर्वाद पाया है। आज सब से अधिक आवश्यकता इसी बात की है कि हम अपनी सरकार को अपना जीवन निर्माण करने में सहायता करें। हम दीवान रूपकृष्ण के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए।

पूजा के लिए भेंट लेकर फिर आऊंगी —सत्ति ने थोडी दूर से कहा। वह उन आमों में से जो उसके पति ने अभी इकट्ठे किए थे और जिन्हें उसने और भिक्खु की मां ने एक ढेर में जमा कर रखा था—एक टोकरी भरकर ले आई।

पंडित सूरजमनी की आँखों में चमक आ गई। उसने टोकरी को थामते हुए कहा—

ईश्वर करे तुम चिरंजीवी हो। तुम्हें भगवान राजी रखें सत्ति।

यह कहकर वह मुड़ने ही वाला था कि बन्तासिंह ने उसे जाने से रोका—

नहीं-नहीं। यह टोकरी तो तुम अपने साथ ले जा सकते हो पर कुछ फल हमारे साथ यहीं बैठकर भी खा लो। आओ लडको। हथौड़ा चलाना बन्द कर दो। पहले आम खाओ।

लडकों के पेट में अन्त दर से वह लोट-पोट हो रहे थे पर वह काम न छोड़ते थे क्योंकि हथौड़ों की चोट की लय और ताल ने उनको वशी-भूतकर रखा था। लेकिन भिक्खु नम्बरदार के बुलाने का अर्थ समझ खिलखिलाकर बोला—

अरे! आ जाओ! कुछ लोग तो प्राण के नाम प्रार्थनाकर सुन पाते हैं और कुछ भाग्य से—खास तौर पर यदि कोई धर्मात्मा उनकी तरफ आ निकले तो।

वे सब भी आ गए—पुरोहित का कृत्रिम आदर से हाथ जोड़ते हुए और एक-दूसरे की ओर मुह छिपाकर मदिर म पूजा करने वाले पुजारी की हसी उडाते हुए।

धूनीसिह ने ललकारते हुए कहा—

आओ लडको ! टूट पडो !

और यह कहकर वह अपने कड़े हाथों से आमों के पचायती ढेर पर पिल पड़ा।

आ जाओ—आगे बढ़ आओ। पण्डित सूरजमनी बरना लड़के सबके सब बनिया आम हम से पहले हड़प लेंगे।

चाहे पुरोहित ने ढेर म हाथ तो नहीं डाला फिर भी उस लबरदार के हाथों से फल स्वीकार करना पडा। कुछ भी हो छुआछूत का प्रति बध तो टूट सा गया क्योंकि अछूत के स्पर्श किए हुए आम ब्राह्मण को खाने पड गए।

धूनीसिह स्वय भी इस छुआछूत के बधन को तोडने के लिए इसी प्रकार की धार्मिक अनुमति चाहता था।

आह भिक्खु ! काम करने म राक्षस !—आओ ! ये लडके तेरे लिए कुछ न छोड़ेंगे। —वह चिल्लाया।

उसका सहायक भिक्खु अब भी हथौड़ा चला रहा था।

अगर बोतल मिल जाय तो यह सर के बल भागा चला आएगा। —बाबू ने व्यग्य किया।

भिक्खु ने उत्तर दिया—

यह तो पक्की बात है कि मैं पान म तुझे मात दे सकता हू।

फिर उसने हथौड़ा फेंक दिया पण्डित जी को हाथ जोड़े और हाथ धोने के लिए उस पानी का ग्रार घन दिया जिसे उसकी मां गगरा म लिए खड़ी थी।

बाबू ने व्यग्य करते हुए पण्डित सूरजमनी के कहे हुए वाक्यांशों को दोहराया—

नवरदार धूलीसिह के खेत के ग्राम मीठे हैं!

निश्चय ही। —दसरथ ने कहा।

भग गिवराम न टिप्पणी की—

दुमुहा साप कही का।

नहा—साप नही मढक। तभी तो कुए मे भाडी पर फुदकता हुग्रा यहाँ तक ग्रा गया! —बानू न कहा।

ग्राश्चय की बात है—चीटिया के भी पर निकल ग्राए हैं। —बूढे नवर न ग्रपनी दाढी पर गिर ग्राम क पीले रेशो को हाथ स साफ करते हुए कहा।

बानू न हल्के से कहा—

ग्रब तो तू चिडिया की तरह ची चीकर रहा है। पहले कभी उसके सामन एक शब्द भी न बोल सकता था।

जा जा बुड्ढ! तूने ग्रपना मुह सिवाय ईश्वर से एक ग्रौर लडका माँगन क कभी ग्रौर भी खोला है?—चाह नर पहल हा छ बेट हैं।

भिक्खु न नवर को खुश करन के लिए कहा—

ग्ररे! भ्रात। परिश्रम स धन मिलता है।

निश्चय हा। लछमन न कहा। धूलासिह का बटा ग्रछूत लडको म ब्राह्मण का निरादर करन की भावना को प्रोत्साहन न दना चाहता था।

हाँ-हाँ! ठीक तो है। मजनू न भी रक्षात्मक ढग स कहा।

सन्ति भी बोल उठा— ग्राखिर तो वह बुजुग है।

भिक्खु की माँ लक्ष्मी न परामश देते हुए कहा—

यह चालाक चौकडा बुढापे का वह ग्रादर नहीं करती है जैसे कि हमारे जमान म लोग करन थ।

पूनीसिह न चटखारा लेते हुए कहा—

बावई—मेरी पाठ पीछे य मुझे पवौनी नाक वाला कहत हैं। ग्रौर मैं तो लडकपन द्वारा बापू का पूरा सम्मान करन क पक्ष म हूँ। बस मेरा ध्य का विधान हो यह ऐसा पाठ है जो हम सीखना है। निठल्ले

व सब भी आ गए—पुरोहित का कृत्रिम आन्र से हाथ जाडत हुए और एक-दूसरे की ओर मुह छिपाकर मन्दिर म पूजा करने वाले पुजारा की हसी उडाते हुए ।

धूलीसिह न ललकारत हुए कहा—

आओ लडका ! टर पन्ो !

और यह कहकर वह अपन बन्ड बड हाथा म आमा क पचायना ढर पर पिल पडा ।

आ जाआ—आग बन आआ पन्डित सूरजमनी वरना नडक सबस बन्यिा आम हम स पहल हडप नेंग ।

चाह पुराहित न ढर म हाथ तो नही डाला फिर भी उसे लबरदार क हाथा से फन स्वीकार करना पडा । कुछ भा हा छुआछूत का प्रति बध तो टूट-सा गया क्योकि अछूत के स्पर्न किए हुए आम ब्राह्मण को खान पड गए ।

धूलीसिह स्वय भा इस छुआछूत क बधन का ताड्न क लिए इसी प्रकार की धार्मिक अनुमति चाहता था ।

आह भिक्खु ! काम करन म रा रास !—आजा ! य नडक तरे लिए कुछ न छाडेंग । —वह चिल्लाया ।

उसका सहृन्य भिक्खु अब भी हथौडा चला रहा था ।

अगर बालत मिल जाय ता यह सर क बल भागा चला आएगा । —बाबू न व्यग्य किया ।

भिक्खु न उत्तर न्यिा—

यन ता पसरा बात है कि मैं पान म तुझे मात द सकता हूं ।

फिर उसन हथौडा फक न्यिा पन्डित जी का हाथ जाड और हाथ धोने के लिए उस पानी का आर चल न्यिा जिस उसकी मा गडवा म लिए खन्ी थी ।

बाबू न व्यग्य करत हुए पन्डित सूरजमनी क कहे हुए वाक्यान्श का दाहराया—

'लबरदार धूलीसिंह के खेत के आम मीठे हैं!'

निश्चय ही।'—दसरथ ने कहा।

भगे गिवराम न टिप्पणी की—

दुमुहा साप कहा का।

नहीं—साप नहीं मन्व। तभी तो कुए से भान्नी पर फुन्कना हुआ यहाँ तक आ गया!—बाबू न कहा।

आश्चय की बात है—चीटिया के भी पर निकल आए हैं।—बूढे गकर न अपनी दाढी पर गिरे आम क पीन रेग को हाथ स साफ करते हुए कहा।

बाबू न हल्के से कहा—

अब तो तू चिडिया की तरह ची चीं कर रहा है। पहन कभा उसक सामन एक गान्द भी न बोल सकता था।

जा-जा बुडढे! तूने अपना मुह सिवाय ईश्वर से एक और लडका माँगन के कभी और भी खोला है?—चाह तरे पहल ही छ लडके हैं।

भिक्खु न गकर का खुग करने के लिए कहा—

अरे! गात। परिश्रम स धन मिलता है।

निश्चय ही। लछमन ने कहा। धूलीसिंह का बगा अन्न लड्का म ब्राह्मण का निरादर करने की भावना को प्रात्साहन न देना चाहता था।

हाँ हाँ! ठीक ता है। मजनू न भी रचनात्मक ढंग स कहा।

सन्नि भी बोल उठी—आखिर तो यह बुजग है।

भिक्खु की माँ लक्ष्मी न परामर्श दते हुए कहा—

यह चाडाल चौकडी बुढाप का यह आदर करती है, जो कि हमारे जमाने म लोग करते थ।

धूलीसिंह न चटखारा लेत हुआ कहा—

बाबई—मेरी पीठ पीछे य मुझे पकौडी नाक वाला कहते हैं। मैं तो लडकपन द्वारा आयू का पूरा सम्मान करता हूँ पर इन्हें। इन वसा व्य का विचार हो एवं लगा पाप है जो हमें म पता है। [illegible]

हाथ वसे बडी-बडी भाव भगिमाकर सक्त है पर हथौड वाल हाथ पूरे क पूरे पवता को ताड सकत है !

इन अतिम ग्न्ना को सुन नम्क अपन काम पर नौट ग्राए।

लवरदार उनकी स्फूर्ति से भरी हरकता को दख रहा था और साथ साथ वह ग्नक्ति भा जिसस व हथौन्ना चना रह थ।

उसन उनकी ग्नक्ति पर हा ध्यान केंद्रित रखा। उसा ढग स जस उसने उनकी जागरकता का ग्रपन म समो निया था। उन ग्रद्गुत नवयुवका को बस ग्क बार प्रोत्साहित करना होता है फिर ता उनम कभी न समाप्त हान वाली ग्नक्ति का गुप्त स्रोत खुल जाता है। ग्रपने ग्रधेन्न गरार को दख लवरदार को उनस ईर्ष्या होन लगी।

वह उनको सुनाकर कहना चाहता था—

ग्रा ! मर बढिया साथिया ! ग्रा मरे वहादुर दोम्ता ! निन्चय ही तुम पुरप हा और पुरप भा इम कठोर मिट्टी क ।

चौदह

मिरदु की आँखों में प्रकाश की झलक आई—जैसे ही वह काम पर आकर जुटा। किसी नई चिंता से उत्पन्न हुए मानसिक तनाव की वह छाया थी। हथौड़ा चलाते हुए लड़का और उसके मन में प्रसन्नता का भाव रचा घूम रही थी चाहे दूसरी ओर यह बात भी सही थी कि कुछ भी नहीं कर सकने की पराजित भावना को भी वहाँ कोई स्थान न था। उसे क्या चाहिए वह न जानता था। उसकी तनी हुई भौंहों से केवल पसीने और शक्ति का जन्म होता था। उसकी आत्मा में उल्लास था—कि वह इतने ही जोश से सड़क पर भी काम कर सका जिस जोश से उसने अक्सर अपने आपको शराब में डुबाया था या जिस जनून से वह गाँव में एक सिरे से दूसरे सिरे तक निरुद्देश्य घूमता फिरता था।

लेकिन उसे यह भी पता था कि उसकी नई उम्र की स्वच्छंदता और लापरवाही तो कभी की खो चुकी है और गाँव का नई पाठशाला—सड़क में उसके पौरुष की शिक्षा और परीक्षा हो रही है। कुछ समय तक वह यूं ही तनाव में और अकारण परेशान-सा बैठा रहा। फिर उसे पारदर्शी शीशे की तरह साफ दिखाई दिया कि मुट्ठी भर आदमियों के पत्थर तोड़ने से तो सड़क अपने निश्चित समय में न बिल्कुल बन सकेगी। भविष्य का यह रूप उसकी आँखों में एक बड़ी चट्टान के समान था और इस रूप में साक्षात्कार उसने अपने आपको स्वप्न-सा महसूस किया, जैसे कि वह बड़ा देर से किसी दौरे में मूर्छित हो गया हो, और अब होश आया है। वह अपनी आँखों के भंवर में डूबा रहा और उसके माथे पर के बाल टटोलने लगा—पसीने की धरातल में उसका जो कि

आने वाला समय ही बता सकता था। भिक्खु ने कहा—

लबरदार! अगर औरतें हमारे साथ मिल जाएं तो गाँव के बाहर के रास्ते पर कंकड़ बिछाए जा सकते हैं और साथ साथ पत्थर भी टूटते रहेंगे।

धनीसिंह बहुत देर तक स्तब्धता की गहन अवस्था में बैठा रहा। उस अवस्था में जिसमें स्वयं उसका आत्म बने टूटते हुए पत्थरों की धूल की तरह धराशायी हो गया था। वह और मानसिक उथल-पुथल न सह सकता था।

सुष्टि ने भिक्खु के शब्द सुन लिए थे और उसके होंठ हिले जैसे कि वह कुछ कहेगी। पर पत्नी की नाक वाले धूनीसिंह का उन्मन का गांठ में बंधे देख वह अपने आपको बोलने से रोक गई। अपने स्वामी और कर्णधार के सामने वह और क्या करती?

अपने अविश्वासों की चोट से बिलबिलाता धूनीसिंह स्वयं ही सुष्टि की ओर मुड़ा। उसने उसे ऐसे देखा जैसे अपनी पूरी व्यथा को उसके रोम रोम में समावेश करना चाहता हो।

इस पर वह एक हताश मुद्रा में उसकी ओर देखने लगा और कहा— एक और एक दो होते हैं और दो और दो चार हाथ। हम टोकरियाँ दे दो और हम सड़क के बिस्तर पर लड़कों द्वारा तोड़े हुए पत्थर बिछा देंगे।

निश्चय ही! लक्ष्मी ने कहा— लेकिन हम तो टोकरियाँ भी बना सकते हैं। आखिर हम चमार लोग उम्र भर करते क्या ही रहे हैं? और यह कहकर वह अन्य औरतों की एक-दूसरे से सटी आकृतियों की ओर देखने लगी जो आम के झुरमुट के नीचे अपनी झोंपड़ियों के बाहर बैठी थीं।

उन लज्जा के बोझ से दबी स्त्रियों ने अपनी सहमति देने के लिए भारी घूंघटों के नीचे अपने सिरों को हिलाया और अपने बच्चों को पेड़ से बंधे झूलों में लोरियाँ देकर सुलाती रहीं।

पन्द्रह

मजनू को लगा कि सूय को जलाने वाला ताप उसकी खोपड़ी से उतरकर उसकी गुद्दी जाभ पर आ गया है। उस और दिनों के सूय की अग्नि की प्रचण्डता की पूण अनुभति थी क्योंकि वह अपने पिता की फसलों को माफ करने और फटकने के समय कई बार खेतों पर गया था। गड गडा करता हुआ पानी का घूट उसके मुह की रसाई को दूर कर देता पर अपने मुह की स्वादहीनता के कारण वहाँ कडवाहट के चिह्न थे—जसे घूलीसिंह ने उस धूम्रपान को विवश किया हो। पेट के पानी-पानी होने की चेतना के अतिरिक्त उसके गले में कुछ तन्तुओं का खिचाव महसूस होता था। पडित सूरजमनी के जाने के बहुत समय बाद तक उसने अपनी पीड़ा को दबाकर रखा था। अपने शरीर के बुखार को उसने जोर-जोर से साँस लेकर भोगने दिया था जिससे कि उसके हाथ का हथौड़ा अपना काम करता रहे और वह पसीने में एसे नहाता रहा जसे कि वह नरक की वतरनी नदी के अमृत जल में नहा रहा हो जिससे कि वह धुलकर पवित्र हो जाय।

और तब ही उसे लगा कि जसे यम के दूत उसके प्राण दबोच रहे हों। वह सहारा खोजने लगा उस मधुर और विचित्र भाव को जो माता के लिए उसकी कामना का रूप था। वह माता जो लछमन की बहिन और उसकी सगेनर थी। चंचल माता हो तो थी जिसने अपनी पीठ मोड़े रखी जब तक कि वह वहाँ रहा। एक क्षण को भी उसने अपने निश्चय भाव को ओझल न छोड़ा, जब कि पहले सुनहरी स्त्रियों में अपना घूघट

डालन स पहन उस अपना चेहरा आधा छिपाकर इस नानानता की लोहे की दीवार म छेनकर दता थी।

हथौडे से ऊपर और ऊपर और उठकर उसकी आखें क्षितिज का टटोलन लगी। वहाँ की चकाचौंध न उस हगा सा दिया।

और उस आभास हुआ कि अछूत काम करन क साथ-साथ एक गीत भी गान जा रहे है। व अपन आप म मस्त और बाह्य जगत क प्रति अचेत हैं और अपना इच्छा क विरुद्ध उसने अपन मन म हथौडे का गक्ति माली और उनकी आवाज का सराहना की।

वह सोचन लगा कि काश! मरा पिता भी इतना उदार होता जितना कि उसक मित्र लछमन का पिता धनीसिंह था। स्वय उसका बहिन उसक मित्र की ओर अधिक अनुराग रखनी थी—जितना कि माता क हृदय म उसक प्रति नहा था। फिर उसकी मा भी इतना विशाल हृदया कहाँ थी जितनी कि सदिति। जस-जस मजनू अपन भावा निरत क माग पर बढ़ता जाता स्वाय उसके मस्तिष्क पर अपनी काली चादर डालता चल रहा था।

वह साच रहा था—जावन न मुझ कठोर बनाया है—इसलिए कि गाव क जमीदार का लडका होने क नाते मुझ औरा पर शासन करना है और यह काम कठारता स ही हो सकता है। विशष तौर पर इन लागा पर शासन करना जा सख भन हा पर काम करना और अपनी रोज़ी कमाना जानत हैं।

एस ही कुछ इधर उधर की बाता क सिवाय उस चमारा क विरुद्ध अपन दृष्टिकाण म कवल खाखलापन नजर आया। क्या नहीं! उन सबका घूलासिह क नाच शरण मिला और आज भा व जावित है चाहे उनक घर तनकर राख हा गए और सरकार उनका पाठ पर थी। उनका सारा सपत्ति नष्ट हा गई पर फिर भा कुछ बच गया। वह था उनका बाहु-बल!

मजनू का यकायक एसा लगा जस जावन व उसका तरव उसके

पास से ही गुजर जाएगा और वह उसके स्पर्श मात्र के लिए तडपता रह जाएगा। उसको इसकी पूर्व सूचना जब मिला जब कि दूसर पुरुष अपने रहस्य उसको इस डर से न सौंपते कि कहीं उनका सम्मान नष्ट न हो जाय।

आत्मसम्मान के इस मतान्तिवात में वह माला की प्रतिच्छाया की ओर कातर सा भुका अपने मन में वह जादुई नुस्खा दोहराता जो पण्डित सूरजमनी ने उसे किसी भी स्त्री का प्रेम जीतने के लिए बताया था। मजनू ने पुरोहित को नहीं बताया था कि वह किस के लिए यह प्रेम वशीकरण मंत्र माग रहा है पर वह जान गया था कि यह माला को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए था। उसने बिना शब्द उच्चारण किए ये चमत्कारिक मंत्र दोहराया—

मैं तुम तक युगों को पार करता चला जाऊंगा।

और वह अपनी आंखों में उस शक्ति के संचार की प्रतीक्षा करने लगा जो माला को अपना मुह या अपनी आकृति ही उसकी ओर फेरने के लिए बाध्य कर दे। एक क्षण तो उसे अपना हृदय मंत्र के एक एक शब्द के साथ ऊपर उड़ता दिखाई दिया।

लेकिन माला न मुडी और सखि के पास बठी रही। वह यानी में कंकरों को मसूर की दाल से अलग कर रही थी।

माला उसकी है। इस विचार में जितना भावावेग था उसके अभाव में मजनू की आत्मा उतनी ही भूखी तड़प रही थी। उसने अपने हृदय के एक-एक जख्म के बारे में सोचा और उसका मन चाहा कि वह विरह-गीत गाए। पर यह हास्यास्पद होगा—उसके उसके स्वाभिमान ने विश्वास दिलाया। वह आह भरकर रह गया। उसके मित्र लक्ष्मन ने कहा—

यदि सांस लेने में कुछ मुश्किल हो तो अपनी पगड़ी का सिरा अपने मुंह पर बांध लो और अपना दम घोट लो।

मजनू ने विरोध किया—'तो तुम्हें मेरा मरना पसंद है ?

जीजा जी—तुम तो अपने पिता की जूता की मार से डरते हो। सजनू न अपने आपको बचाते हुए कहा।

बको मत ! तुम्हारी खातिर मैंने अपना सब कुछ खा ंिया। व दूसरे लोग हम पर हस रह हाग और

और क्या ? नछमन ने पूछा।

और यह हमारा नन देन का सबध ममाप्त—यदि माना मुभम रूप्ट ही रही। तू उसे भिक्षु को सौंप दना।

अगर तूने मरी बहिन को एम गाली दी तो मैं तुझे यहा औ अभी कत्ल कर दगा। —नछमन चिल्लाया।

बस ! बम ! बम ! धनीसिंह की आवाज पत्थ पर चलता हुई बोझिल वायु पर तरती हुई आई। उस ममय माता मसूर म स कंकरा को बीनता हुई ऐसी मुद्रा म बठी रही जस कि वह सिद्धार्थ हा ना पिछला रात क बुरे सपन क बार म चितित है।

कभी-कभी वह ऊपर दख नेती और अपनी बडी बडी आखा स पडा के नीचे काम करते पुरुष और स्त्रियों का अपनी कल्पना म उना रती। उस थाडी थोडी समझ आती कि यह सब उसके पिता की शक्ति और उदारता का परिणाम है फिर भी उस शून्य म जो उन्ह और नछमन का हरिजना म अलग करता था उस लगा जसे नछमन और व दोनों ही बुरे हैं और उस झुरमुट की शाति म उसे यह भी आभास होता कि आग लगाने वाला और मन्द के लिए पत्थर तोडने वाला की इच्छा-शक्तियों म कितना विरोध है। यही कारण है कि उसके पिता चिल्ला पडे थ—बस ! बस ! बस ! —उसके भाई और उनके बीच म।

बापू की आवाज स उसका अतरात्मा काप उठी थी और उसकी इन्द्रियों का अस्तित्व वर्जित विचारा स टूट गया। उसने मन म आशा का कि भविष्य म काई आग कर्ह चिल्लाना गाली-गलौज और धम किया न जाएगा।

और अपने हाथ के काम से भटककर उसने सोचा कि वह 'उनकी ओर कभी भी न देख सकेगी क्योंकि वे तो क्रोध और मिथ्याभिमान में कठोरतम हो गए हैं।

वह अपने माथे पर घूंघट ठीक करने के लिए रुकी और फिर अपनी दाल बीनने में लग गई। उसने सोचा कि घूंघट गिराकर उसने अपने और उस आदमी के बीच जिससे उसका विवाह होना था एक दीवार खींच दी है।

अपने पिता की सराहना की भावना से उसने मन-ही मन में बस! बस! बस! कहा और फिर उसने अपनी आंखों से परे उस अभेद्य पर्दे को देखा जो उसने अपने और उनके बीच में डाल लिया था।

अचानक एक स्वप्न ने जो उसने पिछली रात को देखा था सताना शुरू कर दिया। उसे याद आया कि स्वप्न में वह पानी माग रही थी—ठीक ही जैसे कि वह जब बच्ची थी प्यास होने के समय माँगती थी। माँ दूर तक भी दिखाई न देती थी। बस वो बाँहें फलाए उसे गले लगाने को खड़े हुए थे। उसने अपने हाथ पानी के लिए फलाए पर उन्होंने पानी न दिया बल्कि चुबन की कामना की और वह प्यास में मर सी गई—एक ओर पानी के लिए मुह के नीचे हाथ लगाए जब कि वो आए और उन्होंने उसके सिर से दुपट्टा हटा लिया।

लज्जा की सहज भावना से स्वप्न के बीतने के इतनी देर बाद भी उसने मुह पर घूघट फिर डाल लिया जैसे वह कह रही हो—नहीं! नहीं!

उसे यह भी याद आया कि स्वप्न में बिजली ने आकाश को चीर दिया था। उसने किसी भी वस्तु से चिपटने के लिए अपना हाथ फैला दिया था और आखिर एक पेड़ को पकड़ लिया था।

सोलह

ठाकुरसिंह के शरीर का तापमान ग्रीष्म ऋतु के मध्यकाल और गाँव के तनाव की स्थिति से भी ऊपर उठ गया। उसे तेज बुखार हो गया।

अपने वर्ग के साथ छोड़ जाने पर उसे सन्देह हुआ कि शायद वह स्वयं ही बड़ा ज़िद्दी रहा है। पर ईश्वर ने जो जैसा है उसे वैसा ही बनाया था इसलिए वह कैसे स्वीकार कर ले कि नीच जाति वाले चमार सुजातीय हिन्दुओं के समान हैं। वह चिरकाल से अपने विश्वस्त सत्य को पकड़े था। उसने अपनी आत्मा को उत्तर दिया कि पीढ़ियों से उसके पूर्वज कर्म में विश्वास करते चले आए हैं—कर्म वह जो पिछले जन्मों के कर्मों के फल के अनुसार इस जन्म का निर्णायक है। वह काँप उठा जैसे वह बर्फ की तरह ठण्डा है चाहे उसका शरीर इतना गर्म था जितना कि गण्डासिंह लुहार के कारखाने की कोई जलती हुई नाल की सलाख। यह सब इस कारण से था कि ईश्वर के कोप का भय उसकी एक साँस को आ दबोचता तो सरकार का आतंक दूसरी को। पर जो तराजू उसने अपनी कल्पना की आँखों के सामने लटका रखी थी उसमें यह पलड़ा उस चिंता के बोझ से हल्की थी जो उसको सरपंच या पाँच आदमियों की सभा का प्रधान पद छिन जाने से थी। उसके सामने दो मार्ग थे। उनमें से एक सही मार्ग चुनने की समस्या उन सब पगडंडियों में मूर्त हो उठी जिनमें चमार लड़के पत्थर तोड़ रहे थे और दूर क्षितिज के पार दहना शहर को जाने वाली सड़क फैला दिखाई देता था। फिर यदि यह बात सच थी जैसे कि बच्चों ने उसे बताया कि पण्डित सूरजमल दरबार से मिलने गए थे तो कोई भी मनुष्य बिना प्राणामग किए तो इस धर्म खंडन की घटना को सुन नहीं सकता और यदि उसकी स्त्री को खबर कि पुरोहित ने चमार लड़कों से आम लेकर खाए मच

है तो पृथ्वी को फटकर पूरे गाँव को निगल जाना चाहिए क्योंकि इसका अर्थ तो यह हुआ कि कलियुग आ ही गया। इन सब विचारों ने ठाकुर मिट्टू को चक्कर दिया जैसे कि वह बेहोश होने वाला हो।

उसने कपकपाहट से बचने के लिए कम्बल ओढ़ लिया। उसे पसीना आने लगा। वह हैरान था कि एक ही क्षण उसको गर्मी और ठण्ड क्या लगती है।

उसकी स्त्री ने रुक्मणी के हाथ छाछ का गिलास भेजा की तरह भेज दिया।

उसने हाथ हिलाकर उसे स्पष्ट भाव से दूर हटाया और सूर्य के प्रकाश की भयंकरता से अपने आप को बचाने के लिए आँखें बंद कर लीं।

बापू! तुम्हारा सिर दबा दूँ क्या? —लड़की ने पिता पर झुककर हुए कहा।

नहीं नहीं! जा अपना काम कर। —उसने कमरा से उत्तर दिया। इन शब्दों के होठों से निकलते निकलते उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी आँखें चमक उठीं जैसे कि गर्म-गर्म आकाश से बिजली की लपटें अचानक फूट पड़ी हों। और उसने आवाज सुनी थी—बूढ़ों के निराश्रय वासना और घृणा, लोभ और मदिरा-पान के विरुद्ध। वह चिल्ला पड़ा—

तुम सबको मौत आ जाये!

भगवती ने बात काटते हुए कहा—

हाय! ईश्वर के प्रकोप से डरो! ऐसी-ऐसी गालियाँ दे रहे हो।

रुक्मणी बापू का सिर दबाने के लिए जरा ठहरा रहा—इस आशा में कि माँ की चेतावनी के बाद शायद बापू ढीला पड़ जाएगा।

लेकिन बापू ने बरामदे के सिरे पर खड़ी अपनी स्त्री की ओर देखकर कड़ुता से कहा—

'उस सतान से जिसको इतने कष्ट सहकर पाला है और क्या आशा हो सकती है? यह भी हमें ही एक दिन छोड़ जाएगा जैसे कि वह

छोड गया है।

भगवती बोली— लडकी तो घर म पाहुनी होती है।

उसने कहा— पगली माता पिता सतान दूसरो क लिए नही पालते बल्कि इसलिए कि वह उनकी बुढापे म सेवा कर। —और वह एक बीमार शेर की तरह पीडा स ऐंठ गया और कराहता हुआ पीठ क बल लेट गया।

रुक्मणी बूढे बापू की उस समय की मसता भली भांति समझती थी और उस उसकी ईर्ष्या स उत्पन्न हुई भयानक व्याकुलता स घृणा था। यहा तो उसकी पीडा का कारण था।

अभी उसने लेटकर एक क्षण हा आराम किया था कि उसके मन म कडवाहट की लहर फिर ऊपर आ गई और वह सोचने लगा कि यहा तक नौबत पहुच गई है कि स्वय उसकी स्त्री उसकी बात काट रही है। उसने अपने आप को कुहनियो पर उठाया सूखे मुह म स चौक म बलगम थूका और फिर चिल्लाकर बोला—

ला मेरा हुक्का ला। जानवरो को चारा तो डाल दिया होगा?

रुक्मणी बापू क अचानक हिंसक व्यवहार को देख अनिच्छा मे काप उठी और निवास के लिए मा की ओर देखने लगी।

भगवती न निराश स्वर म लडकी स कहा— इनक हुक्के की चिलम ता ल आ।

ठाकुरसिंह को इस बात पर क्रोध आ गया कि उसकी स्त्री न उस को सीधा उत्तर न दिया। वह उठकर बहकने लगा—

सारी दुनिया मेरे खिलाफ हो गई है। जो बीज मैंने बाया था उसस जहरीले पौधे ही फूटे है। यह सब इसलिए हुआ कि उनको ईश्वर का कोई भय नहीं। पर इन्हें एक न एक दिन भगवान दण्ड देगा— अवश्य। एक धर्मपरायण मनुष्य का शाप है तुम सब पर। उस ब्राह्मण पर जो एक जगह बैठता है और दूसरी जगह मूतता है। उस मेरे बेटे सजनू पर भी। और काश तुम दोनो भी विधवा हो जाओ! कुत्त

मुझसे कहीं कम। कहाँ हैं वे सब मेरी बिरादरी के आदमी—रामनिवास, श्यामम गजराज और तेजू ?

इस रोषपूर्ण कथन के बाद वह एक हुक्का पीनेवाले की खाँसी के दौर में उलझ गया जिसके बीच-बीच में उसे बलगम थूकना पड़ा।

फिर वह लेट गया—अपने शरीर की गर्मी और थकान में लथपथ। मन ही मन गालियाँ और अस्पष्ट शब्द बोलता रहा— मैं अकेला हो रह गया हूँ इन सब में लड़ने को। अकेला—हे ईश्वर ! बिलकुल अकेला।

भागवती ने ठंडी साँस लेकर कहा—



परमेश्वर ! हम पर दया कर !

इसके बाद वह पीतल के बरतनों को राख से साफ करने लगा जिससे वे अपने रोगी पति के लिए दाल चावल की पतली-सी खिचड़ी बनाने को तैयार हो सकें।

पति-पूजा सजनू और रुक्मणी के पिता के प्रति वफादारी से पर उसे अपनी अंतड़ियों में खिंचाव-सा महसूस हुआ। उसके पेट में गड़बड़ था जो उसके कलेजे पर बादल की तरह घिर आई। उसने शून्य की ओर दृष्टि डाली पर सब निरर्थक—क्योंकि उसे अपने बेटे की शक्ल नजर न आई।

उसे इसमें संदेह था कि सजनू ने अपनी छाछ प्रतिदिन की तरह पी ली थी। कौन उसके लिए धूप में रोटी पकाएगा ? इसे यह भी पता न था कि उसके पास एक साफ धोती और कमीज भी है या नहीं—नहाने के बाद पहनने के लिए। निश्चय ही मालिक उसका अपने पुत्र की तरह ही ख्याल करेगा क्योंकि जितना छत्रपति घूरामसिंह की रक्षा कर सकती थी वह सजनू और माला का जोड़ा बनाए रखेगा—भागवती का यही विचार था।

लेकिन उसके मन के अन्दर जीभ के ऊपर भगवान के नाम की रट थी और उसके मन में थी रुक्मणी के भविष्य की चिन्ता—उसका आखिर क्या होगा ? वह सोच रही थी कि क्या कभी उसका पति—

जिसके नाक कान आँखें और जबान सबरे आग उगल रहे हैं—कभी भी ठन्डी छाछ पी सकेगा और रुक्मणी का हाथ लछमन के हाथ में देगा ? लछमन वह जो अपने पिता से जाकर मिल गया जब कि उसने सजन के पिता का अंत तक साथ देने का वचन दिया था। यही नहीं सजनू को भी दूसरे दल में बहकाकर ले गया।

भगवती भावनाय दृष्टि से ऐसे सोचती रही जैसे वह अन्न पर बैठी एक मुर्गी हो और उसका चेहरा चिंता की एक-पर-एक जमी परत के कारण पीला पड़ गया। उस अनजानी पर अनजान विपत्तियों का गम खाए जा रहा था। उसके हाथ यान्त्रिक रूप से बनना पर चल रहे थे और उँगलियों से राख चर चर होकर गिर रही थी। उसकी आँखों में खारे आँसुओं की कड़वाहट जो घुल गई थी।

आखिर उसकी त्वचा ने अनमनियम की अंतरात्मा का स्पर्श किया। वह मुड़ी और पास में बैठी रुक्मणी की उपस्थिति के प्रति चेतन हो गई। रुक्मणी खोई सी थी और छाछ का भरा गिलास वैसे का वैसा बरामदे के आले में रखा था। सूर्य की किरणें उसके चेहरे पर गिर रही थीं जिससे उसका साफ गेहुँआ रंग काला पड़ गया—जैसे उस पर ज्योति पड़ गए हों या जैसे उसके जन्म के अधिष्ठाता देव मंगल की अनिष्टमय आत्मा की छाया उसके चेहरे पर अपना पूरा प्रभाव डाल रही हो।

जा और जानवरों की रखवालीकर —भगवती ने उससे चीख कर कहा। वरना बापू चिल्लाएगा।

रुक्मणी हुमार से कंपायमान युवा वृक्ष की तरह एक तार के अनुरूप सी इधर उधर हिल गई। फिर उसने अपनी बाँहों को हिला डुलाकर कमीज को ठीक ठाक किया और पशुओं के कटघरे की ओर चल दी। उसका सिर मन की वेदना के भार से झुका था।

अपनी बेटी के गम से मुख चेहरे को देखकर भगवती को स्वाभा

विक भाव मे भगवान का नाम स्मरण हो आया। अब उसे यह सन्देह हुआ कि कही वह पिछले महीना म मगलवार को लन देना तो नहा भूल गई और तब पण्डित सूरजमना का उसके पति का छोड जाने का अधम काय उसी मगलदेव की आत्मा की प्रेरणा होगा। उस उसको भूला का उचित दण्ड दिया गया है शायद ।

इन पूजा सबधी स्मतिया म डूब हुए उसे अचानक याद हा आया कि रुक्मणा की जन्म पत्री जो अपशकुना से भरी हुई थी और निश्चय ही यह पत्री लछमन की पत्री स न मिला थी।

अनिष्ट की आशका म दबी और अमत्य देव और दानवा का अपन सामन मूत होते हुए देखती हुई भगवती न सोचा कि यदि वह एक बकरी की बलि चढा उसे चमारा म बाँट पाए तो एक ओर उसक पति का शाप जाता रहेगा और दूसरी ओर शायद उन लागा के मध्य जा धम का मानते हैं और जो अपन कमा का फल भोग रह हैं सम्भावना उत्पन हा जाय। निश्चय ही धम के अनुसार नीची जाति क लाग दरिद्र नारायण हैं—भगवान क निम्नतम अवतार जिनम स्वी तत्व ता हैं पर जिन्ह अनगिनत पार्थिव और मानवीय रूप य चार आन्द पटल है—इसस पहल कि व पूणता का आनन्द भाग सक और सवण और सुजात हिंदु बन सकें। उस अब यह विश्वास-सा हा गया कि पण्डित सूरजमना भी प्रभुता की ओर इगित करते गए क्योकि वह भी अपन व्याख्यान म चमारा का ईश्वर का—निम्नस्तर का महोग्र—अवतार बताते थ—देवात्मा रूपी वस्त्र की गरम निम्न कोटि की बुनावट। क्या न वह अभी ही चूल्ह पर खिचडी चढा कर मन्दिर चली जाय? बकरा की बलि से पहले की आवश्यक पूजा तो कर सकेगी वह।

वह धायन परा के बल जल्दी स खडी हा गई। मिट्टी क बतन को जिसम दाल-चावल थ चूल्हे पर धरा और साथ-साथ ईश्वर ह! ईश्वर परमात्मन्। कहना रहो।

सत्रह

प" रुक्मणा क परा का चाप सुन डकारन लग। लडका न विशाल काय टिट्टू और मिट्ठू बलो की पीठ को कोमलता स थपथपाया और उसी समय गाय पावती को भी गल क नाचे स आवाज लगा दी। इस पर पावती क बछड न रस्सी को खीचा और रुक्मणी की ओर अपना सिर जार स उठाया। वह बच्चे की तरह रो रहा था। रुक्मणा बछड क पास गई और उसकी नाक को हल्क स मला। उसन देखा बछड की आखें अधेरे म दीप सी चमक रही थीं।

बछडा गाय और बल सब अब एक साथ रभान लग। व रुक्मणी के प्यार को प्राप्त करन क लिए आपस म होड कर रह थ और मत की ओर छोड जान का वचन थ। इसलिए वह उनम स हरक स गल क ऊपर जाभ का कुडकुडाहट की आवाज म बाती।

महादेव ग्वाले का जो इन मलनियो को बाहर ले जाता था आज म दर हो गई था क्योकि बाहर सूय काफी चढ चुका था। उसने साचा कि यह पशुओं क सालन का और बाहर रहन का अच्छा बहाना है—उस समय तक जब तक कि वह ढोरो को महादेव को न सौंप द।

लक्ष्मिन ढोरो क डकारन और उनके उत्तर स दूर उस पता था कि उनको प्यास की पुकारें सुनती थी और वह हाना थी। उसके होठ फडक रह थ और उसकी राम राम आन होन वाल पति को देखन की इच्छा म उल्लसित था।

अधेर म उस मतिभ्रम म जो उसको टकटकी लगाकर देख रहा था

उसे लगा जैसे वो उसकी ओर देख रहे हैं—उस अनाज की बाली पर से जो कि उसकी ओर लहरा रही थी और उसके लिए उनका चाह का संदेश ला रही थी। उसे याद आया कि राधा और कृष्ण के युग में कई कवियों ने एक लड़की की कहानी को गीता में कहा है जो अपने प्रेमी से मिलने बाहर जाता है। उन्होंने मार्ग के खतरों का वर्णन किया बिजली की कड़क जिससे लड़की के हृदय को टकड़े टकड़े कर दिया और चमकने वाला विद्युत की धारियाँ जो उसको मापा की तरह बाद—उन सबको। लेकिन यह भी उन्होंने कहा कि यदि वह लड़की इन सब अग्नि परीक्षाओं में पार उतर जाती तो स्वर्ग भी उसके प्रेम की शक्ति के आगे झुक जाता और उसके अभीष्ट प्रेमी को देवता उसके पास ले आते। रात की प्रतिछाया उस कुएँ की ओर खींच रही थी—जैसे जादू भरी बाँसुरी की पुकार उसके शरीर को बुला रहा हो। उसकी आँखों में उस रचित दृश्य उसकी आँखों में हट। उसका

जैसे हो ये मरीचिका रचित दृश्य उसकी आँखों में हट वह वहाँ होने लगा।

वायुहीन पशु-गृह में होम की सुगंध आई और वह वहाँ होने लगा। वह अपने आपको चेतनाहीन होने से बचाने के लिए नीचे बैठ गई। जमीन के मानिया जिंद उसकी पतली नाक और माथे पर भनभन लग और उसने अपने दुपट्टे के पल्ले से अपना चेहरा साफ किया—जोर जोर से साँस लेते हुए क्योंकि कल्पना के पंखों की उड़ान एक बात थी और कृष्णा की यथार्थता जिस पर वह खड़ी थी दूसरी। उसके सामने था निर्दयिया का नाट का मनाने जिनमें उस ऐसा लगा—जैसे वह पिंजरे में है।

उस तो चोरी से बाहर निकलना होगा यदि वह योग्य वर के लिए भी पर का मनहूसियत से छुटकारा चाहती है। इसके लिए साहस की आवश्यकता है।—उसने सोचा।

रमणी ने अपने होंठों को बटकटाया और उठकर बटन की सोची वह जानती थी कि जैसे ही वह यहाँ से हिली दौर फिर से डकारेंगे और अपनी शिकायतें दोहराएँगे और उसको माँ उनकी शिकायतें सुनेगी।

इसलिए वह निश्चल रही। केवल अपनी आँखों में गर्मी में उतरते हुए ढोरों के उत्सुक कदमों की कल्पना करती रही जो महुए के छिलकों की भी परवाह नहीं करते जब तक कि खेतों की निर्जनता में वे मन्थर गति से प्रविष्ठ न हो जाएं और दलदल की शीतलता की ओर न चल दें। वे बड़े सींग वाले ऊंचे हिमार के बच्चे सिर उठाकर कम घास की चरागाह की ओर चल दिए। गाय और बछड़े गुनगुनाकर रह गए और आत्मियता की घुटी घुटी आवाजें जो किसी दिन से दिन की बातचीत की सुगंध देती थीं सुनाई दे रही थीं।

रुक्मणी की आत्मा उसकी थकी जवानी के माध्यम में चिन्ता उठी—

क्या? आखिर क्या—मर्दों की जाति को स्तन विशेष अधिकार प्राप्त है?

इसके बाद फिर वह शांति की चेतनाहीन अवस्था में लीन हो गई और उसका सिर उसकी गोद में डूब गया।

नहीं! नहीं! गर्म-गर्म घास का मोहा स्वाद उसके लिए न था। वह तो घर के चौके में काम करने के लिए जन्मी थी। केवल कुएं में पानी लाने के लिए—वह भी उसी गली में से जहाँ वह स्वतंत्र माता से रहती आई है। पर शायद यदि माता दयाराम की बेटी सुमित्रा और किसान रामनिवास की लड़की देवकी आ जाती तो वे सब रात होने के बाद खेतों की ओर जा सकती थीं। तब वह खूब मटकती हुई मचलती हुई चली जाती या अपनी सखियों के बचपन भरी चाल से चार मिनट एक रमने से भागती। और वे हर एक मस्ती के टर्राने की आवाज सुनने के भय से या जुगनुओं को बार-बार चमकते देख चौंक पड़तीं। जब एक-दूसरे के हाथों में बंधकर दौड़ती तो हँसी ठट्ठा करती चलतीं और वे सब तब तक स्वतंत्र थीं जब तक कि उनकी माएं उन्हें पीछे से न पुकारतीं और कहतीं कि वे खेतों में बहुत दूर न भटक जाएं। पर वह जिस समय यह सब सोच रही थी अचानक उस भारी

भारी वदमा की आवाज सुनाई दा। उमन देखा कि मट्टा एक बिगड़ हुए साप का तरह अन्दर आ गया और उमन ढोरा का साल लिया और जस ही वह वापिस जान को मुडा उसकी नज़र रवमणा पर पड गई। उमन कहा—

अरी जादूगरना रवमणी! तुझ बाल लटकाए वठ देखा तो मैं डर गया। चल खिसक यहाँ स। क्या यहा वठकर चाद देखन क सिया तुझ कुछ और काम नहा है?

अठारह

मैं सुनता हूं कि बापू बीमार हैं।

—सजनू ने अपने पिता के चौके में पैर रखते हुए कहा।

रुक्मणी ने सिर हिला दिया।

सजनू बरामदे में अपने पिता को घुर्राटे लेते हुए सोते देखकर पंजों पर चलने लगा और चकाचौंध से अंधा-सा होकर अपनी माँ को टटोलने लगा।

रुक्मणी ने उसकी मन की बात जानते हुए कहा— वह तो मन्दिर गई है।

जिस दरवाजे को सजनू खुला छोड़ आया था उसमें होकर गर्म लू का एक थपेड़ा अन्दर आ गया और रुक्मणी ने सोचा कि उसके भाई को अवश्य प्यास लगी होगी। इसलिए उसने पीतल की थाली में आटा गूंधना बन्द करके अपने हाथ धोए और लकड़ी की रई से रसकर लिए दही बिलोना शुरू कर दिया।

सजनू कब से घर वापिस लौटना चाहता था। उसने चारों तरफ देखा और फिर निराश होकर बैठ गया। कोई उसके मन की बात सुनने को न था चाहे उसका अपना जी था कि वह घंटों बस बातें ही करता जाय। हमेशा की तरह उसने अपनी बहिन को इसके योग्य न समझा क्योंकि उसके विचार में वह पुरुषों के सारे वीरतापूर्ण कार्यों और साहस भरी बातों को कैसे समझ सकता था?

रुक्मणी ने अपने भाई को अपनी आँखों की कोरों से देखा। वह

उस पहले स दुबला दिखाई दिया। शायद उस अग्नि परीक्षा ने जिसम स वह गुजरा है उस पवित्रतर किया है—रुक्मणी न सोचा।

'क्या बापू की तबियत बहुत खराब है?' उसन जरा भारी आवाज म पूछा।

'उन्हें बुखार चढ़ा है।'—लड़का न उत्तर दिया।

'अच्छा—वह अब पहल स ठीक हो जाएगा अगर उसे पता चल जाय कि मैं वापिस आ गया हूँ। मैं उन सबका मजा क लिए छोड़ आया हूँ।'

मजनू की आवाज म गुस्सा था और रुक्मणी को जो यह सोचना था कि वह बदल गया है उस समय को मजनू पहले बार सचमुच भिन्न न लगा। उस महसूस हुआ यह तो वही है—बदला नहीं है।

मजनू बोला—'गाँव म देवता विराजते हैं और नीच जाति क लोग म रहते हैं। मैंने देखा कि जितना काम हम करते हैं उसका मजदूरी बहुत कम है। गुरुसिंह को तो गधा की जरूरत है और वह भी अपना मतलब साधा करने क लिए।'

लेकिन रुक्मणी बस यह जानना चाहती थी कि उसके बाप मा क साथ लौट आया है या नहीं।

मजनू अपनी बहिन क मन म उठ विचारों को शायद ही समझ पाता था। उसन कहा—

'वे सब क सब गधे और उल्लू हैं। वह बिना किसी लाभ क सार बार की सेवा करते रह सकते हैं पर हमारा खानदान वह है जिसने आज तक किसी क आगे सिर नहीं झुकाया।'

मजनू क बोलने क ढंग न पिता को अचानक जगा दिया।

'कौन है वहाँ? कौन? कौन?'

मजनू न उत्तर दिया—'मैं हूँ बापू मजनू।' वह उठा और चारपाई क पास जाकर खड़ा हो गया। उसन बूढ़े पिता क हाथ अपने हाथ म ले लिए।

भगवान ! तुझे बड़ी उम्र दे नगा ! —ठाकुरसिंह न बठ हुए गल स कहा । फिर वह गोमा बनाम थूका और यह कहता हुआ पीछ लट गया—

तो तुम नौट आए ।

बापू व ता छतकर रह हैं । पत्थरा व तान्न की मजदूरा बन्द थानी है ।

बटा—मैं ता जानता न कि वह चार घूनासिंह ता औरा का दौलत म बन पर राजा बना है । —ठाकुरसिंह ने कहना शुरू किया और कहता रहा—

बटा यह सरकार ता नाच नागा की है न कि हम जमीन्दारा का। सारा दहनी नहर म वे और करत क्या हैं ? विधान पर बहस और कम हरिजना की ऊँची जाति वाला म रक्षा की जाय। पहल जमान म रन म और दावो म बातचात हाती थी—क्या मूल और काम क बार म । पर आज य नाचा जाति व नोग घमण्ड म फूने और जम्हाई नत हुए वह रहत हैं क्योंकि इस दर कलियुग म मनुष्य न ईश्वर म विश्वास रखत है न अपन स ऊँच नागा म । अच्छा हुआ उनक घर दवी प्रताप स जनकर राख हा गए। अब एक दिन सारे चमारा और जाति विहीना पर बिजली टूट पड़गा ।

बटा तून ठीक किया । आग म म बचकर निकल आना आसान है । पर दुष्टता म बचकर भागना मुश्किल है ।

इतन म भगवती आ गई । घर म घुसत हा सजन का दख वह चिल्ला पड़ा—

हाय ! मरा बटा ! यह कहना कि वह तजी म कदम बढ़ाकर सजन की ओर भागा ।

वह न मा क पैरा का धूल नी और उसक चरण पकड लिए ।

अब भगवती अपन पति क पलँग क किनार बठ गई और रोन लगी ।

'बकरा की तरह मैं-मैं मतकर। यह तो उन दुष्टों से पिंड छुड़ा कर आया है।' ठाकुरसिंह ने डाँटते हुए कहा।

उसने कहा— 'मैं तो खुशी के आँसू रो रहा हूँ।'—और वह फिर रो पड़ी।

'माँ।'—मजनू ने दिलासा दिया। माँ-बाप और बेटे के बीच में बहती हुई इस महानुभूति की गंगा की धारा को देख रुक्मणी की आँखें भी आँसुओं से भीग गई।

जैसे ही रुक्मणी ने अपने आपको सँभाला उसकी माँ ने चिल्लाकर कहा—

'इसे छाछ दे दे। तुझे क्या हुआ था?'

'शायद यह लछमन के लिए रो रहा है।' मजनू बोला। 'पर जब तक मैं ज़िन्दा हूँ वह इसका न ब्याह सकेगा।'

रुक्मणी बड़ी सावधानी से आगे आई, उसके शब्दों पर टिकी और फिर छाछ का गिलास दे दिया। लेकिन अब उसके पैर लड़खड़ा गए और वह ढेर-सी गई। उसने अपने सिर को और अपनी सिसकियों को अपनी माँ की गोद में छुपा लिया।

आतिंम

भिक्खु के दोनो गालो पर गम गम न थप्पड मार रही थी। बिल्कुल वस ही जस उसकी मा उसको जब वह छोटा बच्चा था अक्सर मारता थी। लेकिन वह पत्थरों के आखिरी ढर को तोडन पर डटा था। उन पत्थरा को जिनको वडे पेट ना धुआँ छोडन वाला गज कायी इन्जन सडक के रूप म बदल रहा था।

वटे तो ममतापूण और कुरबानीकर देन वाने होत हैं और उह जसा कहा जाय मान नत हैं। नदमी न अपनी फम की भापडी के पास टोकरी बनाते बनाते अपनी बात को दोहराते हुए कहा।

और फिर [तरा तो ऐसा नाम है जिस पर बट्टा नहीं लगना चाहिए। हम जमींदार क सेवक हैं और अब अगर उसन तुझे बुलाया है तो तुझे जाना चाहिए।

पत्थरा क वड-वड ढर पर वठा हुआ भिक्खु हथौडे को एक क्रम से चला रहा था। उस उद्दण्ड वाली छोटी छोरा ककडिया की कोई चिंता न थी क्योकि पिछले दिना म उसन सफाई म पत्थर तोडन की कला म दक्षता प्राप्तकर ली थी। बस वह अपनी मां के शब्दा के जहरीले बिच्छुओ स दूर भागना चाहता था और साथ-साथ मई क सूय की भयानक अग्नि से जो कि उसको खोपडी की खाल को भस्मकर रही थी—क्योकि कीकर क पड और उसकी पगडी की झीनी छाया उसकी रक्षा न कर सकती थी।

हमारी इज्जत और भलाइ इन ऊची जाति वाला पर निभर है।

माँ ने फिर उकसाया। हम केवल घूलीसिंह से ही अच्छे सबंध नहीं रखते हैं बल्कि जमादार ठाकुरसिंह से भी रखते हैं।

भिक्खु ने धूल और बलगम से भरा गर्म सांस अंदर खींचा और फिर गले के गढ्ढे में अपनी भावनाओं का विष उगल दिया। फिर भी बड़बाहर का बाप बचा रहा और उसने कहा—

नाश नाश हो यह कहने कि तुम न सिर्फ लंबरदार घूलीसिंह का रखैल हो बल्कि सरपंच ठाकुरसिंह की भी।

भिक्खु भगवान तुझे ऐसे ताने कहने पर मौत दे। तू कभी न पनपे। माँ बोली।

भिक्खु उठा अपनी कमीज की धूल झाड़ी और उस बड़े पत्थर को हटाने लगा जिसे वह तोड़ना चाह रहा था।

अगल दर से दसरथ ने पुकारा—

अरे तू तो खतम कर चुका। मुझे पीछे मत छोड़ जाना। मैं तेरे साथ आ रहा हूँ।

ओ भिक्खु!—और मैं भी आ रहा हूँ। बाबू भी चिल्लाया—मुँह से पिचकारी छोड़ने की सी आवाज करते हुए।

भैंग शिवराम ने बीच में बात काटी— लेकिन अभी तो दिन छुपने में एक घंटा बाकी है।

जवाहर लाल का नाम लो और काम करते जाओ। भिक्खु ने जवाब दिया और इस पवित्र वाक्य में भरे जोश के साथ उसने अपने सामने के पत्थर को उठाया और उसे वहाँ से दूर फेंक दिया। वह उस स्थान से जरा परे गिरा जहाँ उसको छानना था इसलिए उसने पत्थर का अपने छाले और गाँठ पड़ी हथेलियों से हिलाकर ठीक किया। फिर वह बैठ गया अपने हाथों पर थूका हथौड़ा उठाया और अपने काम पर लग गया।

एक क्षण उसने धूप की घनी धुंध में से गुड़गाँवे की ओर देखा। गुड़गाँवा जिसके परे थी देहली—लाल मिट्टी की भूमि या यमुना के

किनारे बसा नगर।

अगर तू अपना धम त्यागेगा तो तुझ पर ईश्वर का प्रकोप गिरेगा। लक्ष्मी ने हारकर कहा। एक ऐसी मुर्गी की तरह—जो अपने बच्चे का चोच मारकर विवश करने का प्रयत्न करे कि वह दाना तलाश करे और आस-पास कुछ भी न हो।

नगी रेतीली मिट्टी पर अपनी माँ से परे बठे हुए उसने उसके शब्दों की गूज अपने कानो म सुनी और वह झुझला पडा। उसे लगा कि क्रोध की चिन्गारियाँ उसके शरीर से उठ रही हैं।

कहत कबीर सुनो भई साधो —उसने अपने मह म गुनगुनाना शुरू कर दिया पर उसने लय को आगे न बढाया। बस गुनगुनाने से उसम और जोश आ गया और उसने पत्थर पर और ज्यादा जोर से चोट लगाई।

वाह वाह! वह स्वय ही अपनी अधूरी लय पर हसा।

वहाँ बठे-बठे उसे यह भी महसूस हुआ कि पत्थर उसके गुस्से से अधिक और उसकी श्रद्धा से कम प्रभावित हो रहा है और आत्मसमपण कर रहा है। उसी समय इजीनियर तुलसी के इजन की सीटी सुनाई दी तो उसका चेहरा गव से चमक उठा। आखिर सडक बन गई और सरपच ठाकुरसिंह न भी शायद समझ लिया है कि अछूत भी उतना अच्छा कामकर सकते है जितना कि सुजातीय हिंदू। उन लोगा का जीवन जिनके घर जला दिए गए थे खेता म—उन्ही के खेता म—बनाई हुइ नई फूस की झोंपड़ियो मे अगडाई ल रहा था। बच्च चीख रहे थे और माओ का खान के लिए रोकर बुला रहे थ। दूसरी ओर औरतो के गीता की कोमल लय उन हथौडो की खन-खन म खो जाती जो सडक क लिए पत्थरो की काया पलटकर रह थे। और धक धक करती मशीन की चीखें और सीटियाँ एक रेलवे इजन के निमत्रण जसी सुनन वाल को दूर—कही दूर—जाने का मदश देती।

कहत कबीर। उसन फिर स्वाम म बोलने का प्रयत्न किया

पर उसके शुष्क मुह से कोई श्वास न निकला। उसकी खोपडी विचारों की चोट से इतनी तेजी से टुकडे-टुकडे हो रही थी जितना कि पत्थर की आत्मा भी नही।

उसने पत्थर के सिरे पर हथौडे को होशियारी से टिकाया उसके किनारों के कटाव को देखा और समझ गया कि इसका प्राकृतिक रूप तो अपने अंतिम क्षणों में है। फिर उसने उसे पलटा और एक धारी पर मार-धार चोट मारी। कुछ चोटें और और पत्थर ने हथियार डाल दिए।

वह खडा हो गया हथौडे को जमीन पर डाल दिया और अपने पाँच फुट छह इन्च के कद को फलाव में फल गया। अब वह गोवरधन तक को सौ हाथ का फासला तय करने लगा।

भिक्खु ओ भिक्खु! —बाबू ने उसके पीछे पुकारा।

लेकिन भिक्खु गम, रेतीली और रेगिस्तानी मिट्टी पर जो संतो के वर्णित जलते हुए नरक की धरातल की तरह थी—भागा जा रहा था। उसने सोचा यदि यम के राज्य को कोई पारकर ले तो गोवरधन की सीमा पर पहुँचता है। गोवरधन—वह गाँव जो देवताओं में भी सब श्रेष्ठ देवता ने बनाया था। उसका लहू रोमान्च से बेजान लगा—सूखे खून की कुछ ही बूँदें ही तो बची थी, जिसके इंधन से उसको जीवन की इजन जमींदार के घर तक पहुँचने तक चलाना था। क्योंकि सरपन्च ने उसे बुलाया है वह भी अपना कर्त्तव्य निभाएगा। वह जाएगा और उससे मिलेगा और वह उसकी माँ के लिए आदेश्य का कारण होगा।

जैसे ही वह छोटी गली के पास पहुँचा जिसके किनारों पर काँट दार झाडियाँ थीं जो जमींदार के घर की रक्षाय बनाई गई थीं उसे एक आकस्मिक सी प्रेरणा हुई। वह उस बडी हवेली में पानी भी माँग लेगा क्योंकि वह तो आज इतना प्यासा था जितना पहले कभी न था। अगर उन्होंने पीने को पानी दे दिया तो उसे निश्चय हो जाएगा कि

जमींदार ठाकुरसिंह का घर उसके प्रति ऐसा अनुभव करता है—अब जब कि सड़क लगभग पूरी बनकर तैयार हो चुकी है। और फिर उस उस रुक्मणी के दर्शन भी हो जाएंगे जिसका शरीर सूरजमुखी के फूल की भांति था जिसकी उस बड़ी हवेली के पिछले भाग में सावधानी से रखवाली की जा रही थी।

भिक्खु नक्काशी किए हुए बड़े दरवाजे से जमींदार की हवेली में घुस गया। बड़े कमरे में कोई न था। उसने सोचा भाग्य उसके साथ है।

कहत कबीर सुनो...।—वह गुनगुनाने लगा जैसे कि सन्त कवि के नाम लेने से ही वह हर व्यक्ति से टक्कर लेने में समर्थ हो जाएगा।

फिर उसने दरवाजे का कुंडा खटखटाया और आवाज लगाई—ठाकुरसिंह जी! सरपन्च जी! मैं हूं जिससे आप मिलना चाहते थे।

कौन है वहां?—अन्दर की कोठरी से एक भारी भरकम आवाज आई।

मैं हूं भिक्खु—हरिजन!—उसने उत्तर दिया। मुझे पीने को पानी चाहिए। भिक्खु जान गया था कि रुक्मणी की मां भगवती अन्दर से बोल रही थी।

इसे कुछ पानी दे दो।—एक थकी पर सहानुभूति से भरी दूसरी आवाज ने कहा। अब भिक्खु समझ गया कि यह जमींदार ठाकुरसिंह की आवाज थी। फिर भिक्खु ने सुना ठाकुरसिंह कह रहा था—बेटा! मैं अभी आया।

रुक्मणी भीतर की रसोई की छाया में रखे घड़े की ओर गई और पीतल का एक प्याला पानी से भरकर बड़े कमरे में ले आई। पिछले महीनों में भिक्खु को कभी साहस न हुआ था कि जमींदार की लड़की के चेहरे की एक नजर भी देख सके। उसने पीतल का प्याला ले लिया। वह भूल-सा गया कि वह क्या स्वीकार कर रहा है बल्कि उसने रुक्मणी की ओर टकटकी लगाकर देखा। रुक्मणी भिक्खु को

उपस्थिति के प्रति सचेत थी। उसका सपाट चेहरा चूल्हे के पास बैठने के कारण ताप से लाल था। उसने भिक्खु को अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से टटोला, और जैसे ही उसने पहचाना कि यह तो भिक्खु है, वह लजा गई और अपनी आंखों पर दुपट्टे का घूंघट खींच लिया।

उसी समय ड्योढ़ी के सामने वाली कोठरी में से एक और आवाज़ आई—

कौन है रे?

हम पीने का पानी चाहिए।' —रुक्मणी ने उत्तर दिया।

हैं!—भिक्खु चमार? —ठाकुरसिंह का लड़का सजनू दौड़ता हुआ आया और बोला। उसके हाथ में ताश की बाजी थी।

और तूने इसे पीतल के प्याले में पानी दे दिया। भूल बड़ी की। और उसने लपककर भिक्खु के हाथ में पकड़े प्याले को ठोकर मार दी।

प्याला उछलकर बड़े कमरे में गिरा और उसका पानी भिक्खु के मुंह पर ऐसे फैल गया जैसे कठोर परिश्रम के बाद पसीना।

तू पीतल का प्याला कैसे छू सकता है? क्या तुझे अपनी औकात का कोई ध्यान नहीं?

मैं भूल गया था। —भिक्खु ने दबे स्वर से उत्तर दिया।

सजनू ने अपनी बहिन को डांटते हुए कहा— क्या इसकी आंख में पानी नहीं डाल सकती थी तू? पगली।

इतने में उसकी मां भी कोठरी से निकल आई और कहा— हाय! हम बरबाद हो गए।

हमें तो सारा घर शुद्ध करना पड़ेगा। —सजनू मातम करते हुए बोला। उसी समय अन्दर से सजनू के मित्र दयाराम ने चिल्लाकर कहा— मारो साले को जान से मार दो इसको।

'थोड़ा रुपया क्या कमा लिया है इनके दिमाग आसमान पर चढ़ गए हैं। रामनिवास की आवाज़ सुनाई दी। पर ठाकुरसिंह बोला—

'अरे! मैंने इसे यहां बुलाया है। मैं इससे बात करना चाहता हूं।

सजनू ने फिर कहा— ठहर जाओ—मैं बताता हूँ बापू का कि इसने क्या किया है। इसको तो गाँव से मारकर भगा दिया जाएगा—पागल कुत्ते की तरह। प्याऊ दूषितकर दिया है।

भिक्खु जो अब तक चुपचाप था उठ खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। वह कद में सजनू की ऊंचाई तक उठ गया और उसे लगा कि वह तो जमींदार के लड़के से उच्चतर है।

उसने सजनू को संबोधितकर कहा— क्योंकि तूने अपनी जिंदगी में कभी काम नहीं किया—तुझे क्या पता प्यास क्या होती है ?

उस क्षण भिक्खु का मन किया कि वह सजनू पर बरस पड़े। पर एक दम उसे याद हो आया कि वह तो एक अछूत है चमार है। उसने अपने आप को लगाम लगा ली।

देखा तुमने इस बदमाश को ? गुस्ताखी देखी तुमने इसकी ? सजनू अपने साथियों को संबोधितकर बोला।

यह सुनना था कि भिक्खु फिर अपने पूरे कद की ऊंचाई तक फैल गया—इतना कि जमींदार का बेटा भय से पीछे को दुबक गया। तब भिक्खु के मन ने उसे समझाया कि उस एक हाथ से वार करने से पहले ही पीछे लौट जाना चाहिए।

उसने अपने कटे हुए होठ पर से लहू का दाग पोछा और स्वेच्छा से पीछे मुड़ गया। फिर वह अपना थूक निगल गया और बड़े कमरे से बाहर निकल आया। उस समय उसके पांव अपने घर की ओर न थे। वह सहज-बुद्धि से उस सड़क की दिशा में चल दिया जिसके बनाने में उसका योगदान था। पर उसकी आत्मा की दिशा दूसरी ही थी। वह थी गाँव के बाहर गुड़गाँवें की ओर जहाँ से देहली जाने का रास्ता है। वही देहली जो हिंदुस्तान की राजधानी है। जहाँ कोई नहीं जानता कि वह कौन है और जहाँ कोई न सुजातीय हैं न कोई जाति विहीन अछूत। सब बराबर हैं।